Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ

(ऐराफ़ : 206)

(अनुवाद) : और तू अपने रब को अपने दिल में कभी गिड़गिड़ाते हुए और कभी डरते डरते और बग़ैर आवाज़ किए सुबह और शाम के समय याद किया कर और ग़ाफ़िलों में से न हो

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-5-6

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

10-17 रजब 1444 हिज्री क़मरी, 2-9 तब्लीग 1402 हिज्री शम्सी, 2-9 फ़रवरी 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

मुसलेह मौऊद के विषय में भविष्यवाणी

हज़रत मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

ख़ुदा-ए-रहीम व क़रीम(وَاِعْلَامِهٖ عَزَّوَجَلَّ)व ऐलामेही अज़्ज़ा-व-जल (بِاِلْهَامِ اللّٰهِ تعالٰی) ब-इल्हामिही तआला मुझ को अपने(جَلَّ شَانُهٗ وَعَزَّ اِسْمُهٗ)बुज़ुर्ग व बरतर ने जो हर चीज़ पर कादिर है जल्ला शानुहू व अज्ज़ा इसमोहु इल्हाम से सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे एक रहमत का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा अतः मैंने तेरी ज़रूरियात को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से बापाया ऐ कुबलियत जगह दी और तेरे सफ़र को जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है, तेरे लिए मुबारक कर दिया। सो कुदरत और रहमत और कुरबत का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान का निशान तुझे अता होता है और फ़तह और ज़फ्फ़र की कलीद तुझे मिलती है। ऐ मुज़फ्फ़र तुझ पर सलाम ख़ुदा ने यह कहा ता वे जो जिन्दगी के खवाहां हैं मौत के पंजा से निजात पावें और जो कबरों में दबे पड़े हैं बाहर आवें और ता दीन-ए-इसलाम का शरफ़ और कलामुल्लाह का मरतबा लोगों पर ज़ाहिर हो और ता हक अपनी तमाम बरकता के साथ आ जाए और बातिल अपनी तमाम नहूँसतों के साथ भाग जाए।
और ता लोग समझे कि मैं कादिर हूँ जो चाहता हूँ करता हूँ और ता वे यकीन लाएँ कि मैं तेरे साथ हूँ और ता उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर इमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के दीन और उसकी किताब और उसके पाक रसूल मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इंकार और तकज़ीब की निगाह से देखते हैं एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह ज़ाहिर हो जाएं ।

सो तुझे बशारत हो कि एक वजीह और पाक लड़का तुझे दिया जाएेगा एक ज़क्की गुलाम (लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरी ही तुखम से तेरी ही ज़ुर्रियत व नसल होगा। खूबसूरत पाक लड़का तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन-मवाईल और बशीर भी है उसको मुक़द्दस रूह दी गई है और वह रिजस से पाक है वह नूरुल्लाह है। मुबारक वह जो आसमान से आता है उसके साथ फज़्ल है जो उसके आने के साथ आएेगा वह साहिबे शकूह और अज़मत और दोलत होगा।

वह दुनिया में आएेगा और अपने मसीही नफ्स और रूहुल हक की बरकत से बहुतों को बिमारियों से साफ करेगा वह कलामतुल्लाह है क्योंकि ख़ुदा की रहमत व ग़य्यूरी ने उसे अपने कलेमा तमजीद से भेजा है। वह सखत ज़हीनो फ़हीम होगा और दिल का हलीम और उलूमे-ए-ज़ाहिरी वा बातनी से पुर किया जएेगा। और वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके मायने समझ में नहीं आए) दो शंम्बा है मुबारक दो शंम्बा फ़रज़न्द दिलबन्द गिरामी अरज़ुमंद (مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ۔/مَظْهَرُ الْحَقِّ وَالْعَلَاءِ/كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ) मज़हरुल अव्वलि वल आखिरि मज़हरुल हक़्क़ वल अलाए का अन्नल्लाहा नज़ा-ला मिनस्समाए। जिसका नज़ूल बहुत मुबारक और जलाले इलाही के ज़हूर का मोजिब होगा। नूर आता है नूर जिसको ख़ुदा ने अपनी रज़ामन्दी के इतर से मम्सूह किया। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे और ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा वह जल्द-जल्द बढ़ेगा और असीरों की रुस्तगारी का मोजिब होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत पाएगा। और क़ौमें उससे बरकत पाएंगी तब अपने नफ्सी-नुक़ता आसमान की तरफ उठाया जाएेगा। "वा काना अमरन मकज़िय्या" (وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا)

(मजमुआ इश्तेहारात भाग प्रथम पृष्ठ 100 विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886)

भविष्यवाणी के मूल शब्द हिन्दी लिपि में ऊपर दिए गए हैं इसकाअनुवाद पृष्ठ 8 पर है

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	मुसलेह मौऊद के विषय में भविष्यवाणी	1
2	वसीयत की एहमीयत और बरकात	2
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 दिसम्बर 2022 ई	3
4	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 दिसम्बर 2022 ई	9
5	भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद की पृष्ठभूमि, महत्तव और मिस्दाक़ (तहरीरात हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोशनी में)	16
6	शुद्धि आन्दोलन और इसका मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी के साथ एक विशेष संबंध (हज़रत मिर्ज़ा ताहेर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्ला तआला)	20

वसीयत की एहमीयत और बरकात
सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के उपदेशों की दृष्टि से

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की विशेष इच्छा से और उसी के हुक्म से 1905 ई. में निज़ाम वसीयत की बुनियाद रखी जब आप ने रिसाला अल् वसीयत तहरीर फ़रमाया। आप अल्लाह तआला के हुक्म से, जमाअत के नेक और पाक और मुत्तक़ी बंदों की आख़िरी आरामगाह के लिए एक क़ब्रिस्तान बनाया और इस में दफ़न होने के लिए यह शर्त रखी कि ऐसा शख़्स अपनी आमद का दसवाँ हिस्सा इस्लाम की तब्लीग़ और इशाअत की ख़ातिर जमाअत को दे। और मरने के बाद अपनी समस्त जायदाद की, चाहे वे थोड़ी हो या ज़्यादा, दसवें हिस्से की वसीयत करे। इस क़ब्रिस्तान का नाम अल्लाह तआला ने आपको बहिश्ती बताया।

बहिश्ती मक़बरा में तदफ़ीन के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो निम्नलिखित शर्तें रखी हैं, यह ऐसी बड़ी क़ुर्बानी है कि हम यक़ीन रखते हैं कि इस्लाम की ख़ातिर इतनी बड़ी क़ुर्बानी करने वाला यक़ीनन जन्नती होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस क़ब्रिस्तान और इस में दफ़न होने वालों के लिए बहुत दुआएं भी की हैं। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

मैं दुआ करता हूँ कि ख़ुदा इस में बरकत दे और इसी को बहिश्ती मक़बरा बना दे और यह इस जमाअत के पाक-दिल लोगों की ख़ाबगाह हो जिन्होंने वास्तव मे दीन को दुनिया पर मुक़द्दम कर लिया और दुनिया की मुहब्बत छोड़ दी और ख़ुदा के लिए हो गए और पाक तबदीली अपने अंदर पैदा कर ली और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अस्हाब की तरह वफ़ादारी और सिदक़ का उदाहरण दिखलाया। आमीन اٰمِیْن یَارَبَّ الْعَالَمِیْنَ۔

★ फिर मैं दुआ करता हूँ हे मेरे क़ादिर ख़ुदा इस ज़मीन को मेरी जमाअत में से उन पाक दलों की क़ब्रें बना जो वास्तव में तेरे लिए हो चुके और दुनिया की अग़राज़ की मिलावट उनके कारोबार में नहीं। आमीन اٰمِیْن یَارَبَّ الْعَالَمِیْنَ۔

★ फिर मैं तीसरी दफ़ा दुआ करता हूँ कि हे मेरे क़ादिर करीम ए ख़ुदाए ग़फ़ूरो रहीम तू सिर्फ उन लोगों को इस जगह क़ब्रों की जगह दे जो तेरे इस फ़िरिस्तादा पर सच्चा ईमान रखते हैं और कोई निफ़ाक़ और ग़रज़ नफ़सानी और बदज़नी अपने अंदर नहीं रखते और जैसा कि हक़ ईमान और इताअत का है बजा लाते हैं और तेरे लिए और तेरी राह में अपने दिलों में जान फ़िदा कर चुके हैं जिनसे तू राज़ी है और जिनको तू जानता है कि वह पूर्णतः तेरी मुहब्बत में खोए गए और तेरे फ़िरिस्तादा से वफ़ादारी और पूरे अदब और इंशराही ईमान के साथ मुहब्बत और जाँ-फ़िशानी का ताल्लुक़ रखते हैं। اٰمِیْن یَارَبَّ الْعَالَمِیْنَ۔

जबकि हर माह अपनी आमद का दसवाँ भाग, और मरने के बाद अपनी जायदाद का दसवाँ भाग इस्लाम की इशाअत के लिए दे देना एक बड़ी क़ुर्बानी है और अहबाब-ए-जमाअत का एक बड़ा हिस्सा सब्रो इस्तक़लाल और निहायत ख़ुशी के साथ यह क़ुर्बानी कर रहा है, बल्कि कुछ ऐसे हैं जो इस से भी बढ़कर कर रहे हैं, अलहमदो लिल्लाह, जबकि हमें अपने इस्लाफ़ की क़ुर्बानियों पर भी नज़र करनी चाहिए आँहज़रत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा से माल के साथ साथ जान की क़ुर्बानी का भी मुतालिबा था। उन्होंने माल के साथ साथ बे दरेग़ अल्लाह के रास्ते मेंअपनी जानें भी क़ुर्बान कीं और इस्लाम को पूरी दुनिया में फैला दिया। हम से सिर्फ़ माल की क़ुर्बानी का मुतालिबा है, जान की क़ुर्बानी का मुतालिबा नहीं है। आज इस्लाम को पूरी दुनिया में ग़ालिब करना मसीह मौऊद की जमाअत की ज़िम्मेदारी है। इस्लाम तो दुनिया में ज़रूर ग़ालिब आएगा लेकिन हमें यह देखना चाहिए कि हमने इस में अपना कितना हिस्सा डाला। माल अल्लाह के हुक्म और उसी के फ़ज़ल से आता है। अतः उसे सँभाल कर रखने की बजाय अल्लाह की राह में उसे ख़र्च करना और अपनी आक़िबत और आख़िरत के लिए कुछ ज़ाद-ए-राह बनाना,यही अक्लमंदी और सआदत है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने वर्ष 2004 में इस ख़ाहिश का इज़हार फ़रमाया था कि वर्ष 2008 तक जो ख़िलाफ़त जुबली का वर्ष है, जमाअत के कमाने वाले अफ़राद का आधा भाग निज़ाम वसीयत में शामिल हो जाएगा। लेकिन अफ़सोस कि हम अब तक हुज़ूर अनवर की इस ख़ाहिश को पूरा नहीं कर सके। अल्लाह करे कि हम जल्द से जल्द वसीयत के बाबरकत निज़ाम में शामिल हो कर अपनी दुनिया और आक़िबत को संवारने वाले हों। नीचे वसीयत की एहमीयत अउ बरकात के विषय में सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के कुछ इर्शादात पेश हैं :

वसीयत मयार है ईमान के कामिल होने का सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :

जमाअत को वसीयत की एहमीयत बताई जाए और बताया जाए कि यह ख़ुदा तआला का क़ायम करदा तरीक़ है। तो मैं समझता हूँ कि हज़ारों आदमी जिन्हें ता हाल इस तरफ़ तवज्जा नहीं हुई वसीयत के ज़रीया अपने ईमान-ए-कामिल करके दिखाएँगें

वसीयत की तहरीक ख़ुदा तआला की तरफ़ से है और इस के साथ बहुत से इनामात वाबस्ता हैं। अभी तक जिन्हों ने वसीयत नहीं की हो वह कर के अपने ईमान के कामिल होने का सबूत दें। क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है जो शख़स वसीयत नहीं करता मुझे उसके ईमान में शुबा है। अतः वसीयत मयार है ईमान के कामिल होने का।

(ख़ुतबात महमूद भाग 10 पृष्ठ 166)

वसीयत दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने का एक अमली सबूत है

मैं ने अपनी जमाअत के दोस्तों को इस अमर की तरफ़ तवज्जा दिलाई थी कि वसीयत का मुआमला निहायत अहम मुआमला है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे ऐसी ख़ुसूसीयत बख़शी है और अल्लाह तआला के ख़ास इल्हामात के अधीन इसे क़ायम किया है कि कोई मोमिन उस की एहमीयत और अज़मत का इन्कार नहीं कर सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क़ायम करदा सारा निज़ाम ही आसमानी और ख़ुदाई और इल्हामी निज़ाम है परंतु वसीयत का निज़ाम ऐसा निज़ाम है जो ख़ुदा तआला के ख़ास इल्हाम के मातहत क़ायम किया गया। अन्य विषय ऐसे हैं जो आम इल्हाम के मातहत क़ायम किए गए हैं परंतु वसीयत का

शेष पृष्ठ 15 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"ख़ुदा तआला ने इस सिलसिला को तथ्यों की खोज के लिए क़ायम किया है" (हज़रत मसीह माहूद अलैहिस्सलाम)

दुनिया के विभिन्न देशों में जो आज जलसे आयोजित हो रहे हैं और हज़ारों अहमदियों की शमूलीयत है वे भी उन्ही निशानों में से एक निशान है

ख़ुश-क़िस्मत हैं वे लोग जो आज मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़बूल कर रहे हैं और मुख़ालफ़तों का सामना करके अल्लाह तआला के प्यार को हासिल करने वाले बन रहे हैं

हमारा सिलसिला तो यह है कि इन्सान नफ़सानियत को तर्क कर के तौहीद-ए-ख़ालिस पर क़दम मारे

जमाअत को क़ायम करने का उद्देश्य असल तौहीद को क़ायम करना और खुदा से प्रेम पैदा करना है

तुम यक़ीनन याद रखो कि अगर तुम में वफ़ा-दारी और इख़लास न हो तो तुम झूठे ठहरोगे और ख़ुदा तआला के हुज़ूर रास्तबाज़ नहीं बन सकते

तौहीद के क़ियाम के साथ, अल्लाह तआला से मुहब्बत के साथ अल्लाह तआला के प्यारे के साथ इशक़ का ताल्लुक़ भी ज़रूरी है

हमारा फ़र्ज़ है और तभी हम बैअत का हक़ अदा कर सकते हैं जब हम अपने और ग़ैर में एक स्पष्ट अंतर पैदा कर के दिखाएंगे और खुदा से प्रेम और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम की ग़ैरमामूली मिसालें क़ायम करें

जलसे के इन दिनों में क़ादियान में भी और हर मुल्क में जहां-जहां जलसे हो रहे हैं हर शामिल होने वाला ख़ास दुआओं में अपना वक़्त गुज़ारे और यह दुआ करे कि अल्लाह तआला हमें बैअत का हक़ अदा करने की टौफ़ीक अता फ़रमाए

जलसे के दिनों की मुनासबत से हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात-ए-आलीया की रोशनी में आप के आने और जमाअत अहमदिया के क़ियाम के उद्देश्यों का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

श्रीमान फ़ज़ल अहमद डोगर साहिब की नमाज़-ए-जनाज़ा हाज़िर और श्रीमान मलिक मंसूर अहमद साहिब उमर (मुरब्बी सिलसिला रबवाह और श्रीमान ईसा जोफ़ साहिब (मुअल्लिम सिलसिला गेम्बया) की नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब। मरहूमीन का ज़िक्र-ए-ख़ैर

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 दिसम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज से क़ादियान का जलसा भी शुरू हुआ है और इसी तरह कुछ अफ्रीकन देशों में भी जलसा सालाना हो रहे हैं।

अल्लाह तआला हर मुल्क के जलसे को हर लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए। इन शा अल्लाह तआला इतवार को जलसा के आख़िरी दिन जो क़ादियान के जलसा से ख़िताब होगा इस में बाक़ी अफ्रीकन देशों भी शामिल होंगे। सात, आठ देशों हैं। और कोशिश होगी कि उनको एम. टी. ए के द्वारा यहां से बराह-ए-रास्त मिला भी दिया जाए। बहरहाल अब जबकि इन देशों में लोग एक जगह जमा हो कर ख़ुतबा भी सुन रहे होंगे और तवज्जो से सुनने का एक ख़ास माहौल बना हुआ है तो इस लिहाज़ से मैं ने मुनासिब समझा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में वे बातें पेश करूँ जिनमें आप का अपनी बेसत के उद्देश्य और जमाअत के उद्देश्य के बारे में वर्णन है और विभिन्न नसाएह आपने फ़रमाए हैं।

बहुत से नौ-मुबाईन और नई नसल के अहमदी भी इन जलसों में शामिल होंगे जिन तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में ये बातें नहीं पहुंची होंगी तो उनको भी यह जानना ज़रूरी है ताकि अपने ईमान-ओ-यक़ीन और इख़लास--ओ-वफ़ा में इन दिनों में विशेषता कोशिश करें और तरक़्क़ी करें और अल्लाह तआला की मदद मांगते हुए आप की बेअसत के उद्देश्य और अपनी ज़िम्मेदारियों का इदराक हासिल करें क़ियाम सिलसिला अहमदिया की उद्देश्य क्या थी। और क्यों इस ज़माना में इस का क़ियाम ज़रूरी था।

इस बात को वर्णन करते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ''ये ज़माना कैसा मुबारक ज़माना है कि ख़ुदा तआला ने उन पर आशूब दिनों में महिज़ अपने फ़ज़ल से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अज़मत के इज़हार के लिए ये मुबारक इरादा फ़रमाया कि ग़ैब से इस्लाम की नुसरत का इंतिज़ाम फ़रमाया और एक सिलसिला को क़ायम किया। मैं इन लोगों से पूछना चाहता हूँ जो अपने दिल में इस्लाम के लिए एक दर्द रखते हैं और इस की इज़्ज़त और वक़ात उनके दिलों में है वो बताएं कि क्या कोई ज़माना उस ज़माना से बढ़कर इस्लाम पर गुज़रा है जिसमें इस क़दर सब-ओ-शतम और तौहीन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की की गई हो और कुरान-ए-शरीफ़ की हतक होती हो? फिर मुझे मुस्लमानों की हालत पर सख़्त अफ़सोस और दिल्ली रंज होता है और कुछ वक़्त में इस दर्द से बेक़रार हो जाता हूँ कि उनमें इतनी हिस भी बाक़ी ना रही कि इस बेइज़्ज़-ती को महसूस कर लें। क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ भी इज़्ज़त अल्लाह तआला को मंज़ूर ना थी जो इस क़दर सब-ओ-शतम पर भी वो कोई आसमानी सिलसिला क़ायम ना करता और उन मुख़ालिफ़ीन-ए-इस्लाम के मुँह-बंद कर के आपकी अज़मत और पाकीज़गी को दुनिया में फैलाता जबकि ख़ुद अल्लाह तआला और इस के मलाइका आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजते हैं तो इस तौहीन के वक़्त इस सल्लो का इज़हार किस क़दर ज़रूरी है और इस का ज़हूर अल्लाह तआला ने इस सिलसिला की सूरत में है।''

(मल् फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 13-14 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह हमारी ज़िम्मेदारी है जिन्हों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना, इस सिलसिला में शामिल हुए कि जहां अपनी हालतों को दरुस्त करें वहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजें और इन दिनों में विशेषता दुरूद की तरफ़ तवज्जा होनी चाहिए।

जब हम ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भेजेंगे तो इस उद्देश्य को पूरे करने वाले होंगे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त-ओ-अज़मत को क़ायम करने का आप ने वर्णन किया है।फिर अपनी आने के उद्देश्य को वर्णन फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं: "मुझे भेजा गया है ताकि मैं आँहज़-रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खोई हुई अज़मत को फिर क़ायम करूँ और क़ुरआन शरीफ़ की सच्चाइयों को दुनिया को दिखाऊँ और यह सब काम हो रहा है

लेकिन जिनकी आँखों पर पट्टी है वह इस को देख नहीं सकते हालाँकि अब यह सिलसिला सूरज की तरह रोशन हो गया है और इस की आयात और निशानात के इस क़दर लोग गवाह हैं कि अगर उन को एक जगह जमा किया जाए तो उनकी संख्या इस क़दर हो कि रूए ज़मीन पर किसी बादशाह की भी इतनी फ़ौज नहीं है।" दुनिया के विभिन्न देशों में जो आज जलसे आयोजित हो रहे हैं और हज़ारों अहमदि-य ोंकी शमूलीयत है वे भी उन्ही निशानों में से एक निशान है

आप फ़रमाते हैं "इस क़दर सूरतें इस सिलसिला की सच्चाई की मौजूद हैं कि इन सबको वर्णन करना भी आसान नहीं। चूँकि इस्लाम की सख़्त तौहीन की गई थी इस लिए अल्लाह तआला ने इसी तौहीन के लिहाज़ से इस सिलसिला की अज़मत को दिखाया है।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 14 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप फ़रमाते हैं कि "यह ज़माना भी रुहानी लड़ाई का है। शैतान के साथ जंग शुरू है। शैतान अपने समस्त हथियारों और मकरों को लेकर इस्लाम के क़िला पर हमला-आवर हो रहा है और वह चाहता है कि इस्लाम को शिकस्त दे मगर ख़ुदा तआला ने इस वक़्त शैतान की आख़िरी जंग में इस को हमेशा के लिए शिकस्त देने के लिए इस सिलसिला को क़ायम किया है।'' अतः यह बात हर अहमदी को अपनी ज़िम्मेदारी की तरफ़ तवज्जा दिलाती है।

आप फ़रमाते हैं "मुबारक वह जो इस को शनाख़्त करता है। अब थोड़ा ज़माना है अभी सवाब मिलेगा। लेकिन अनक़रीब वक़्त आता है कि अल्लाह तआला इस सिलसिला की सच्चाई को सूरज से भी ज़्यादा रोशन कर दिखाएगा। वे वक़्त होगा कि ईमान सवाब का मूजिब न होगा और तौबा का दरवाज़ा बंद होने के मिस्दाक़ होगा। इस वक़्त मेरे क़बूल करने वाले को बज़ाहिर एक अज़ीमुश्शान जंग अपने नफ़्स से करनी पड़ती है। वे देखेगा कि बाज़-औक़ात उसको बिरादरी से अलग होना पड़ेगा। उस के दुनियावी कारोबार में रोक डालने की कोशिश की जाएगी। इस को गालियां सुननी पड़ेंगी। लानतें सुनेगा परंतु इन सारी बातों का अज्र अल्लाह तआला के हाँ से मिलेगा।"

फ़रमाया "लेकिन जब दूसरा वक़्त आया" अर्थात जब वह वक़्त आएगा "और इस ज़ोर के साथ दुनिया का रुजू हुआ जैसे एक बुलंद टीला से पानी नीचे गिरता है।" अर्थात जब तरक़्क़ी का ज़माना आएगा "और कोई इन्कार करने वाला ही नज़र न आया उस वक़्त इक़रार किस पाए का होगा?" उस वक़्त माना तो क्या माना। "इस वक़्त मानना बहादुरी का काम नहीं। सवाब हमेशा दुख ही के ज़माना में होता है।"

फ़रमाया कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़बूल करके अगर मक्का की नंबरदारी छोड़ दी तो अल्लाह तआला ने उस को एक दुनिया की बादशाही दी। फिर हज़रत उमर रज़िय-ल्लाहु तआला अन्हु ने भी कम्बल पहन लिया और هر چه بادا باد ما کشتی در آب انداختیم। अर्थात हमने कश्ती पानी में डाल दी है अब जो होना है हो, इस का मिस्दाक़ हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़बूल किया तो क्या ख़ुदा तआला ने उन के अज्र का कोई हिस्सा बाक़ी रख लिया? हरगिज़ नहीं। जो ख़ुदा तआला के लिए ज़रा भी हरकत करता है वह नहीं मरता जब तक उस का अज्र न पाले। हरकत शर्त है। एक हदीस में आया है कि अगर कोई अल्लाह तआला की तरफ़ मामूली रफ़्तार से आता है तो अल्लाह तआला उसकी तरफ़ दौड़ कर आता है

ईमान यह है कि कुछ मख़फ़ी हो तो मान ले। जो हलाल को देख लेता है तेज़ नज़र कहलाता है। अर्थात पहले दिन के चांद को जो देखता है वह तेज़ नज़र कहलाता है लेकिन चौधवीं के चांद को देखकर शोर मचाने वाला कहे कि मैंने चांद देख लिया वह तो दीवाना कहलाएगा

(मल् फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 25-26 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः ख़ुश-क़िस्मत हैं वे लोग जो आज मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़बूल कर रहे हैं और मुख़ालफ़तों का सामना कर के अल्लाह तआला के प्यार को हासिल करने वाले बन रहे हैं।

फिर इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि सिर्फ मान लेना ही काफ़ी नहीं है बल्कि असल उद्देश्य यह है कि एक पाक तबदीली पैदा हो

तौहीद-ए-ख़ालिस पर क़दम मारने वाला इन्सान बने तब फिर अल्लाह तआला के फ़ज़ल बढ़ते जाते हैं। आप ने फ़रमाया कि "जो शख़्स केवल अल्लाह तआला से डर कर उस की राह की तलाश में कोशिश करता है और इस से इस अमर की गरह--कशाई के लिए दुआएं करता है तो अल्लाह तआला अपने क़ानून (وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अल् अंकबूत : 70) अर्थात जो लोग हम में से हो कर कोशिश करते हैं हम अपनी राहें उनको दिखा देते हैं के मुवाफ़िक़ ख़ुद हाथ पकड़ कर राह दिखा देता है और उसे इत्मीनान-ए-क़लब अता करता है और अगर ख़ुद दिल अंधकार मे और ज़बान दुआ से बोझल हो और एतेक़ाद शिर्क-ओ-बिद्दत से मुलव्वस हो तो वे दुआ ही क्या है और वह तलब ही क्या है जिस पर नतायज हसना मुतरत्तब न हों। जब तक इन्सान पाक-दिल और सिदक़-ओ-ख़ुलूस से समस्त नाजायज़ रस्तों और उम्मीद के दरवाज़ों को अपने ऊपर बंद करके ख़ुदा तआला ही के आगे हाथ नहीं फैलाता उस वक़्त तक वह इस क़ाबिल नहीं होता कि अल्लाहतआला की नुसरत और ताईद उसे मिले लेकिन जब वह अल्लाह तआला ही के दरवाज़ा पर गिरता और इसी से दुआ करता है तो इस की यह हालत जाज़िब-ए-नुसरत और रहमत होती है।

ख़ुदा तआला आसमान से इन्सान के दल के कोनों में झाँकता है और अगर किसी कोने में भी किसी किस्म की ज़ुल्मत या शिर्क का कोई हिस्सा होता है तो उस की दुआओं और इबादतों को उस के मुँह पर उलटा मारता है। और अगर देखता है कि इस का दिल हर किस्म की नफ़सानी अग़राज़ और ज़ुल्मत से पाक साफ़ है तो उस के वास्ते रहमत के दरवाज़े खौलता है और उसे अपने साया में लेकर उसकी परवरिश का ख़ुद ज़िम्मा लेता है।"

फ़रमाया कि "इस सिलसिला को अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने हाथ से क़ायम किया है और इस पर भी हम देखते हैं कि बहुत से लोग आते हैं और वह साहब-ए--अग़राज़ होते हैं। अगर अग़राज़ पूरे हो गए तो ख़ैर अन्यथा किधर का दीन और किधर का ईमान।" कुछ लोग बैअत ही किसी उद्देश्य के लिए करते हैं। इस की मज़ीद वज़ाहत दूसरी जगह इस तरह हुई है। फ़रमाया कि "अग़राज़-ए-नफ़सानी शिर्क होते हैं। वह क़लब पर हिजाब लाते हैं। अगर इन्सान ने बैअत भी की हुई हो तो फिर भी इस के लिए ठोकर का बायस होते हैं

हमारा सिलसिला तो यह है कि इन्सान नफ़सानियत को तर्क कर के तौहीद-ए--ख़ालिस पर क़दम मारे।

सच्ची तलब हक़ की हो अन्यथा जब वह असल मतलूब में फ़र्क़ आता देखेगा तो उसी वक्त अलग हो जावेगा। क्या सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसी वास्ते क़बूल किया था कि माल-ओ-दौलत में तरक़्क़ी हो।" नहीं। आप फ़रमाते हैं कि ".. सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िंदगी में नज़र की जावे तो उनमें एक भी ऐसा वाक़िया नज़र नहीं आता। उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया। हमारी बैअत तो बैअत-ए-तौबा ही है लेकिन उन लोगों की बैअत तो सिर कटाने की बैअत थी।" सहाबा की। अभी मैंने वाक़ियात वर्णन किए हैं। पिछले कई ख़ुतबात में सहाबा का एक लंबा सिलसिला चलाया था कि किस तरह वह अपना सिर कटाते थे। "एक तरफ़ बैअत करते थे और दूसरी तरफ़ अपने सारे माल-ओ-मता, इज़्ज़त-ओ-आबरू और जान-ओ-माल से दस्तकश हो जाते थे। गोया किसी चीज़ के भी मालिक नहीं हैं और इस तरह पर उन की कुल उम्मीदें दुनिया से मुनक़ते हो जाती थीं। हर किस्म की इज़्ज़त-ओ-अज़मत और जाह-ओ-हशमत के हुसूल के इरादे ख़त्म हो जाते थे। किस को यह ख़्याल था कि हम बादशाह बनेंगे या किसी मुल्क के फ़ातेह होंगे। ये बातें उनके वहम-ओ-गुमान में भी नहीं थीं बल्कि वे तो हर किस्म की उम्मीदों से अलग हो जाते थे और हर वक़त ख़ुदा तआला की राह में हर दुख और मुसीबत को लज़्ज़त के साथ बर्दाश्त करने को तैयार हो जाते थे। यहां तक कि जान तक देने को आमादा रहते थे। उनकी अपनी तो यही हालत थी कि वह इस दुनिया से बिल्कुल अलग और मुनक़ते थे लेकिन ये अलग बात है कि अल्लाह तआला ने उन पर अपनी इनायत की और उनको नवाज़ा और उनको जिन्हों ने इस राह में अपना सब कुछ क़ुर्बान कर दिया था हज़ार चंद कर दिया।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 396 से 398 हाशिया ऐडीशन 1984 ई.)

फिर मज़ीद हिदायत फ़रमाते हुए कि जमाअत को क़ायम करने का उद्देश्य असल तौहीद को क़ायम करना और ख़ुदा से प्रेम पैदा करना है

आप फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा के साथ मुहब्बत करने से क्या मुराद है? यही कि अपने वालदैन, पत्नी, अपनी औलाद, अपने नफ़्स, उद्देश्य हर चीज़ पर अल्लाह तआला की रज़ा-ए-को मुक़द्दम कर लिया जाए। इसलिए क़ुरआन शरीफ़ में आया है- فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا (अल् बकरः : 201) अर्थात अल्लाह तआला को ऐसा याद करो कि जैसा तुम अपने बापों को याद करते हो। बल्कि इस से भी ज़्यादा और सख़्त दर्जा की मुहब्बत के साथ याद करो। अब यहां यह अमर भी गौरतलब है कि ख़ुदा तआला ने यह तालीम नहीं दी कि तुम ख़ुदा को बाप कहा करो बल्कि इस लिए यह सिखाया है कि नसारा की तरह धोखा न लगे और ख़ुदा को बाप कर के पुकारा न जाए और अगर कोई कहे कि फिर बाप से कम दर्जा की मुहब्बत हुई तो इस एतराज़ के दूर करने के लिए اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا दिया। अगर اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا न

होता तो ये एतराज़ हो सकता था। परंतु अब उसने उस को हल कर दिया।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 188 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः ये है अल्लाह तआला की मुहब्बत जो एक मोमिन के दिल में होनी चाहिए कि समस्त दुनियावी रिश्तों से ज़्यादा ख़ुदा की मुहब्बत हो

हमें अपने जायज़े लेने चाहिऐं कि क्या ये मुहब्बत हम अपने अंदर पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं या क्या उस के लिए हमारे दिल में कोई ख़ाहिश और तड़प है।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस मुहब्बत की मज़ीद वज़ाहत करते हुए और इस का मयार वर्णन फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं कि "असल तौहीद को क़ायम करने के लिए ज़रूरी है कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत से पूरा हिस्सा लो और यह मुहब्बत साबित नहीं हो सकती जब तक अमली हिस्सा में कामिल न हो। निरी ज़बान से साबित नहीं होती। अगर कोई मिस्री का नाम लेता रहे।" चीनी या शक्कर का नाम लेता है। तो कभी नहीं हो सकता कि वह शीरीं काम हो जाए।" मीठा तो नहीं हो जाता वह।'' या अगर ज़बान से किसी की दोस्ती का एतराफ़ और इक़रार करे परंतु मुसीबत और वक़्त पड़ने पर इस की इमदाद और दस्त-गीरी से पहलू-तही करे तो वह दोस्त सादिक़ नहीं ठहर सकता। इसी तरह पर अगर ख़ुदा तआला की तौहीद का निरा ज़बानी ही इक़रार हो और इसके साथ मुहब्बत का भी ज़बानी ही इक़रार मौजूद हो तो कुछ फ़ायदा नहीं बल्कि यह हिस्सा ज़बानी इक़रार की बजाय अमली हिस्सा को ज़्यादा चाहता है। इस से यह मतलब नहीं कि ज़बानी इक़रार कोई चीज़ नहीं है। नहीं। मेरी ग़रज़ यह है कि ज़बानी इक़रार के साथ अमली तसदीक़ लाज़िमी है इस लिए ज़रूरी है कि ख़ुदा की राह में अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ करो।"

अर्थात ख़ुदा तआला हर चीज़ पर मुक़द्दम हो। इस के अहकामात हर चीज़ पर मुक़द्दम हों। इस का भेजा हुआ दीन हर चीज़ पर मुक़द्दम हो और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने वाले हो।

फ़रमाया "और यही इस्लाम है, यही वह उद्देश्य है जिसके लिए मुझे भेजा गया है। अतः जो उस वक़्त इस चशमा के नज़दीक नहीं आता जो ख़ुदा तआला ने इस ग़रज़ के लिए जारी किया है वह यक़ीनन बेनसीब रहता है। अगर कुछ लेना है और उद्देश्य को हासिल करना है तो तालिब-ए-सादिक़ को चाहिए कि वह चशमा की तरफ़ बढ़े और आगे क़दम रखे और इस चश्म-ए-जारी के किनारे अपना मुँह रखदे और यह हो नहीं सकता जब तक ख़ुदा तआला के सामने ग़ैरियत का चोला उतार कर आस्ताँ-ए-रबूबियत पर न गिर जाए और यह अह्द न कर ले कि चाहे दुनिया की वजाहत जाती रहे और मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़ें तो भी ख़ुदा को नहीं छोड़ेगा।" कुछ भी हो जाए अल्लाह तआला को नहीं छोड़ना।''और ख़ुदा तआला की राह में हर किस्म की क़ुर्बानी के लिए तैयार रहेगा। इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यही अज़ीम इख़लास था कि बेटे की क़ुर्बानी के लिए तैयार हो गया इस्लाम का मंशा यह है कि बहुत से इब्राहीम बनो अतः तुम में से हर एक को कोशिश करनी चाहिए कि इब्राहीम बनो मैं तुम्हें सच्च सच्च कहता हूँ कि वली परस्त न बनो। बल्कि वली बनोऔर पीर-परस्त न बनो। बल्कि पीर बनो।

तुम इन राहों से आओ बेशक वे तंग राहें हैं। अर्थात अपना मुक़ाम वह बनाओ। यह नहीं कि पीरी मुरीदी शुरू कर दो बल्कि अपने आपको इस सतह पर लेकर जाओ जहां इन्सान वली कहलाए। जहां लोग कहें कि हाँ यह वह शख़्स है जो नेक काम करता है, इस की पैरवी करनी चाहिए। फ़रमाया कि "तुम इन राहों से आओ। बेशक वे तंग राहें हैं लेकिन उनसे दाख़िल हो कर राहत और आराम मिलता है। परंतु ये ज़रूरी है कि इस दरवाज़ा से बिल्कुल हल्के हो कर गुज़रना पड़ेगा। अगर बहुत बड़ी गठरी सिर पर हो तो मुश्किल है। अर्थात अगर दुनियावी ख़ाहिशात की और दुनियावी तर्जीहात की गठरी सिर पर उठाई हुई है और दुनिया ग़ालिब है, दीन पीछे है तो फिर यहां से गुज़रना बहुत मुश्किल है। अगर गुज़रना चाहते हो तो इस गठरी को जो दुनिया के ताल्लुक़ात और दुनिया को दीन पर मुक़द्दम करने की गठरी है, फेंक दो। हमारी जमाअत ख़ुदा को ख़ुश करना चाहती है तो उस को चाहिए कि इस को फेंक दे।

तुम यक़ीनन याद रखो कि अगर तुम में वफ़ा-दारी और इख़लास न हो तो तुम झूठे ठहरोगे और ख़ुदा तआला के हुज़ूर रास्तबाज़ नहीं बन सकते।

ऐसी सूरत में दुश्मन से पहले वे हलाक होगा जो वफ़ा-दारी को छोड़ कर ग़द्दारी की राह इख़तेयार करता है। ख़ुदा तआला फ़रेब नहीं खा सकता और न कोई उसे फ़रेब दे सकता है इस लिए ज़रूरी है कि तुम सच्चा इख़लास और सिदक़ पैदा करो।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 188 से 190 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर तौहीद के क़ियाम के साथ, अल्लाह तआला से मुहब्बत के साथ अल्लाह तआला के हबीब के साथ इशक़ का ताल्लुक़ भी ज़रूरी है

जिनके द्वारा अल्लाह तआला ने हमें अपनी तौहीद के रास्ते दिखाए। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ताल्लुक़ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त-ओ-अज़मत को क़ायम करने की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप एक जगह फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला ने इस जमाअत को इसी लिए क़ायम किया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत और इज़्ज़त को दुबारा कायम करें।'' ग़ैरों की मिसाल देते हुए जो पीर परस्ती में डूबे हुए हैं, क़ब्रों के पूजने वाले हैं और फिर यह दावा है कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इशक़ में फ़ना हैं और हमें काफ़िर कहने वाले हैं और इस बात का ऐलान करते हैं कि अहमदी नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीन के मुर्तक़िब हुए हैं तो उनके बारे में वर्णन हैं कि "एक शख़्स जो किसी का आशिक़ कहलाता है। अगर इस जैसे हज़ारों और भी हों तो उसके इशक़-ओ-मुहब्बत की ख़ुसूसीयत क्या रहे।"

अर्थात एक शख़्स किसी का आशिक़ कहलाता है लेकिन साथ ही बहुत सारे और माशूक़ भी बनाए हुए हैं तो फिर जिससे इशक़ कर रहा है उस की ख़ुसूसीयत क्या रही? तो फिर अगर यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और इशक़ में फ़ना हैं। ये लोग जो दावा करते हैं कि हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ है। अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इशक़ में फ़ना हैं जैसा कि ये दावा करते हैं तो यह क्या बात है कि हज़ारों ख़ानक़ाहों और मज़ारों की प्रसतिश करते हैं। बहुत सारी ख़ान-क़ाहें हैं, मज़ार हैं जिन पर ये जाते हैं, चढ़ावे चढ़ाते हैं, दुआएं करते हैं बल्कि सज्दे भी कर लेते हैं। फ़रमाया कि मदीना तय्यबा तो जाते हैं परंतु अजमेर और दूसरी ख़ानक़ाहों पर नंगे-सिर और नंगे-पाँव जाते हैं। पाक पट्टन की खिड़की में से गुज़र जाना ही निजात के लिए काफ़ी समझते हैं। किसी ने कोई झंडा खड़ा कर रखा है। किसी ने कोई और सूरत इख़तेयार कर रखी है। इन लोगों के उर्सों और मेलों को देख कर एक सच्चे मुस्लमान का दिल काँप जाता है कि यह उन्होंने किया बना रखा है। उपमहाद्वीप, भारत पाकिस्तान में ये चीज़ें आम नज़र आती हैं। अगर ख़ुदा तआला को इस्लाम की ग़ैरत न होती और اِنَّ الدِّیۡنَ عِنۡدَ اللّٰہِ الۡاِسۡلَامُ (आले इमरान : 20) ख़ुदा का कलाम न होता और उसने न फ़रमाया होता اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल् हिजर : 10) तो बेशक आज वे हालत इस्लाम की हो गई थी कि इस के मिटने में कोई भी संदेह नहीं हो सकता था। परंतु अल्लाह तआला की ग़ैरत ने जोश मारा और उस की रहमत और वाद-ए--हिफ़ाज़त ने तक़ाज़ा किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बरूज़ को फिर नाज़िल करे और इस ज़माना में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत को नए सिरे से ज़िंदा कर के दिखा दे। इसलिए उसने इस सिलसिला को क़ायम किया और मुझे मामूर और मह्दी बना कर (मल् फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 92 ऐडीशन 1984 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं मुझे मामूर और मह्दी बना कर भेजा। अतः हमारा फ़र्ज़ है और तभी हम बैअत का हक़ अदा कर सकते हैं जब हम अपने और ग़ैर में एक स्पष्ट अंतर पैदा कर के अब दिखाएंगे और ख़ुदा से प्रेम और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम की ग़ैरमामूली मिसालें क़ायम करें।

अपनी ज़बानों को तस्बीह, तहमीद और दुरूद से तर रखने की कोशिश करें सहाबा का नमूना अपनाने और उन जैसा इख़लास-ओ-वफ़ा पैदा करने की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं कि जब ख़ुदा तआला ने यह सिलसिला क़ायम किया है और इस की ताईद में सदहा निशान उसने ज़ाहिर किए हैं इस से इस की ग़रज़ ये है कि ये जमाअत सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की जमाअत हो और फिर नेकी का युग आ जावे। जो लोग इस सिलसिला में दाख़िल हो चूकें वे اٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ में दाख़िल होते हैं इस लिए वे झूठे मशाग़ुल के कपड़े उतार दें।" अहमदी होने के लिए झूठे मश्ग़ाले जो हैं ख़त्म हो जाने चाहिऐं। और अपनी सारी तवज्जा ख़ुदा तआला की तरफ़ करें। فَیۡجِ اَعۡوَجُ अर्थात टेढ़ा ज़माना ".. के दुश्मन हों। इस्लाम पर तीन ज़माने गुज़रे हैं। एक क़ुरून-ए-सलासा, उस के बाद فَیۡجِ اَعۡوَجُ का ज़माना जिस के बारे में रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्मा दिया कि لَیۡسُوۡا مِنِّیۡ وَلَسۡتُ مِنۡہُمۡ अर्थात न वह मुझसे हैं और न में उन से हूँ और तीसरा ज़माना मसीह मौऊद का ज़माना है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही के ज़माना से मुल्हिक़ है बल्कि हक़ीक़त में यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना है। فَیۡجِ اَعۡوَجُ का वर्णन अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न भी फ़रमाते तो यही क़ुरआन शरीफ़ हमारे हाथ में है और اٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ (अलजमा4) साफ़ ज़ाहिर करता है कि कोई ज़माना ऐसा भी है जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के

धर्म के ख़िलाफ़ है।' अर्थात उनके अमल इस से विभिन्न हैं। और वाक़ियात बता रहे हैं कि इस हज़ार साल के दरमयान इस्लाम बहुत ही मुश्किलात और मसायब का निशाना रहा है। दीन बिगड़ता गया है। गिनती के कुछ सिवा सबने इस्लाम को छोड़ दिया और बहुत से फ़िरक़े मो'तज़िला (जो कहता है कि ईश्वर दिखाई नहीं दे सकता, और आदमी जो कुछ करता है स्वयं करता है ईश्वर कुछ नहीं कराता) और इबाहती इत्यादि पैदा हो गए हैं।"

फ़रमाते हैं कि "हमको इस बात का एतराफ़ है कि कोई ज़माना ऐसा नहीं गुज़रा कि इस्लाम की बरकात का नमूना मौजूद न हो परंतु वह अबदाल और औलिया उल्लाह जो इस दरमयानी ज़माना में गुज़रे उनकी संख्या इस क़दर क़लील थी कि इन करोड़ों इन्सानों के मुक़ाबला में जो स्रात-ए-मुस्तक़ीम से भटक कर इस्लाम से दूर जा पड़े थे कुछ भी चीज़ न थे। इस लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबुव्वत की आँख से इस ज़माना को देखा और इस का नाम فَيْجِ اَعْوَجْ रख दिया। परंतु अब अल्लाह तआला ने इरादा फ़रमाया है कि एक और बड़े गिरोह को पैदा करे जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का गिरोह कहलाए मगर चूँकि ख़ुदा तआला का कानून-ए-क़ुदरत यही है कि इस के क़ायम करदा सिलसिला में तदरीजी तरक़्क़ी हुआ करती है इस लिए हमारी जमाअत की तरक़्क़ी भी तदरीजी और كَزَرْعٍ "अर्थात" (खेती की तरह होगी) जिस तरह खेती आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ती है इस तरह बढ़ेगी और वह उद्देश्यों और मुतालिब इस बीज की तरह हैं जो ज़मीन में बोया जाता है। वह मुरातिब और मक़ासद-ए-आलीया जिन पर अल्लाह तआला उसको पहुंचाना चाहता है अभी बहुत दूर हैं। वह हासिल नहीं हो सकते हैं जब तक वह ख़ुसूसीयत पैदा न हो जो इस सिलसिला के क़ियाम से ख़ुदा का मंशा-है।

तौहीद के इक़रार में भी ख़ास रंग हो। तबत्तुल इलाल्लाह एक ख़ास रंग का हो। ज़िक्र-ए-इलाही में ख़ास रंग हो। हुक़ूक़-ए-इख़वान में' अर्थात अपने भाईयों के हक़ अदा करने में एक ख़ास रंग हो।''(मल् फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 94-95 ऐडीशन 1984 ई.) अतः ये हैं हमारे उद्देश्य जिनको हासिल करने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए और तभी जमाअती की प्रगति भी हम देखेंगे।

फिर हमें क़ुरआन-ए-करीम को ख़ास तवज्जा और समझ कर पढ़ने तरफ़ ध्यान दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं : "याद रखना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ ने पहली किताबों और नबियों पर एहसान किया है जो उनकी तालीमों को जो क़िस्सा के रंग में थीं इलमी रंग दे दिया है। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कोई शख़्स उन क़िस्सों और कहानियों से निजात नहीं पा सकता जब तक वह क़ुरआन शरीफ़ को न पढ़े क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ ही की यह शान है कि वह اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ (अल् तारिक : 14-15) अर्थात यक़ीनन वह एक फ़ैसलाकुन कलाम है और हरगिज़ कोई बेहूदा कलाम नहीं है। "वह मीज़ान, मुहैमिन, नूर और शिफ़ा और रहमत है। जो लोग क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ते और उसे क़िस्सा समझते हैं उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ नहीं पढ़ा बल्कि उस की बेहुरमती की है। हमारे मुख़ालिफ़ क्यों हमारी मुख़ालिफ़त में इस क़दर तेज़ हुए हैं? केवल इसी लिए कि हम क़ुरआन शरीफ़ को जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है कि वह सरासर नूर, हिक्मत और मार्फ़त है, दिखाना चाहते हैं। और वे कोशिश करते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ को एक मामूली क़िस्से से बढ़कर महत्त्व न दें। हम इस को गवारा नहीं कर सकते। ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़ल से हम पर खोल दिया है कि क़ुरआन शरीफ़ एक ज़िंदा और रोशन किताब है इस लिए हम उनकी मुख़ालिफ़त की क्या पर्वा करें। उद्देश्य मैं बार-बार इस अमर की तरफ़ उन लोगों को जो मेरे साथ ताल्लुक़ रखते हैं नसीहत हूँ कि ख़ुदा तआला ने इस सिलसिला को तथ्यों की खोज के लिए क़ायम किया है।"

अर्थात हक़ायक़ इज़हार के लिए ज़ाहिर करने के लिए क़ायम किया है और जिसकी समझ क़ुरआन-ए-करीम से ही हमें मिल सकती है। इस का इदराक और फ़हम हमें क़ुरआन-ए-करीम से मिल सकता है। क्योंकि इस के सिवाए अमली ज़िंदगी में कोई रोशनी और नूर पैदा नहीं हो सकता और मैं चाहता हूँ कि अमली सच्चाई के ज़रीया इस्लाम की ख़ूबी दुनिया पर ज़ाहिर हो जैसा कि ख़ुदा ने मुझे इस काम के लिए मामूर किया है। इस लिए क़ुरआन शरीफ़ को कसरत से पढ़ो परंतु निरा क़िस्सा समझ कर नहीं बल्कि एक फ़लसफ़ा समझ कर। (मल् फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 155 ऐडीशन 1984 ई.) अतः उस के मुतालिब और मआनी और तफ़सीर की तरफ़ हर अहमदी को तवज्जा देनी चाहिए।

फिर नेक-आमाल की तरफ़ मज़ीद तवज्जा दिलाते हुए और इस की, नेक अमल की तारीफ़ की है

आप फ़रमाते हैं : "क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ अमल-ए-सालिह भी रखा है। अमल-ए-सालिह इसे कहते हैं जिस में एक ज़र्रा भर फ़साद न हो। याद रखो कि इन्सान के अमल पर हमेशा चोर पड़ा करते हैं। वे क्या हैं। चोर कौन से हैं? दिखावा (कि जब इन्सान दिखावे के लिए एक अमल करता है) अभिमान (कि वह अमल कर के अपने नफ़्स में ख़ुश होता है) कि मैंने अमुक बड़ा नेक काम कर लिया है। और भिन्न भिन्न प्रकार की बदकारियाँ और गुनाह जो इस से सादर होते हैं। ये चोर हैं सब। उनसे आमाल बातिल हो जाते हैं। अमल-ए-सालिह वे है जिसमें ज़ुल्म, अभिमान, दिखावा, घमंड और हुक़ूक़-ए-इन्सानी के तलफ़ करने का ख़्याल तक न हो। जैसे आख़िरत में इन्सान अमल-ए-सालिह से बचता है वैसे ही दुनिया में भी बचता है।

अगर एक आदमी भी घर भर में अमल-ए-सालिह वाला हो तो सब घर बचा रहता है समझ लो कि जब तक तुम मैं अमल-ए-सालेह न हो सिर्फ़ मानना फ़ायदा नहीं करता। एक तबीब नुस्ख़ा लिख कर देता है तो इस से यह मतलब होता है कि जो कुछ इस में लिखा है वह लेकर उसे पीवे। अगर वह इन दवाओं को प्रयोग नहीं करे और नुस्ख़ा लेकर रख छोड़े तो उसे क्या फ़ायदा होगा।" अतः हमारा काम यह है कि आप की नसाएह पर अमल करें। यह ज़रूरी चीज़ है। अन्यथा बैअत का कोई फ़ायदा नहीं है।

फ़रमाते हैं कि "अब उस वक़्त तुमने तौबा की है। अब आइन्दा ख़ुदा तआला देखना चाहता है कि इस तौबा से अपने आपको तुमने कितना साफ़ किया। अब ज़माना है कि ख़ुदा तआला तक़्वा के ज़रीया से फ़र्क़ करना चाहता है। बहुत लोग हैं कि ख़ुदा पर शिकवा करते हैं और अपने नफ़्स को नहीं देखते। इन्सान के अपने नफ़्स के ज़ुलम ही होते हैं अन्यथा अल्लाह तआला रहीम-ओ-करीम है।

बाअज़ आदमी ऐसे हैं कि उनको गुनाह की ख़बर होती है और कुछ ऐसे कि इन को गुनाह की ख़बर भी नहीं होती। इसी लिए अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए अस्तग़फ़ार का इल्तिज़ाम कराया है। पता नहीं किस वक़्त इन्सान क्या बात कर जाए जो गुनाह में शुमार हो। इसलिए अस्तग़फ़ार करते रहो कि इन्सान हर एक गुनाह के लिए चाहे वह ज़ाहिर का हो चाहे बातिन का चाहे उसे इलम हो या न हो और हाथ और पांव और ज़बान और नाक और कान और आँख और सब किस्म के गुनाहों से अस्तग़फ़ार करता रहे। आजकल आदम अलैहिस्सलाम की दुआ करनी चाहिए। आप ने फ़रमाया कि आदम अलैहिस्सलाम की दुआ पढ़ो। दुआ क्या है कि 'رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (अल् ऐराफ़ : 24) यह दुआ अव्वल ही क़बूल हो चुकी है। ग़फ़लत से ज़िंदगी बसर मत करो। जो शख़्स ग़फ़लत से ज़िंदगी नहीं गुज़ारता हरगिज़ उम्मीद नहीं कि वह किसी बड़ी बला में मुबतला हो। कोई बला बग़ैर आज्ञा के नहीं आती। जैसे मुझे ये दुआ इलहाम हुई। "رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ (मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 274 से 276 ऐडीशन 1984 ई.)

फ़रमाया कि ये भी दुआ पढ़ो फिर आप फ़रमाते हैं कि "याद रखो कि अक़ल रूह की सफ़ाई से पैदा होती है। जिस क़दर इन्सान रूह की सफ़ाई करता है उसी क़दर अक़ल में तेज़ी पैदा होती है और फ़रिश्ता सामने खड़ा हो कर उसकी मदद करता है।

परंतु झूठी ज़िंदगी जीने वाले वाले के दिमाग़ में रोशनी नहीं आ सकती। तक़्वा इख़तेयार करो कि ख़ुदा तुम्हारे साथ हो। सादिक़ के साथ रहो कि तक़्वा की हक़ीक़त तुम पर खुले और तुम्हें तौफ़ीक़ मिले। यही हमारा मंशा है और इसी को हम दुनिया में क़ायम करना चाहते हैं।" (मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 448 ऐडीशन 1984 ई.)

आप फ़रमाते हैं कि "हमारी जमाअत को यह नसीहत हमेशा याद रखनी चाहिए कि वह इस अमर को मद्द-ए-नज़र रखें जो मैं वर्णन करता हूँ। मुझे हमेशा अगर कोई ख़्याल आता है तो यही आता है कि दुनिया में तो रिश्ते नाते होते हैं कुछ उनमें से ख़ूबसूरती के लिहाज़ से होते हैं, कुछ ख़ानदान या दौलत के लिहाज़ से और कुछ ताक़त के लिहाज़ से लेकिन जनाब-ए-इलाही को इन उमूर की पर्वा नहीं। उसने तो साफ़ तौर पर फ़र्मा दिया कि اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ (अल् हिजरात : 14) अर्थात अल्लाह तआला के नज़दीक वही सम्मानित है जो मुत्तक़ी है। अब जो जमाअत ख़ुदा भय रखती उसको ही रखेगा और दूसरी को हलाक करेगा। यह नाज़ुक मुक़ाम है और इस जगह पर दो खड़े नहीं हो सकते कि मुत्तक़ी भी वहीं रहे और शरीर और नापाक भी वहीं। ज़रूरी है कि मुत्तक़ी खड़ा हो और ख़बीस हलाक किया जावे और चूँकि उस का इलम ख़ुदा को है कि कौन उस के नज़दीक मुत्तक़ी है। अतः ये बड़े ख़ौफ़ का मुक़ाम है

ख़ुश-क़िस्मत है वह इन्सान जो मुत्तक़ी है और बद-बख़्त है वह जो लानत के नीचे आया है।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 238-239 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हर वक़त तौबा और इस्तग़फ़ार और अल्लाह तआला की पनाह में आने की और शैतान से बचने की हमें कोशिश करते रहना चाहिए।

फ़रमाते हैं 'इस सिलसिला में दाख़िल हो कर तुम्हारा वजूद अलग हो और तुम बिल्कुल एक नई ज़िंदगी बसर करने वाले इन्सान बन जाओ। जो कुछ तुम पहले थे वह न रहो। यह मत समझो कि तुम ख़दा तआला की राह में तबदीली करने से मुहताज हो जाओगे। या तुम्हारे बहुत से दुश्मन पैदा हो जाएंगे। नहीं ख़ुदा का दामन पकड़ने वाला हरगिज़ मुहताज नहीं होता। उस पर कभी बुरे दिन नहीं आ सकते। ख़ुदा जिसका दोस्त और मददगार हो अगर समस्त दुनिया उसकी दुश्मन हो जावे तो कुछ परवाह नहीं। मोमिन अगर मुश्किलात में भी पड़े तो वह हरगिज़ तकलीफ़ में नहीं होता बल्कि वे दिन उसके लिए बहिश्त के दिन होते हैं। ख़ुदा के फ़रिश्ते माँ की तरह उसे गोद में ले लेते हैं।

संक्षिप्त यह कि ख़ुदा ख़ुद उन का मुहाफ़िज़ और नासिर हो जाता है। यह ख़ुदा जो ऐसा ख़ुदा है कि वह لٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ (अल्-बकरः 21) है। वह भिविष्य को जाने वाला है। वह सदैव जीवित रहने वाला है। उस ख़ुदा का दामन पकड़ने से कोई तकलीफ़ पा सकता है? कभी नहीं। ख़ुदा तआला अपने हक़ीक़ी बंदे को ऐसे वक़्तों में बच्चा लेता है कि दुनिया हैरान रह जाती है। आग में पड़ कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िंदा निकलना क्या दुनिया के लिए हैरत-अंगेज़ कार्य न था। क्या एक ख़तरनाक तूफ़ान में हज़रत नोह और आप के साथियों का सलामत बचे रहना कोई छोटी सी बात थी। इस किस्म की बेशुमार नज़ीरें मौजूद हैं और ख़ुद इस ज़माना में ख़दा तआला ने अपने दस्त-ए-क़ुदरत के करिश्मे दिखाए हैं देखो! मुझ पर ख़ून और अक़दाम-ए-क़तल का मुक़द्दमा बनाया गया। एक बड़ा भारी डाक्टर जो पादरी है वह इस में मुद्दई हुआ और आर्या और कुछ मुस्लमान उस के सहयोगी हुए लेकिन आख़िर वही हुआ जो ख़ुदा ने पहले से फ़रमाया था। अबरा (मल् फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 263-264 ऐडीशन 1984 ई. अर्थात मुझे बेक़सूर ठहराया गया। और अल्लाह तआला ने आप को बाइज़्ज़त बरी कर दिया।

अल्लाह तआला हमें हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नसाएह और ख़ाहिशात के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियां गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हक़ीक़त में हम अपनी ज़िंदगियों में एक पाक तबदीली पैदा करने वाले बन जाएं।

जलसे के इन दिनों में क़ादियान में भी और हर मुल्क में जहां-जहां जलसे हो रहे हैं हर शामिल होने वाला ख़ास दुआओं में अपना वक़्त गुज़ारे और यह दुआ करे कि अल्लाह तआला हमें बैअत का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इसी तरह दुनिया का हर अहमदी इस बात पर ग़ौर करे कि क्या हम वे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें बनाना चाहते हैं या अपनी जमाअत से आप तवक़्क़ो रखते हैं। अगर नहीं तो हमें हर वक़त उस के लिए कोशिश और दुआ करते रहना चाहिए। अल्लाह तआला हम सबको इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इस वक़्त मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करूँगा। जनाज़े हैं। एक जनाज़ा हाज़िर है। जनाज़ा आ गया है नाँ? हाज़िर जनाज़ह फ़ज़ल अहमद डोगर साहिब का है। जो जामिआ अहमदिया यू.के के कारकुन थे। चौधरी अल्लाह दत्ता डोगर साहिब के बेटे थे। इक्कीस दिसंबर को 75 वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में में उनकी पत्नी हैं। उज़्मा फ़ज़ल साहिबा और चार बेटे और तीन बेटियां हैं। 92ई. में यहां यू.के आ गए थे। इस के बाद तो अपने काम करते रहे। फिर 1999ई. में उन्होंने वक़्फ़-ए-ज़िंदगी की और हज़रत ख़लीफ़-तुल मसीह राबे रहमहुल्लाहु तआला को अपने आपको पेश किया। हज़रत ख़लीफ़-तुल मसीह राबे ने अज़हे शफ़क़त उनका वक़्फ़ क़बूल फ़र्मा लिया और काफ़ी लंबा अरसा उनको हज़रत ख़लीफ़ राबे की ज़ाती ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इस के बाद फिर मैं ने जामिआ यू.के में उनका तक़र्रुर किया। यह कुछ विभिन्न डयूटीयाँ देते रहे। फिर उनको लाइब्रेरी का इंचार्ज बना दिया गया और इस हैसियत से वफ़ात तक ये ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते रहे।

जामिआ अहमदिया यू.के की लाइब्रेरी की तैयारी में बहुत अहम किरदार उन्होंने अदा किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वक़्त के शाय शूदा समस्त रिव्यू आफ़ रीलीजिंज़ के ऐडीशनज़ को स्कैन किया और उनको वहां रखा। कापियां बना के रखीं। रुहानी ख़ज़ायन के original ऐडीशन को भी स्कैन किया। उनकी भी कापियां बनाईं। उनके बच्चे वर्णन करते हैं कि उनकी बड़ी ख़ाहिश यही थी कि उनकी औलाद ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साथ हमेशा वाबस्ता रहे और इताअत गुज़ार रहे। कहते थे कि जमाअत की ख़िदमत से इन्सान कभी रिटायर्ड नहीं हो सकता। वक़्फ़ तो आख़िरी सांस तक निभाने का नाम है और मुझे दुआ के लिए कहते थे कि दुआ करो में आख़िरी वक़्त तक ख़िदमत करता रहूं और अल्लाह तआला ने उनकी यह ख़ाहिश पूरी फ़रमाई और हस्पताल जाने से दो रोज़ पूर्व तक यह ख़िदमत कर रहे थे। लाइब्रेरी गए और काम कर आए।

हाफ़िज़ मशहूद साहिब जामिआ के उस्ताद हैं यह लिखते हैं कि फ़ज़ल डोगर साहिब की शख़्सियत के बारे में अगर कहा जाए कि वे ख़िलाफ़त के सच्चे आशिक़, वफ़ादार और जांनिसार थे तो इस में किसी किस्म का कोई मुबालग़ा नहीं। फिर कहते हैं कि फ़ज़ल डोगर साहिब हक़ीक़ी वाकिफ-ए-ज़िंदगी थे जिन्हें हम ने हर वक़त जामिआ अहमदिया की लाइब्रेरी को अपने बच्चों की तरह निखारते और सँवारते हुए देखा है। पुराने मुसव्विदात ला ला कर उन्हें स्कैन करते और उनकी सुंदर जिल्द करवा कर लाइब्रेरी की सुंदरता बनाते। निसंदेह ये उनकी अनथक मेहनत ही थी कि जामिआ अहमदिया की लाइब्रेरी में इस वक़्त पच्चीस हज़ार से अधिक कुतुब मौजूद हैं जबकि वसायल इंतेहाई सीमित हैं।

हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह राबे ने भी एक ख़ुतबा में जो मेरे वालिद हज़रत साहि-बज़ादा मिर्ज़ा मंसूर अहमद साहिब की वफ़ात के वक़्त दिया था इस में उनका वर्णन किया था और उनका शुक्रिया अदा किया था और उनके कामों की तारीफ़ की थी।

जलसा की डयूटीयाँ यह हमेशा देते रहे। मेरे साथ भी रबवाह में जलसा की डयूटीयाँ देते रहे और हमेशा उनको मैंने बड़ी मेहनत से और रात-दिन एक कर के काम करते देखा है। कोई फ़िक्र नहीं होती थी।

उनके दामाद शाहिद इक़बाल हैं स्विटज़रलैंड के सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया हैं या रहे हैं। ये कहते हैं कि जब भी बात होती हमेशा मुझे यह कहते कि नमाज़ पढ़ी कि नहीं। नमाज़ों की तलक़ीन किया करते थे और इस तरफ़ ख़ास तवज्जा दिलाते रहते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी जमाअत से और ख़िलाफ़त से हमेशा वाबस्ता रखे

दूसरा जनाज़ा जो है, ग़ायब है। वह मलिक मंसूर अहमद उम्र साहिब का है जो रबवाह में मुरब्बी सिलसिला थे।

पिछले दिनों इसी साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। 1970 ई. में उन्होंने जामिआ पास किया उस के बाद आपने अरबी फ़ाज़िल का इमतेहान भी पास किया। 71 ई. से 73 ई. तक आपने नमल यूनीवर्सिटी इस्लामाबाद से जर्मन भाषा का डिप्लोमा लिया। पहले पाकिस्तान में विभिन्न जगहों पर उनकी तक़र्रुरी हुई। फिर जनवरी 74 ई. में उनको मुबल्लिग़ के तौर पर जर्मनी भिजवाया गया। वहां यह तक़रीबन डेढ़ साल रहे। वापस आ के फिर पाकिस्तान में विभिन्न जगहों पर उनकी तक़र्रुरी हुई। फिर अक्तू-बर 83 ई. में उनको दुबारा जर्मनी भिजवाया गया जहां 86 ई. तक यह बतौर अमीर और मिशनरी इंचार्ज ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते रहे। इस दौरान यह असायलम पर आने वालों को भाषा भी सिखाते थे और उनकी मदद भी करते रहे। शोबा रिश्ता नाता में भी रहे। जर्मन ज़बान जामिआ में पढ़ाते रहे। तक़रीबन छयालीस साल तक उन्होंने वाकिफ-ए-ज़िंदगी के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। उनकी एक बेटी फ़ायज़ा रईस, अनीस रईस साहिब मिशनरी इंचार्ज जापान की पत्नी हैं और एक बेटा सबाह ज़फ़र मलिक मुरब्बी सिलसिला हैं। बाक़ी औलाद भी है उनकी। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए

तीसरा ज़िक्र श्रीमान ईसा जोफ़ साहिब मुअल्लिम सिलसिला गेम्बया का है। यह भी जनाज़ा ग़ायब है। पिछले दिनों दिसंबर में उनकी इकसठ साल की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन वहां के नायब अमीर मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि बहुत ही कामयाब मुबल्लिग़ थे। जामिआ से फ़ारिग़-उत-तहसील भी नहीं थे लेकिन जमाअत के शैदाई थे। एक सिपाही की तरह हमेशा काम करने के लिए तैयार रहते थे। कहा करते थे कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़ौज के अदना सिपाही हैं और जमाअत जो भी उनको हुक्म दे वह बजा लाने के लिए तैयार हैं। जलसा और दूसरे जमाअती प्रोग्रामों में वह हमेशा अपने अफ़राद जमाअत के साथ रहते और उनके सवालात के जवाबात देते और उनकी तर्बीयत करते थे। उन्होंने बताया कि वह पाकिस्तानी अहमदियों की क़ुर्बानियों को रशक की निगाह से देखते हैं और हमेशा उनके लिए दुआ करते हैं और उनकी इज़्ज़त करते हैं। ख़िलाफ़त से ख़ास मुहब्बत का ताल्लुक़ था। दुआओं के लिए ख़ुतूत लिखा करते थे और जब जवाबात मिलते थे तो बड़ी मुहब्बत और प्यार से उनका वर्णन किया करते थे। ख़िलाफ़त से मुहब्बत उन्होंने अपने बच्चों में भी पैदा की है और बच्चों को भी ये कहते कि ख़लीफ़ा वक़्त को ख़त लिखा करो।

मुरब्बी सिलसिला सय्यद सईद साहिब हैं। यह भी गेम्बया में रहे हैं। सैरालियोन में

हैं आजकल। वह कहते हैं कि ये सेनेगाल में पैदा तो हुए थे और इस के बाद ये पढ़ के मुलाज़मत के सिलसिला में गेम्बया आ गए और नासिर अहमदिया सैकण्डरी स्कूल में फ्रैंच टीचर के तौर पर ख़िदमात सरअंजाम दे रहे थे। इसी दौरान उन्होंने अहमदियत क़बूल की। फिर इख़लास वफ़ा में क़दम आगे बढ़ाते गए। 1997 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्ला के ज़ेरे इरशाद समस्त सेंट्रल स्टाफ़ ने गेम्बया छोड़ दिया तो उन्हें नासिर अहमदिया सैकण्डरी स्कूल का प्रिंसिपल बना दिया गया। इस हैसियत में नुमायां ख़िदमात सरअंजाम दें। इस के बाद उनको एरिया मिशनरी बना दिया गया और वफ़ात तक वह इसी पर क़ायम रहे।

ईसा जोफ़ साहिब के ज़रीया कई प्यासी रूहें अहमदियत की आग़ोश में आएं। उनका दीनी इलम भी बहुत था। ख़ुद पढ़ के उन्होंने इलम हासिल किया। ग़ैर अहमदियों के साथ बहुत अच्छे ताल्लुक़ात थे। इसलिए अक्सर इलाक़े के चीफ़स, इमाम उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे और अगर कोई इलाक़े में अहमदियत की मुख़ालिफ़त या शरारत करना चाहता तो कुछ दफ़ा यह शरीफ़ तबा लोग मुक़ाबले पर आ जाते, डट जाते और मुख़ालिफ़ीन को मुँह की पड़ती।

फिर यह लिखते हैं कि उनकी एक ख़ूबी उनका साहब-ए-इलम होना था। उनका मुताला बड़ा वसीअ था जैसा कि मैंने कहा और जमाअती लिटरेचर पर उबूर हासिल था। जलसा सालाना के दौरान कई दफ़ा उन्हें तक़ारीर के मौक़े भी नसीब हुए। इसी तरह जमाअती रसायल में उनके मज़ामीन शाय होते थे। आजिज़ी और इनकेसारी उनका ख़ास वस्फ़ था। आप सायब राए भी थे और हमेशा अहम फ़ैसलों में उनको शामिल किया जाता था और उनकी अक्सर राय दरुस्त पाई जाती थी। तहज्जुद गुज़ार थे। दुआ-गो थे। कसरत से सच्ची ख़्वाबें आया करती थीं और जब भी कोई उनको दुआ के लिए कहता तो उसे मश्वरा देते कि पहले ख़लीफ़ा वक़्त को दुआ का ख़त लिखो और फिर ख़ुद भी करते।

फिर गेम्बया के मुबल्लिग़ मसऊद साहिब हैं वह कहते हैं तब्लीग़ का उनको बहुत शौक़ था। कई कई घंटों का सफ़र कर के दूर दराज़ गांव में जाया करते थे। निहायत नफ़ीस तबीयत के मालिक थे। हँसमुख थे। ख़ुशी हो या ग़मी, बीमारी हो या परेशानी, हर वक़त मुस्कुराते रहते थे। हर एक से मुस्कुराते चेहरे से मिलते थे। हर एक के साथ ऐसे तपाक और गर्मजोशी से मिलते कि वह समझता कि बस मुझसे ही उनको प्यार है। बहुत रहम-दिल और नरम और शफ़ीक़ थे। कभी किसी की ग़ीबत नहीं करते थे और न किसी के मुआमले में दख़ल देते। अपने आफ़सरान की इताअत बे-इंतिहा करते। मातहतों का ख़्याल रखते, उनकी हौसला-अफ़ज़ाई करते और कहते हैं जब कभी भी उनसे पता किराया, राबता करने की कोशिश की तो पता लगता था कि फ़ारिग़ दिनों में यह तब्लीग़ के लिए बाहर निकले हुए हैं। विट्स अप स्टेटस पर क़ुरआन आयात, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहादीस, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लिफ़ा की तब्लीग़ी और तर्बीयती पोस्ट्स और ख़लिफ़ा की तसावीर हर-रोज़ बाक़ायदगी से लगाते और अहमदी और ग़ैर अहमदी लोगों को भेजते थे। तब्लीग़ का बे-इंतिहा शोक था।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

जैसा कि मैंने कहा अभी नमाज़-ए-जुमा के बाद उनके जनाज़े अदा होंगे। इन शा अल्लाह।

★ ★ ★

पृष्ठ 1का अनुवाद

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीहे मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम "मुस्लेह मौऊद" (अर्थात् दूसरे ख़लीफ़ा एवं अपने सपुत्र हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब) के बारे में अज़ीमुश्शान -:पेशगोई (महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी) का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं ख़ुदाए रहीम व करीम ने जो प्रत्येक चीज़ पर क़ादिर है जल्ला शानुहू व" अ़ज़्ज़ इस्मुहू - जिसकी शान प्रतापी है और उसका नाम इज़्ज़त वाला है। मुझको अपने इलहाम (वाणी) से संबोधित करके फ़र्माया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा। अत: मैंने तेरी वेदनओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) की जगह दी और तेरे सफ़र (होशियारपुर और लुधियाना) को तेरे लिये मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (निकटता) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान (कृपा व उपकार) का निशान दिया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे मिलती है। ऐ मुज़फ्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वह जो क़बरों में दबे पड़े हैं बाहर आयें और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बर्कतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बुराईयों के साथ भाग जाये। अत: लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। अत: वे विश्वास कर लें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तकज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाये। अत: तुझे खुशखबरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जायेगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा। सुन्दर, पवित्र लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुकद्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आसमान से आता है। उसके साथ फ़ज़ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शिकोह (प्रतापी) और अज़मत (महान) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़स अर्थात्(मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात् एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके अर्थ समझ में नहीं आए) दुशंब: (सोमवार) है मुबारक दुशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक श्रेष्ठ सुपुत्र)। مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ ۔ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَ الْعُلَاء كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاء मज़्हरूल् अव्वले वल् आख़िरि, मज़्हरूल् ह़क्क़े वल् अलाऐ कअन्नल्लाह नज़्ज़ल मिनस्समाइ

अर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो सच है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वंय आकाश से उतर आया हो। जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर। जिसको खूदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी आत्मा डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत(प्रसिद्ध) पाएगा और क़ौमें (जातियां) उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़सी नुक़ता आसमान अर्थात् ख़ुदा की तरफ उठाया जायेगा। व काना अम्रम् मक़्ज़िय्या

और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।)

(इश्तेहार 20 फ़रवरी 1886, पृ. 3)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

कल रात जब मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैंने देखा कि जाफ़र फ़रिश्तों के साथ परवाज़ कर रहे हैं जबकि हमज़ा तख़्त पर टेक लगाए हुए हैं (हदीस)

कुछ सहाबा जिनके बारे में पहले वर्णन कर चुका हूँ उनकी कुछ बातें या तफ़ासील बाद में सामने आई हैं
मैं ने मुनासिब समझा कि उसे भी चंद ख़ुतबात में वर्णन कर दूं ताकि इस माध्यम से भी लोगों के इलम में ये बातें आ जाएं और ज़्यादा से ज़्यादा सुन सकें

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हमज़ा नाम बहुत पसंद था

मैं ने अभी दुआ ख़त्म भी नहीं की थी कि बातिल मुझ से दूर हो गया और मेरा दिल यक़ीन से भर गया, फिर सुबह को मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी समस्त हालत वर्णन किया जिस पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे हक़ में दुआ फ़रमाई कि अल्लाह तआला मुझे सबाते क़दम बख़्शे (हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो)

"हे माशर-ए-क़ुरैश मैं ने देखा है कि मुस्लमानों के लश्कर में गोया ऊंटनियों के कुजावों ने अपने ऊपर आदमियों को नहीं बल्कि मौतों को उठाया हुआ है और यसरब की सांडनियों पर गोया हलाकतें सवार हैं।" एक मुशरिका एतराफ़

जब शराब की हुर्मत हो गई तो फिर उसके नज़दीक भी ये लोग नहीं गए, सहाबा का अल्लाह तआला के हुक्मों को मानने का यह मयार था कि फ़ौरी तौर पर मटके तोड़ दिए

जब यहूद ने देखा कि मुस्लमान मदीना में ज़्यादा इक़तेदार हासिल करते जाते हैं तो उनके तेवर बदलने शुरू हुए
और इन्होंने मुस्लमानों की इस बढ़ती हुई ताक़त को रोकने का तहीया कर लिया और इस ग़रज़ के लिए इन्होंने हर किस्म की जायज़ और नाजायज़ तदाबीर इख़तेयार करनी शुरू कीं

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचा, महान बदरी सहाबी हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

दुनिया के बिगड़ते हालात के पेश-ए-नज़र साल-ए-नौ के आग़ाज़ पर दुआओं की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 दिसम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन के अंत पर मैं ने बताया था कि बदरी सहाबा का वर्णन तो अब ख़त्म हुआ लेकिन

कुछ सहाबा जिनके बारे में पहले वर्णन कर चुका हूँ उनकी कुछ बातें या तफ़ासील बाद में सामने आई हैं जिन्हें या तो मैं किसी वक़्त वर्णन करूँगा या जब उनकी इशाअत होगी तो इस में आ जाएं गी। कुछ लोग लिख रहे हैं कि इस तारीख़ को सुन कर हमें बहुत फ़ायदा हुआ है। ख़ुतबात में भी यह हिस्सा वर्णन हो जाए। इसलिए मैं ने मुनासिब समझा कि उसे भी चंद ख़ुतबात में वर्णन कर दूं ता इस ज़रीया से भी लोगों के इलम में ये बातें आ जाएं और ज़्यादा से ज़्यादा लोग सुन सकें।

बहरहाल इस विषय में पहला वर्णन हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो का है। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बहुत प्यारे थे जिसका इज़हार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुख़्तलिफ़ बातों और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत से होता है कि उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क्या प्रतिक्रिया थी। हो सकता है कुछ बातें अजमालन दुबारा भी आ जाएं।

रिवायत में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हमज़ा नाम बहुत पसंद था। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हम में से एक आदमी के घर लड़का पैदा हुआ तो उन्होंने पूछा हम उस का नाम क्या रखें? नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : इस का नाम हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब के नाम पर रखूँ जो कि मुझे सब नामों से ज़्यादा पसंदीदा है (مستدرك على الصحيحين للحاكم, भाग 5 पृष्ठ 1831 किताब मारफ़त सहाबा, हदीस नंबर 4888 प्रकाशित मकतबा निज़ार बाज़ रियाज़)

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी और औलाद के विषय में तबक़ातु कुबरा में लिखा है कि हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक शादी मिल्लहबन मालिक जो कि क़बीला ओस से ताल्लुक़ रखते थे उनकी बेटी से हुई जिनसे याला और आमिर पैदा हुए। अपने बेटे याला के नाम पर ही हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक कुनिय्यत अबू याला थी। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की दूसरी पत्नी हज़रत खोला बिंत क़ैस अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो से हज़रत उमारा रज़ियल्लाहु अन्हो की विलादत हुई जिनके नाम पर हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी कुनिय्यत अबू याला रखी थी। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक शादी हज़रत अस्मा बिंत उमेस रज़ियल्लाहु अन्हो की बहन हज़रत सलमा बिंत उमेस रज़ियल्लाहु अन्हा से हुई जिनके बतन से एक बेटी हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा की पैदाइश हुई। यह वही उमामा हैं जिनके बारे में हज़रत अली, हज़रत जाफ़र और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो में झगड़ा हुआ था। उनमें से हर एक यही चाहता था कि हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा उसके पास रहें मगर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो के हक़ में फ़ैसला फ़रमाया था क्योंकि हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़ाला हज़रत अस्मा बिंत अमीस रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हो की निकाह में थीं। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे याला की औलाद में अम्मारा, फ़ज़ल, ज़ुबैर, अक़ील और मुहम्मद थे मगर सब फ़ौत हो गए और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की न ही औलाद ज़िंदा रही और न ही नसल चल सकी।

(उद्धरित तबकातुल कुबरा, भाग 2 पृष्ठ 46 दारुल फ़िकर बेरूत)

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी उमामा के विषय में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो के जिस झगड़े का अभी वर्णन आया है इस की तफ़सील बुख़ारी में इस तरह है : हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्होसे रिवायत है। उन्होंने कहा कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़िल-कादा में उमरा करने का इरादा किया तो अहल-ए-मक्का ने इस बात से इन्कार किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का में दाख़िल होने दें। आख़िर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे इस शर्त पर सुलह की कि वह मक्का में आइन्दा साल उमरे को आएँगे और तीन दिन तक ठहरेंगे। जब सुलह नामा लिखने लगे तो, जिस तरह कि लिखा है कि यह वह शर्तें हैं जिन पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुलह की, मक्का वाले कहने लगे कि हम इस को नहीं मानते। अगर हम जानते कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कभी न रोकते बल्कि यहां तुम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं अल्लाह का रसूल भी हूँ और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह भी हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि रसूलुल्लाह का लफ़्ज़ मिटा दो। अली ने कहा हरगिज़ नहीं मिटाना। अल्लाह की क़सम मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िताब को कभी नहीं मिटाऊंगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लिखा हुआ काग़ज़ ले लिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अच्छी तरह लिखना नहीं जानते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लिखा : यह वह शर्तें हैं जो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने ठहराई। मक्का में कोई हथियार नहीं लाएँगे सिवाए तलवारों के जो नयामों में होंगी और मक्का वालों में से किसी को भी साथ नहीं ले जाऐंगे जबकि वह उनके साथ जाना चाहे और अपने साथियों में से किसी को भी नहीं रोकेंगे अगर वह मक्का में ठहरना चाहे। ख़ैर जब अनुबंध के मुताबिक़ आप आइन्दा साल मक्का में दाख़िल हुए और मुद्दत ख़त्म हो गई तो क़ुरैश हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और कहने लगे कि अपने साथी अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहो कि अब यहां से चले जाएं क्योंकि निर्धारित मुद्दत गुज़र चुकी है। इसलिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से रवाना हो गए। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी आपके पीछे आई जो पुकार रही थी कि हे चचा हे चचा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने जा कर उसे ले लिया उस का हाथ पकड़ा और फ़ातिमा अलैहास्सलाम से कहा अपने चचा की बेटी को ले लें। उन्होंने उस को सवार कर लिया। अब अली, ज़ैद और जाफ़र हमज़ा की लड़की की बाबत झगड़ने लगे। अली कहने लगे कि मैंने उसको लिया है और मेरे चचा की बेटी है और जाफ़र ने कहा मेरे चचा की बेटी है और इस की ख़ाला मेरी बीवी है और ज़ैद ने कहा मेरे भाई की बेटी है। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के विषय में फ़ैसला किया कि वह अपनी ख़ाला के पास रहे और फ़रमाया ख़ाला बमंज़िला माँ है और अली से कहा तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूँ और जाफ़र से कहा तुम सूरत और सीरत में मुझसे मिलते-जुलते हो और ज़ैद से कहा तुम हमारे भाई हो और दोस्त हो। अली ने कहा क्या आप हमज़ा की बेटी से शादी नहीं कर लेते। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह मेरे दूध भाई की बेटी है। मैं उस का चाचा हूँ।

(उद्धरित सही बुख़ारी, किताब मग़ाज़ी, बाब उमरा क़ज़ा, हदीस नंबर : 4251)

ये छोटे-छोटे मसायल भी इन वाक़यात में हल हो जाते हैं। कई दफ़ा क़ज़ा में मुक़द्दमे आते हैं कि ख़ाला के पास क्यों जाएँ? नानी के पास क्यों जाएँ ? तो यहां ये फ़ैसले हो गए।

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बूल इस्लाम के विषय में رَوضُ الأُنُف में लिखा है कि इब्ने इसहाक़ के इलावा कुछ ने हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के इस्लाम लाने के विषय में एक बात का इज़ाफ़ा किया है। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि जब मुझ पर ग़ुस्सा ग़ालिब आ गया और मैं ने कह दिया अर्थात वे जो सारा वाक़िया हुआ है और पहले वर्णन हो चुका है कि जब अपनी लौंडी के कहने पर (कह दिया) कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन पर हूँ। बाद में मुझे नदामत हुई कि मैंने अपने आबाओ अज्दाद और क़ौम के दीन को छोड़ दिया है और मैं ने इस अज़ीम मामले के विषय में शकूक-ओ-शुबहात में इस तरह रात गुज़ारी कि लम्हा भर सो न पाया। फिर मैं ख़ाना काबा के पास आया और अल्लाह तआला के हुज़ूर रो रो कर दुआ की कि अल्लाह तआला मेरे सीने को हक़ के लिए खोल दे और मुझ से शकूक-ओ-शुबहात को दूर कर दे।

मैं ने अभी दुआ ख़त्म भी न की थी कि बातिल मुझसे दूर हो गया और मेरा दिल यक़ीन से भर गया। फिर सुबह को मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी समस्त हालत वर्णन की जिस पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे हक़ में दुआ फ़रमाई कि अल्लाह तआला मुझे सबात क़दम बख़्शे। (روض الانف,भाग 2, पृष्ठ 44- 45 प्रकाशन दारुल कुतुब इलमिया बेरूत)

हज़रत अम्मार बिन अबू अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की कि उन्हें जिबराईल अलैहिस्सलाम उनकी हक़ीक़ी शक्ल में अब दिखाएंगे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम उन्हें देखने की ताक़त नहीं रखते। उन्होंने अर्ज़ की क्यों नहीं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम चाहते हो तो अपनी जगह पर अब बैठ जाओ। रावी कहते हैं फिर जिबराईल अलैहिस्सलाम ख़ाना काबा की इस लक्कड़ी पर उतर आए जिस पर मुशरेकीन तवाफ़ के वक़्त अपने कपड़े डाला करते थे। फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपनी निगाह उठाओ देखो।

जब उन्होंने देखा तो क्या देखते हैं कि इन अर्थात जिबराईल अलैहिस्सलाम के दोनों पांव सबज़ ज़बर मानिंद हैं। फिर वह ग़शी की हालत में गिर पड़े

ज़बरजद भी एक क़ीमती पत्थर है। कहते हैं जो ज़मुर्रद से समानता रखता है

(अल् तबकातुक कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 8 दारुल कुतुब इलमिया बेरूत) (मुंजिद ज़ेर माद्दा ज़बर)

सफ़र दो हिज्री में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजेरीन की एक जमाअत के साथ मदीना से अबवा की तरफ़ निकले जिस में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को भी शिरकत की तौफ़ीक़ मिली। इस ग़ज़वा में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने ही उठाया हुआ था जो कि सफ़ैद रंग का था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पीछे हज़रत अबू साद रज़ियल्लाहु अन्हो या एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना का अमीर मुक़र्रर फ़रमाया। इस सफ़र में लड़ाई की नौबत नहीं आई और बनू ज़मरः के साथ सुलह का मुआहिदा तै पाया गया।

ये पहला ग़ज़वा था जिसमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनफ़स नफ़ीस शिरकत की

इस ग़ज़वा का दूसरा नाम वद्दन भी है।

(उद्धरित सबलुल हुदा वल् रिशाद, भाग 4 पृष्ठ 14 बाब الثالث فی غزوة الابواء, प्रकाशन दारुल कुतुब इलमिया बेरूत)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सीरत ख़ातिमन नबिययीन में लिखा है कि "जिहाद बिल सैफ़ की इजाज़त हिज्रत के दूसरे साल माह सफ़र में नाज़िल हुई। चूँकि क़ुरैश के ख़ूनी इरादों और उन की ख़तरनाक कार्यवाईयों के मुक़ाबला में मुस्लमानों को महफ़ूज़ रखने के लिए फ़ौरी कार्रवाई की ज़रूरत थी इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसी माह में मुहाजेरीन की एक जमाअत को साथ लेकर अल्लाह तआला का नाम लेते हुए मदीना से निकल खड़े हुए। रवानगी से पूर्व आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पीछे मदीना में साद बिन उबादा रईस-ए-ख़ज़रज को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया और मदीना से जुनूब मग़रिब की तरफ़ मक्का के रास्ता पर रवाना हो गए और अंततः मुक़ाम-ए-वद्दान तक पहुंचे। इस इलाक़ा में क़बीला बनू ज़मरः लोग आबाद थे। ये क़बीला बनू कनाना की एक शाख़ था और इस तरह गोया ये लोग क़ुरैश के चचाज़ाद भाई थे। यहां पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बीला बनू ज़मरहः के रईस के साथ बातचीत की और बाहम रजामंदी से आपस में एक मुआहिदा हो गया। जिसकी शर्तें ये थीं कि बनू ज़मरहः के साथ दोस्ताना ताल्लुक़ात रखेंगे और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ किसी दुश्मन की मदद नहीं करेंगे और जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनको मुस्लमानों की मदद के लिए बुलाएँगे तो वे फ़ौरन आजाऐंगे। दूसरी तरफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों की तरफ़ से यह अह्द किया कि मुस्लमान क़बीला बनू ज़मरहः के साथ दोस्ताना ताल्लुक़ात रखेंगे और बवक़्त-ए-ज़रूरत उनकी मदद करेंगे। यह मुआहिदा बाक़ायदा लिखा गया और फ़रीक़ैन के इस पर दस्तख़त हुए और पंद्रह दिन की गैरहाज़िरी के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ़ ले आए। ग़ज़व-ए-वदइन का दूसरा नाम ग़ज़वा अब भी है क्योंकि वद्दान के क़रीब ही अबवा की बस्ती भी है और यह वही मुक़ाम है जहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की माता का देहांत हुआ था।'' यह वह स्थान है।'' इतिहासकार लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़व्वास ग़ज़वा में बनू ज़मरहः के साथ क़ुरैश-ए-मक्का का भी ख़्याल था। इस का अर्थ यही है कि वास्तव मे

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ये मुहिम क़ुरैश की ख़तरनाक कार्यवाईयों के हल के लिए था। और इस में इस ज़हरीले और ख़तरनाक असर का अज़ाला मक़सूद था जो क़ुरैश के क़ाफ़िले इत्यादि मुस्लमानों के ख़िलाफ़ क़बायल-ए-अरब में पैदा कर रहे थे और जिस की वजह से मुस्लमानों की हालत उन अय्याम में बहुत नाज़ुक हो रही थी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम. ए, पृष्ठ 327-328)

बहरहाल हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस ग़ज़वा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा उठाया हुआ था

जमादीऊल उला 2 हिज्री में फिर क़ुरैश मक्का की तरफ़ से कोई ख़बर पा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजेरीन की एक जमाअत के साथ जिन की संख्या डेढ़ सौ या दो सौ वर्णन हुई है मदीना से अशीरा की तरफ़ निकले और अपने पीछे अपने रज़ाई भाई अबू सलमा बिन अब्दुल असद को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया :

इस ग़ज़वा में भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सफ़ैद रंग का झंडा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उठाया हुआ था

इस ग़ज़वा में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कई चक्कर काटते हुए अंततः साहिल समुंद्र के क़रीब यंबाऊ के पास मुक़ाम अशीरा पहुंचे और जबकि कुरैश का मुक़ाबला नहीं हुआ परंतु इस में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बीला बनू--मुदलज के साथ उन्ही शरायत पर जो बनोज़ मर्रा के साथ थीं एक मुआहिदा तै फ़रमाया और फिर वापिस तशरीफ़ ले आए। (उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद एम. ए, पृष्ठ 329)(سبل الهدیٰ والرشاد, भाग 4 पृष्ठ 17 باب السادس فی بیان غزوۃ العشیرۃ,प्रकाशन दारुल कुतुब इलमिया बेरूत)

जंग-ए-बदर में इन्फ़रादी लड़ाई में जो युद्ध के लिए चैलेंज का वर्णन है, यह पहले मुख़्तलिफ़ हदीसों के हवाले से वर्णन हो चुका है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस की तफ़सील इस तरह लिखी है कि "अब फ़ौजें बिल्कुल एक दूसरे के सामने थीं। परंतु क़ुदरत-ए-इलाही का अजीब तमाशा है कि इस वक़्त लश्करों के खड़े होने की तर्तीब ऐसी थी कि इस्लामी लश्कर क़ुरैश को असली संख्या से ज़्यादा बल्कि दोगुना नज़र आता था जिसकी वजह से कुफ़्फ़ार भयभीत हुए जाते थे और दूसरी तरफ़ क़ुरैश का लश्कर मुस्लमानों को उनकी असली संख्या से कम--नज़र आता था। जिसके नतीजा में मुस्लमानों के दिल बढ़े हुए थे। क़ुरैश की यह कोशिश थी कि किसी तरह इस्लामी लश्कर की संख्या का सही अंदाज़ा पता लग जाए ताकि वे छूटे हुए दलों को सहारा दे सकें। इस के लिए क़ुरैश के सरदारो ने उमायर बिन वहब को भेजा कि इस्लामी लश्कर के चारों तरफ़ घोड़ा दौड़ा कर देखे कि इस की संख्या कितनी है और आया उनके पीछे कोई फौज तो मख़फ़ी नहीं? इसलिए अमीर ने घोड़े पर सवार हो कर मुस्लमानों का एक चक्कर काटा परंतु उसे मुस्लमानों की शक्ल और सूरत से ऐसा जलाल और अज़म और मौत से ऐसी बेपर्वाई नज़र आई कि वह सख़्त भयभीत हो कर लौटा और क़ुरैश से मुख़ातब हो कर कहने लगा "'मुझे कोई मख़फ़ी फौज वग़ैरा तो नज़र नहीं आई, लेकिन हे माशरे क़ुरैश मैंने देखा है कि मुस्लमानों के लश्कर में गोया ऊंटनियों के कुजावों ने अपने ऊपर आदमियों को नहीं बल्कि मौतों को उठाया हुआ है और यसरिब की सांडनियों पर गोया हलाकतें सवार हैं।"

क़ुरैश ने जब यह बात सुनी तो उन में एक बेचैनी सी पैदा हो गई। सुराक़ा जवान का ज़ामिन बन कर आया था कुछ ऐसा मरऊब हुआ कि उल्टे पांव भाग गया और जब लोगों ने उसे रोका तो कहने लगा'' मुझे जो कुछ नज़र आ रहा है वह तुम नहीं देखते।'' हकीम बिन हिज़म ने अमीर की राय सुनी तो घबराया हुआ उत्बा बिन राबीया के पास आया और कहने लगा।'' हे उतबा! तुम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आख़िर अमर हज़रमी का बदला ही चाहते हो। वह तुम्हारा साथी था। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम उस की तरफ़ से ख़ून बहा अदा कर दो और क़ुरैश को लेकर वापस लौट जाओ। इस में हमेशा के लिए तुम्हारी नेक-नामी रहेगी।" उतबा को जो ख़ुद घबराया हुआ था और क्या चाहिए था झट बोला'' हाँ हाँ मैं राज़ी हूँ और फिर हकीम देखो तो यह मुस्लमान और हम आख़िर आपस में रिश्तेदार ही तो हैं। क्या यह अच्छा लगता है कि भाई भाई पर तलवार उठाए और बाप बेटे पर। तुम ऐसा करो कि अभी अबुल-हकम (अबु-जहल) के पास जाओ और इस के सामने यह तजवीज़ पेश करो' और इधर उतबा ने ख़ुद ऊंट पर सवार हो कर अपनी तरफ़ से लोगों को समझाना शुरू कर दिया कि रिश्तेदारों में लड़ाई ठीक नहीं है। हमें वापस लौट जाना चाहिए और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस के हाल पर छोड़ देना चाहिए कि वह दूसरे क़बायल अरब के साथ निपटता रहे। जो नतीजा होगा देखा जाएगा। और फिर तुम देखो कि इन मुस्लमानों के साथ लड़ना भी कोई आसान काम नहीं है। क्योंकि चाहे तुम मुझे बुज़दिल कहो हालाँकि मैं बुज़दिल नहीं हूँ मुझे तो ये लोग मौत के ख़रीदार नज़र आते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूर से उत्बा को देखा तो फ़रमाया।'' अगर लश्कर-ए-कुफ़्फ़ार में से किसी में शराफ़त है तो इस सुर्ख़ ऊंट के सवार में ज़रूर है। अगर ये लोग उस की बात मान लें तो उनके लिए अच्छा हो। लेकिन जब हकीम बिन हज़ाम अबू जहल के पास आया और उससे यह तजवीज़ वर्णन की तो वह फिर फिरोन उम्मत भला ऐसी बातों में कब आने वाला था छुटते ही बोला। अच्छा अच्छा अब उत्बा को अपने सामने अपने रिश्तेदार नज़र आने लगे हैं। और फिर उसने अम्र हज़रमी के भाई आमिर हज़रमी को बुला कर कहा तुमने सुना तुम्हारा साथी उत्बा क्या कहता है और वह भी इस वक़्त जबकि तुम्हारे भाई का बदला गोया हाथ में आया हुआ है। आमिर की आँखों में ख़ून उतर आया और उस ने अरब के क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ अपने कपड़े फाड़ कर और नंगा हो कर चिल्लाना शुरू किया ... हाय अफ़सोस मेरा भाई बग़ैर इंतेक़ाम के रहा जाता है। हाय अफ़सोस मेरा भाई बग़ैर इंतेक़ाम के रहा जाता है! इस सहराई आवाज़ ने लश्कर-ए-क़ुरैश के सीनों में दुश्मनी के शोले बुलंद कर दिए और जंग की भट्टी अपने पूरे ज़ोर से दहकने लग गई।"

"अबुजहल के ताने ने उत्बा के तन-बदन में आग लगा दी थी। इस ग़ुस्सा में भरा हुआ वह अपने भाई शीबा और अपने लड़के वलीद को साथ लेकर लश्कर-ए--कुफ़्फ़ार से आगे बढ़ा और अरब के क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ इन्फ़रादी लड़ाई के लिए मुबारज़-ए-तलबी की। चंद अंसार उनके मुक़ाबला के लिए आगे बढ़ने लगे परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको रोक दिया और फ़रमाया। हमज़ा तुम उठो। अली तुम उठो। उबैदा उठो! ये तीनों आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निहायत क़रीबी रिश्तेदार थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चाहते थे कि ख़तरा की जगह पर सबसे पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अज़ीज़-ओ-अक़ारिब आगे बढ़ें। दूसरी तरफ़ उत्बा इत्यादि ने भी अंसार को देख कर आवाज़ दी कि इन लोगों को हम क्या जानते हैं। हमारी टक्कर के हमारे सामने आएं। इसलिए हमज़ा और अली और उबैदा आगे बढ़े। अरब के दस्तूर के मुताबिक़ पहले रोशनासी हुई। फिर उबैद बिन मतलब वलीद के मुक़ाबिल हो गए और हमज़ा उत्बा के और अली शेबा के। हमज़ा और अली ने तो एक दो वारों में ही अपने हरीफ़ों को ख़ाक में मिला दिया लेकिन उबैद और वलीद में दो-चार अच्छी ज़रबें हुईं और अंततः दोनों एक दूसरे के हाथ से कारी ज़ख़म खा कर गिरे। जिस पर हमज़ा और अली ने जल्दी से आगे बढ़ कर वलीद का तो ख़ातमा कर दिया और उबैद को उठा कर अपने कैंप में ले आए। परंतु उबैदा इस सदमा से जान बचा नहीं सके और बदर से वापसी पर रास्ता में देहांत हुआ।'' (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए, पृष्ठ 358 से 360)

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ज़व-ए-बदर में तैयमा बिन अदी सरदार--ए-क़ुरैश को भी क़तल किया था

(सही बुख़ारी किताब मग़ाज़ी बाब किस्सा ग़ज़वा बदर)

ग़ज़व-ए-बदर के वाक़िया के वक़्त की एक रिवायत है कि हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने नशे की हालत में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की ऊंटनियों को मार दिया था। यह शराब के हराम होने से पहले का वाक़िया है। इस की तफ़सील बुख़ारी में यूं वर्णन हुई है मुख़्तलिफ़ रावी हैं। हज़रत अली बिन हसीन रज़ियल्लाहु अन्हो अपने पिता हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत करते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बदर की लड़ाई के अवसर पर मुझे एक जवान ऊंटनी

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ग़नीमत में मिली और एक दूसरी ऊंटनी मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इनायत फ़रमाई। एक दिन एक अंसारी सहाबी के दरवाज़े पर में इन दोनों को इस ख़्याल से बाँधे हुए था कि उनकी पीठ पर इज़ख़र (वह एक घास है कि जिसे सुनार वग़ैरा भी इस्तिमाल करते हैं, ख़ुशबू-दार घास है) रखकर बेचने ले जाऊँगा। बनी क़ैनक़ा का एक सुनार भी मेरे साथ था। इस तरह ख़्याल यह था कि इस की आमदनी से फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जिनसे में निकाह करने वाला था उनका वलीमा करूँगा। हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब रज़ियल्लाहु अन्हो इसी अंसारी के घर में शराब पी रहे थे। उनके साथ एक गाने वाली भी थी। उसने जब यह मिसरा पढ़ा कि हाँ हे हमज़ा उट्ठो फ़र्बा जवान ऊंटनियों की तरफ़ बढ़ो। हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो जोश में तलवार लेकर उठे और दोनों ऊंटनियों के कोहान चीर दिए। उनके पेट फाड़ डाले और उनकी कलेजी निकाल ली। इब्ने जरी ने वर्णन किया कि मैं ने इब्ने शहाब से पूछा कि क्या कोहान का गोश्त भी काट लिया? उन्होंने वर्णन किया कि इन दोनों के कोहान भी काट लिए और उन्हें ले गए। इब्ने शहाब ने वर्णन किया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मुझे यह देखकर बड़ी तकलीफ़ हुई। फिर मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में इस वक़्त ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो भी मौजूद थे। मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस वाक़िया की इत्तिला दी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो भी आपके साथ ही थे और में भी आपके साथ था। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पहुंचे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घुटन का इज़हार फ़रमाया तो हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने नज़र उठा कर देखा। नशा की हालत में थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी कहने लगे कि तुम सब मेरे बाप दादा के ग़ुलाम हो। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उल्टे पांव लौट कर उनके पास से चले आए। ये शराब की हुर्मत से पहले का है।

(सही बुख़ारी, किताब المساقاة،باب بيع الحطب والكلا, हदीस नंबर 2375)

उन्होंने कहा ऐसी हालत में बेहतर है कि उस से बात न की जाए लेकिन बाद में बहरहाल देख लें कि जब शराब की हुर्मत हो गई तो फिर उसके नज़दीक भी ये लोग नहीं गए। सहाबा का अल्लाह तआला के हुक्मों को मानने का यह मयार था कि फ़ौरी तौर पर मटके तोड़ दिए। (सही मुस्लिम, किताब الاشربة،باب تحريم الخمر ...الخ हदीस नंबर 5138)

यह नहीं कहा कि हम नशा की आदत आहिस्ता-आहिस्ता छोड़ देंगे जैसा कि आजकल लोग कहते हैं। अव्वल तो पहले नशा में पड़ जाते हैं जो वैसे ही ग़लत काम है। इस्लाम में ममनू है और फिर कहते हैं आहिस्ता-आहिस्ता छोड़ देंगे, हमें मोहलत दी जाए। तो बहरहाल यह एक वाक़िया है जो उस वक़्त हुआ था और फिर इसके बाद उनके क़ुर्बानी के मयार भी बढ़ते चले गए। यक़ीनन हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को इस के बाद शर्मिंदगी भी हुई होगी कि उन्होंने क्या कहा।

ग़ज़ व-ए-बदर के बाद जब बनू केनका की मुहिम दर पेश थी तो इस में भी हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो पेश पेश थे

इस ग़ज़वा में भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने ही उठाया हुआ था। यह झंडा सफ़ैद रंग का था।

(सबलुल हुदा वर रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 180 बाब सानी अशरफ़ी ग़ज़व बनी क़ैनक़ा, प्रकाशन दारुल कुतुब इलमिया बेरूत)

उसकी तफ़सील हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह लिखी है कि "जिस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से हिज्रत करके मदीना में तशरीफ़ लाए थे उस वक़्त मदीना में यहूद के तीन क़बायल आबाद थे। उनके नाम बनू केनका, बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में आते ही इन क़बायल के साथ अमन-ओ-अमान के मुआहिदे कर लिए और आपस में सुलह और अमन के साथ रहने की बुनियाद डाली। मुआहिदा की रूसे फ़रीक़ैन इस बात के ज़िम्मेदार थे कि मदीना में अमन-ओ-अमान क़ायम रखें और अगर कोई बैरूनी दुश्मन मदीना पर हमला-आवर हो तो सब मिलकर उसका मुक़ाबला करें। शुरू शुरू में तो यहूद इस मुआहिदा के पाबंद रहे और कम से कम ज़ाहिरी तौर पर उन्होंने मुस्लमानों के साथ कोई झगड़ा पैदा नहीं किया। लेकिन जब उन्होंने देखा कि मुस्लमान मदीना में ज़्यादा इक़तेदार हासिल करते जाते हैं तो उनके तेवर बदलने शुरू हुए और इन्होंने मुस्लमानों की इस बढ़ती हुई ताक़त को रोकने का तहीया कर लिया और इस ग़रज़ के लिए इन्होंने हर किस्म की जायज़ वनाजायज़ तदाबीर इख़टतेयार करनी शुरू कीं।

यहाँ तक कि इन्होंने इस बात की कोशिश से भी दरेग़ नहीं किया कि मुस्लमानों के अंदर फूट पैदा करके ख़ाना-जंगी शुरू करा दें। इसलिए रिवायत आती है कि एक मौक़ा पर क़बीला ओस और ख़ज़रज के बहुत से लोग इकट्ठे बैठे हुए बाहम मुहब्बत से बातें कर रहे थे कि कुछ फ़िल्ला परदाज़ यहूद ने इस मजलिस में पहुंच कर जंग बुआस का वर्णन शुरू कर दिया। यह वह ख़तरनाक जंग जवान 2 क़बायल के दरमयान हिज्रत से चंद साल पूर्व हुई थी और जिस में ओस और ख़ज़रज के बहुत से लोग एक दूसरे के हाथ से मारे गए थे। इस जंग का वर्णन आते ही कुछ जोशीले लोगों के दिलों में पुरानी याद ताज़ा हो गई और गुज़शता अदावत के मंज़र आँखों के सामने फिर गए। नतीजा यह हुआ कि बाहम नोक झोंक और तान व तशनीअ से गुज़र कर नौबत यहां तक पहुंच गई कि इसी मजलिस में मुस्लमानों के अंदर तलवार खिच गई परंतु ख़ैर गुज़री कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को समय पर उस की इत्तला मिल गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम महाजरीन की एक जमाअत के साथ फ़ौरन मौक़ा पर तशरीफ़ ले आए और फ़रीक़ैन को समझा बुझा कर ठंडा किया और फिर मलामत भी फ़रमाई कि तुम मेरे होते हुए जाहिलियत का तरीख इख़तेयार करते हो और ख़ुदा की इस नेअमत की क़दर नहीं करते कि इस ने इस्लाम के ज़रीया तुम्हें भाई भाई बना दिया है। अंसार पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस नसीहत का ऐसा असर हुआ कि उनकी आँखों से आँसू जारी हो गए और वह अपनी इस हरकत से लज्जित हो कर एक दूसरे से पार्श्वस्थ हो गए।

जब जंग बदर हो चुकी और अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से मुस्लमानों को बावजूद उनकी किल्लत और बेसर-ओ-सामानी के क़ुरैश के एक बड़े जरार लश्कर पर नुमायां फ़तह दी और मक्का के बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोग ख़ाक में मिल गए तो मदीना के यहूदियों की हसद की आग भड़क उठी और इन्होंने मुस्लमानों के साथ खुल्लम खुल्ला नोक झोंक शुरू कर दी और मजलिसों में बरमला तौर पर कहना शुरू किया कि क़ुरैश के लश्कर को शिकस्त देना कौन सी बड़ी बात थी हमारे साथ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का मुक़ाबला हो तो हम बतादें कि किस तरह लड़ा करते हैं।

यहा तक कि एक मजलिस में इन्होंने ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह पर इसी किस्म के शब्दों कहे। इसलिए रिवायत आती है कि जंग बदर के बाद जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक दिन यहूदियों को जमा करके उनको नसीहत फ़रमाई और अपना दावा पेश करके इस्लाम की तरफ़ दावत दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस शांतिप्रिय और हमदर्दाना तक़रीर का यहूद के सरदारों ने इन शब्दों में जवाब दिया कि "हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तुम शायद कुछ क़ुरैश को क़त्ल करके मग़रूर हो गए हो। वे लोग लड़ाई के फ़न से नावाक़िफ़ थे। अगर हमारे साथ तुम्हारा मुक़ाबला हो तो तुम्हें पता लग जाए कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं। यहूद ने सिर्फ आम धमकी पर ही इकतेफ़ा नहीं किया बल्कि ऐसा मालूम होता है कि इन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल के मंसूबे भी शुरू कर दिए थे। क्योंकि रिवायत आती है कि जब इन दिनों में तलहा बिन बरा जो एक मुख़लिस सहाबी थे फ़ौत होने लगे तो उन्हों ने वसीयत की कि अगर मैं रात को मरूँ तो नमाज़ जनाज़ा के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला न दी जाए ताकि ऐसा न हो कि मेरी वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यहूद की तरफ़ से कोई हादिसा गुज़र जाए। उद्देश्य जंग बदर के बाद यहूद ने खुल्लम खुल्ला शरारत शुरू कर दी और चूँकि मदीना के यहूद में बनू केनका सब में ज़्यादा ताक़तवर और बहादुर थे इसलिए सबसे पहले उन्ही की तरफ़ से अह्द शिकनी शुरू हुई। इसलिए इतिहासकार लिखते कि ... मदीना के यहूदियों में से सबसे पहले बनू क़ैनक़ा ने इस मुआहिदा को तोड़ा जो उन के और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरमयान हुआ था और बदर के बाद इन्होंने बहुत सरकशी शुरू कर दी और बरमला तौर पर बुग़ज़ और हसद का इज़हार किया और अनुबंध को तोड़ दिया।

परंतु बावजूद इस किस्म की बातों के मुस्लमानों ने अपने आक़ा की हिदायत के अधीन हर तरह सब्र से काम लिया और अपनी तरफ़ से कोई पेश-दस्ती नहीं होने दी बल्कि हदीस में आता है कि इस अनुबंध के बाद जो यहूद के साथ हुआ था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ास तौर पर यहूद की दिलदारी का ख़्याल करते थे।

इसलिए एक दफ़ा एक मुस्लमान और एक यहूदी में कुछ इख़तेलाफ़ हो गया। यहूदी ने हज़रत मूसा की समस्त अनबया पर फ़ज़ीलत वर्णन की। सहाबी को उस पर ग़ुस्सा आया और इस ने इस यहूदी के साथ कुछ सख़्ती की और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अफ़ज़लुल रसूल वर्णन किया। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस वाक़िया की इत्तिला हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाराज़ हुए और इस सहाबी की निंदा फ़रमाई और कहा कि "तुम्हारा यह

काम नहीं कि तुम ख़ुदा के रसूलों की एक दूसरे पर फ़ज़ीलत वर्णन फिरो'' और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मूसा की एक जुज़वी फ़ज़ीलत वर्णन कर के इस यहूदी की दिलदारी फ़रमाई। परंतु बावजूद इस दलदाराना सुलूक के यहूदी अपनी शरारत में तरक़्क़ी करते गए और अंततः ख़ुद यहूद की तरफ़ से ही जंग का बायस पैदा हुआ और उनकी कलबी दुश्मनी उनके सीनों में समा न सकी और यह इस तरह पर हुआ कि एक मुस्लमान महिला बाज़ार में एक यहूदी की दुकान पर कुछ सौदा ख़रीदने के लिए गई। कुछ शरीर यहूदियों ने जो उस वक़्त इस दुकान पर बैठे हुए थे उसे निहायत औबाशाना तरीक़ पर छेड़ा और ख़ुद दुकानदार ने यह शरारत की कि इस औरत की अधोवस्त्र के निचले कोने को उसकी बे-ख़बरी की हालत में किसी कांटे वग़ैरा से उस की पीठ के कपड़े से टॉनिक दिया। नतीजा यह हुआ कि जब वह औरत उनके ओबाशाना तरीक़ को देखकर वहां से उठ कर लौटने लगी तो वह नंगी हो गई। इस पर इस यहूदी दूकानदार और इसके साथियों ने ज़ोर से एक क़हक़हा लगाया और हँसने लग गए।

मुस्लमान महिला ने शर्म के मारे एक चीख़ मारी और मदद चाही। इत्तेफ़ाक़ से एक मुस्लमान उस वक़्त क़रीब मौजूद था। वह लपक कर मौक़ा पर पहुंचा और बाहम लड़ाई में यहूदी दूकानदार मारा गया।

जिस पर चारों तरफ़ से इस मुस्लमान पर तलवारें बरस पड़ीं और वह ग़यूर मुस्लमान वहीं ढेर हो गया। मुस्लमानों को इस वाक़िया का इलम हुआ तो ग़ैरत-ए-क़ौमी से उनकी आँखों में ख़ून उतर आया और दूसरी तरफ़ यहूद जो इस वाक़िया को लड़ाई का बहाना बनाना चाहते थे हुजूम कर के इकट्ठे हो गए और एक बवाल की सूरत पैदा हो गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू केनका के सरदारों को जमा कर के कहा कि यह तरीक़ अच्छा नहीं। तुम इन शरारतों से बाज़ आ जाओ और ख़ुदा से डरो। उन्होंने बजाय उस के कि इज़हार-ए-अफ़सोस निंदा मत करते और माफ़ी के तालिब बनते, सामने से निहायत बदतमीज़ी करने वाले जवाब दिए और फिर वही धमकी दुहराई कि बदर की फ़तह पर घमंड न करो, जब हम से मुक़ाबला होगा तो पता लग जाएगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं। न चार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा की एक जमईयत को साथ लेकर बनू क़ेनक़ा के क़िलों की तरफ़ रवाना हो गए। अब यह आख़िरी मौक़ा था कि वह अपने कर्मो पर लज्जित होते परंतु वे सामने से जंग पर थे।

उद्देश्य जंग का ऐलान हो गया और इस्लाम और यहूदीयत की ताक़तें एक दूसरे के मुक़ाबिल पर निकल आएं।

इस ज़माना के दस्तूर के मुताबिक़ जंग का एक तरीक़ यह भी होता था कि अपने क़िलों में महफ़ूज़ हो कर बैठ जाते थे मुहासिरा हो जाता था और फ़रीक़े मुख़ालिफ़ क़िलों का मुहासिरा कर लेता था और मौक़ा मौक़ा पर गाहे-गाहे एक दूसरे के ख़िलाफ़ हमले होते रहते थे। यहाँ तक कि या तो मुहासरा करने वाली फ़ौज क़िला पर क़बज़ा करने से मायूस हो कर मुहासरा उठा लेती थी और यह महसूरीन की फ़तह समझी जाती थी और या महसूरीन मुक़ाबला की ताब न ला कर क़िला का दरवाज़ा खोल कर अपने आपको फ़ातेहीन के सपुर्द कर देते थे। इस अवसर पर भी बनू केनका ने यही तरीक़ इख़्तेयार किया और अपने क़िलों में बंद हो कर बैठ गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका मुहासरा किया और पंद्रह दिन तक बराबर मुहासिरा रहा।

अंततः जब बनू केनका का सारा ज़ोरा और ग़रूर टूट गया तो उन्हों ने इस शर्त पर अपने क़िलों के दरवाज़े खोल दिए कि उनके अम्वाल मुस्लमानों के हो जाएंगे। मगर उन की जानों और उन के अहलों आयल पर मुस्लमानों का कोई हक़ नहीं होगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस शर्त को मंज़ूर फ़र्मा लिया क्योंकि मूसा की शरीयत की दृष्टि से यह सब लोग वाजिब उल-क़तल थे। और मुआहदा की दृष्टि से उन लोगों पर मूसवी शरीयत का फ़ैसला ही जारी होना चाहिए था परंतु इस क़ौम का यह पहला जुर्म था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कृपालु दयालु तबीयत इंतिहाई सज़ा की तरफ़ जो एक आख़िरी ईलाज होता है इबतेदाई क़दम पर मायल नहीं हो सकती थी, लेकिन दूसरी तरफ़ ऐसे बद-अहद और मुआनिद क़बीला का मदीना में रहना भी एक मार-ए-आसतीन के पालने से कम न था। विशेषता जब कि ओस और ख़ज़रज का एक मुनाफ़िक़ गिरोह पहले से मदीना में मौजूद था और बैरूनी जानिब से भी समस्त अरब की मुख़ालिफ़त ने मुस्लमानों का नाक में दम कर था।

ऐसे हालात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही फ़ैसला हो सकता था कि बनू केनका मदीना से चले जाएं। यह सज़ा उन के जुर्म के मुक़ाबिल में और तथा ज़माना के हालात को मलहूज़ रखते हुए एक बहुत नरम सज़ा थी और दरअसल इस में सिर्फ ख़ुद हिफ़ाज़ती का पहलू ही मद्द-ए-नज़र था। अन्यथा अरब की ख़ाना--ब-दोश अक़्वाम के नज़दीक नक़ल-ए-मकान कोई बड़ी बात नहीं थी। विशेषता जब कि किसी क़बीला की जायदादें, ज़मीनों और बाग़ात की सूरत में न हों जैसा कि बनू क़ेनुक़ा की नहीं थीं। और फिर सारे के सारे क़बीला को बड़े अमन-ओ-अमान के साथ एक जगह छोड़ कर किसी दूसरी जगह जाकर आबाद होने का मौक़ा मिल जाए। इसलिए बनू केनका बड़े इतमेनान के साथ मदीना छोड़ कर शाम की तरफ़ चले गए। उनकी रवानगी के विषय में ज़रूरी एहतेमाम और निगरानी इत्यादि का काम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबी अबाद बिन सामित के सपुर्द फ़रमाया था जो उनके साथियों में से थे। इसलिए अबाद बिन सामित चंद मंज़िल तक बनू केनका के साथ गए और फिर उन्हें हिफ़ाज़त के साथ आगे रवाना करके वापिस लौट आए। माल-ए-ग़नीमत जो मुस्लमानों के हाथ आया वह केवल आलात-ए-हर्ब जंग के आलात जंग का सामान''और आलात आभूषण के पेशा पर था।

बनू केनका के विषय में कुछ रिवायतों में वर्णन आता है कि जब उन लोगों ने अपने क़िलों के दरवाज़े खोल कर अपने आपको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सपुर्द कर दिया तो उन की अनुबंध तौड़ने और बग़ावत और शरारतों की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरादा उन के जंगजू मर्दों को क़तल करवा देने का था, परंतु अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल रईस मुनाफ़ेक़ीन की सिफ़ारिश पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह इरादा तर्क कर दिया, ले-किन''(इस बात का कोई सबूत है) मुहक़्क़िक़ीन इन रवायात को सही नहीं समझते'' .. क्योंकि जब दूसरी रिवायत में यह सरीहन वर्णित है कि बनू क़ेनुक़ा ने इस शर्त पर दरवाज़े खोले थे कि उनकी और उन के परिजनों की जान बख़शी की जाएगी तो यह हरगिज़ नहीं हो सकता था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस शर्त को क़बूल कर लेने के बाद दूसरा तरीक़ इख़्तेयार फ़रमाते" और फिर भी क़तल करने की कोशिश फ़रमाते। इसलिए यह तो बिल्कुल ग़लत बात है।''जबकि बनू केनका की तरफ़ से जान बख़शी की शर्त का पेश होना इस बात को ज़ाहिर करता है कि वह ख़ुद ही समझते थे कि इन की असल सज़ा क़तल ही है परंतु वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रहम के तालिब थे और यह वादा लेने के बाद अपने क़िले का दरवाजा खोलना चाहते थे कि उनको क़तल की सज़ा नहीं दी जावेगी लेकिन जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी रहीम नफ़सी से उन्हें माफ़ कर दिया था परंतु मालूम होता है कि ख़ुदा तआला की नज़र में ये लोग अपनी बदआमाली और जरायम की वजह से अब दुनिया के पर्दे पर ज़िंदा छोड़े जाने के काबिल नहीं थे। इसलिए रिवायत में आता है कि जिस जगह ये लोग जलावतन हो कर गए थे वहां उन्हें अभी एक साल का अरसा भी नहीं गुज़रा था कि उन में कोई ऐसी बीमारी इत्यादि पड़ी कि सारे का सारा क़बीला उस का शिकार हो कर पैवंद-ए-ख़ाक हो गया।" (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए., पृष्ठ 457-461) ख़त्म हो गया। ग़ज़व--ए-बनू क़ेनुक़ा जुल हज्जा 2 हिज्री में हुआ था। (उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 461) बहरहाल हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो इस में अलमबरदार थे।

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत के बारे में पहले वर्णन हो चुका है कि यह अहद में शहीद हुए थे। इस की ख़बर अल्लाह तआला ने पहले ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को स्वपन के द्वारा दे दी थी। इसलिए हज़रत अंस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वप्न में देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैं ने स्वपन में देखा कि एक मेंढे का पीछा कर रहा हूँ और यह कि मेरी तलवार का किनारा टूट गया है तो मैं ने यह ताबीर की कि क़ौम के मेंढे को क़तल करूँगा अर्थात उनके सिपहसालार को और तलवार के किनारे की ताबीर मैं ने यह की कि मेरे ख़ानदान का कोई आदमी है। फिर हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद कर दिया गया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तलहा को क़तल किया जो कि मुशरेकीन का अलमबरदार था। (मस्तदरक अल्सहीहीन, भाग 5 पृष्ठ 1834 किताब मारेफ़तुल सहाबा, हदीस नंबर 4896 مطبوعہ مکتبہ نزار الباز ریاض)

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो का मुसला किया गया था, शक्ल बिगाड़ी गई थी। नाक कान काटे गए थे। उनका पेट चाक किया गया था। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी यह हालत देखी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शदीद दुख हुआ और फ़रमाया अगर अल्लाह ने मुझे क़ुरैश पर कामयाबी दी तो मैं उनके तीस आदमियों को मुसला करूँगा। जबकि एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कसम खा कर फ़रमाया कि उनके सत्तर आदमियों को

मुसला करूँगा जिस पर यह आयत नाज़िल हुई कि وَاِنۡ عَاقَبۡتُمۡ فَعَاقِبُوۡا بِمِثۡلِ مَا عُوۡقِبۡتُمۡ بِهٖ ؕ وَلَئِنۡ صَبَرۡتُمۡ لَهُوَ خَيۡرٌ لِّلصّٰبِرِيۡنَ (अल् नहल : 127) और अगर तुम सज़ा दो तो उतनी ही सज़ा दो जितनी तुम पर ज़्यादती की गई थी और अगर तुम सब्र करो तो यक़ीनन सब्र करने वालों के लिए यह बेहतर है। इस पर रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सब्र करेंगे और अपनी किस्म का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया।

(مستدرك على الصحيحين للحاكم، جزء 5، صفحه 1832، كتاب معرفة الصحابه، حديث نمبر 4890، مطبوعه مكتبه نزار الباز رياض)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कल रात जब मैं जन्नत में दाख़िल हुआ, यह नज़ारा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा, तो मैंने देखा कि जाफ़र फ़रिश्तों के साथ परवाज़ कर रहे हैं जबकि हमज़ा तख़्त पर टेक लगाए हुए हैं।

(مستدرك على الصحيحين للحاكم، جزء 5، صفحه 1831، كتاب معرفة الصحابه، حديث 4887، مطبوعه مكتبه نزار الباز رياض)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अहद के दिन हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के पास से गुज़रे। उनका नाक और कान काटे गए थे और मुसला किया गया था। इस पर फ़रमाया अगर मुझे सफ़िया के दुख का ख़्याल न होता तो मैं उनको यूंही छोड़ देता यहां तक कि अल्लाह उनको परिंदों और दरिंदों के पेटों से ही उठाता। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो को एक चादर में कफ़न दिया गया। (مستدرك على الصحيحين للحاكم، جزء 5، صفحه 1831، كتاب معرفة الصحابه، حديث 4887، مطبوعه مكتبه نزار الباز رياض)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की लाश को देख कर जज़बात का इज़हार और न केवल ख़ुद सब्र का नमूना दिखाना बल्कि हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की बहन और अपनी फूफी को भी इसका पाबंद करना जिसका कुछ वरना पहले भी हो चुका है। फिर नोहा करने वाली अंसारी औरतों को नोहा करने से रोकने का वाक़िया है। इस वाक़िया को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे अपनी ख़िलाफ़त से पहले के जलसा सालाना की एक तक़रीर में वर्णन फ़रमाया था, वह मैं वर्णन कर देता हूँ जिस से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुलक़-ए-अज़ीम का भी पता लगता है। बहरहाल यह मुनासिब है कि इस वाक़िया को यहां वर्णन किया जाए। पहले तो मुख़्तसेरन हदीसों के हवाले से वर्णन हो रहा है।

फ़रमाते हैं कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत हमज़ा रज़िय-ल्लाहु अन्हो से जो प्यार था उस का इज़हार इन शब्दों से होता है जो अहद की शाम आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश पर खड़े हो कर फ़रमाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हमज़ा! मुझे आज जो ग़ुस्सा है और जो तकलीफ़ तेरे मक़तल पर खड़े हो कर पहुंची है अल्लाह आइन्दा कभी मुझे ऐसी तकलीफ़ नहीं दिखाएगा। इस वक़्त आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफी हज़रत साफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की बहन भी यह ख़बर सुनकर वहां चली आएं तो इस ख़ौफ़ से कि कहीं सब्र का दामन उनके हाथ से न छूट जाए पहले तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें नाश देखने की इजाज़त नहीं दी लेकिन जब उन्होंने सब्र का वादा किया तो इजाज़त फ़र्मा दी। बहरहाल आप हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के मक़तल पर हाज़िर हुईं और शेर-ए-ख़ुदा और शेर-ए-रसूल अपने प्यारे भाई की लाश इस हालत में सामने पड़ी देखी कि ज़ालिमों ने सीना फाड़ कर कलेजा निकाल लिया था और चेहरे के नुक़ूश भी बुरी तरह बिगाड़ दिए थे। हरचंद कि सीने ग़म से बैठा जाता था परंतु सफ़िया अपने सब्र के वादे पर क़ायम रहें और एक कलिमा बेसबरी का मुँह से निकलने न दिया लेकिन आँसूओं पर किसे इख़्तियार था। इन्ना लिल्लाह पढ़ा और रोते-रोते वहीं बैठ गईं। हालत यह थी कि ग़म-ज़दा ख़ामोश आँखों से आँसूओं की झड़ी लगी हुई थी। रावी कहता है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी पास बैठ गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखों से भी बे-इख़्तयार आँसू जारी हो गए। जब हज़रत साफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के आँसू मद्धम पड़ते तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आँसू भी मद्धम पड़ जाते। जब हज़रत साफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के आँसू तेज़ होते तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आँसू भी तेज़ हो जाते। चंद मिनट उसी हालत में गुज़रे। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अहल-ए-बैत का नोहा उन चंद ख़ामोश आँसूओं के सिवा और कुछ नहीं था और यही सुन्नते नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में इस हाल में दाख़िल हुए कि समस्त मदीना शोक का घर बना हुआ था और घर-घर से शुहदा-ए अहद की याद में रोने वालों की आवाज़ें बुलंद हो रही थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुना तो बड़े दर्द से फ़रमाया। हमज़ा का तो कोई रोने वाला नहीं। हाँ हमज़ा का रोने वाला हो भी कौन सकता है कि अहल-ए-बैत को तो सुबह शाम सब्र की तलक़ीन हुआ करती थी। हुज़ूर के इस दर्द भरे फ़िक़रे को जब कुछ अंसार ने सुना तो तड़प उठे और घरों की तरफ़ दौड़े और बीबियों को हुक्म दिया कि हर दूसरा मातम छोड़ दो और हमज़ा पर मातम करो। देखते देखते हर तरफ़ से हमज़ा के लिए आह-ओ-बका का एक शोर बुलंद हुआ और हर घर हमज़ा का शोक करने वाला बन गया। अंसार बीबियाँ नोहा को पढ़ते हुए और आँसू बहातें हुए आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रहमत कदा पर भी इकट्ठी हो गईं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शोर सुनकर बाहर देखा तो अंसार बीबियों की एक भीड़ लगी हुई थी। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी हमदर्दी पर उनको दुआ दी और शुक्रिया अदा किया लेकिन साथ ही फ़रमाया कि मर्दों पर नोहा करना जायज़ नहीं। अतः उस दिन से नोहा की रस्म बंद कर दी गई। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों पर हमारी जानें निसार हों। किस शान उच्च आचरण थे जो रूहानियत के आसमान से हमें दीन सुखाने के लिए नाज़िल हुए। कैसा साहब-ए-बसीरत और बुद्धिमान था ये नसीहत करने वाला जिसकी नज़र इन्सानी फ़ितरत के पाताल तक गुज़र जाती थी। अगर उस वक़्त आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अंसार बीबियों को नोहा करने से मना फ़र्मा देते जब वह अपने शहीदों का नोहा कर रही थीं तो शायद कुछ दिलों पर यह कष्टदायक था और यह सब्र उन के लिए सब्र-आज़मा हो जाता लेकिन देखो! कैसे हकीमाना अंदाज़ में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले उनके मातम का रुख अपने चचा हमज़ा की ओर फेरा। फिर जब नोहा से मना फ़रमाया तो गोया अपने चचा के नोहा से फ़रमाया।

अल्लाह का इंतेख़ाब अल्लाह का इंतेख़ाब है। देखो अपनी मख़लूक़ के लिए किस शान का नसीहत करने वाला भेजा अल्लाह तआला ने जो इन्सानी फ़ितरत की बारीकियों और लताफ़तों से ख़ूब अवगत था और अपने ग़ुलामों के छोटे छोटे जज़बात का कैसा ख़्याल रखने वाला था।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इन हसीन अदाओं पर जब नज़र पड़ती है तो दिल सीने में उछलता है और फ़रेफ़्ता होने लगता है और बे-इख़्तियार दिल से यह आवाज़ उठती है कि हमारी जानें, हमारे अम्वाल, हमारी औलादें तेरे क़दमों के पर निसार। हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! तुझ पर लाखों दुरूद और करोड़ों सलाम। हे वे कि जिसके हुस्न-ओ-एहसान का समुंद्र बे--किनारा था और ला-फ़ानी था। हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुझ पर लाखों दुरूद और करोड़ों सलाम। ज़मीन वा समान के वाहिद और यगाना ख़ुदा की क़सम ज़मीन-ओ-आसमान में इस की समस्त मख़लूक़ में तो वाहिद-ओ--यगाना है। तुझ सा न कोई था न है न होगा।

(ماخوذ از خطابات طاهر، تقارير جلسه سالانه قبل از خلافت فرموده سيدنا حضرت خليفة المسيح الرابعؒ، صفحه 364 تا 366، طاهر فاؤنڈيشن 2006ء)

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस उस्वा का भी वर्णन हो गया। यही यहां समाप्त है।

अब चंद जो दूसरे (सहाबा) हैं उनका वर्णन इन शा अल्लाह मैं आइन्दा करूँगा।

परसों नया वर्ष भी इन शा अल्लाह शुरू हो रहा है। दुआएं करें कि अल्लाह तआला नए साल में बरकात लेकर आए और उसकी सारी बरकात से हमें नवाज़े। जमाअत के लिए भी हर लिहाज़ से यह बाबरकत हो। दुश्मन के समस्त मन्सूबों को अल्लाह तआला ख़ाक में मिला दे और दुनिया में फैली हुई जमाअतों को अल्लाह तआला पहले से बढ़ कर अपने जन्म के उद्देश्य को पूरा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इसी तरह उमूमी तौर पर दुनिया के लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला उनको जंगों से बचाए। हालात ख़तरनाक से ख़तरनाक होते जा रहे हैं और तबाही मुँह खोले खड़ी है। कुछ पता नहीं हर एक अपने मुफ़ादात चाहता है। अल्लाह तआला ही रहम फ़रमाए

और अपने मज़लूम भाईयों के लिए भी बहुत दुआएं करें कि अल्लाह तआला आइन्दा साल में हर किस्म के ज़ुलम और अत्याचार से जमाअत के अहमदिया को सुरक्षित रखे।

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

मसला ऐसा है जो ख़ास इल्हाम के मातहत क़ायम किया गया है। और वसीयत का मसला दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने का एक अमली सबूत है। दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने का अह्द एक इक़रार था। इस के विषय में मोमिन क्या करता। कई लोग तो इस इक़रार को पूरा करने के लिए बड़ी बड़ी क़ुर्बानियां करते और कई यह इक़रार करके ख़ामोश हो जाते। फिर कई ऐसे होते हैं जो चाहते कि दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करें मगर उस के लिए राह नहीं पाते और उन्हें मालूम नहीं होता कि क्या करें? फिर बीसियों थे जिन्होंने इस इक़रार को पूरा किया और बीसियों ऐसे थे जो हैरान थे कि क्या करें? फिर जो इक़रार को पूरा करने की कोशिश कर रहे थे वह नहीं जानते थे कि उनका इक़रार पूरा होता है या नहीं।

तब ख़ुदा तआला की रहमत जोश में आई और उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीया बताया कि जो लोग यह मालूम करना चाहते हैं कि उनका इक़रार पूरा हुआ या नहीं उनके लिए यह वसीयत का तरीक़ है इस पर अमल करने से वह अपने इक़रार को पूरा कर सकते हैं क्योंकि वसीयत में शर्त है कि

"ख़ुदा तआला का इरादा है कि ऐसे कामिल ईमान एक ही जगह दफ़न हों" ता आइन्दा नसलें एक ही जगह उनको देखकर अपना ईमान ताज़ा करें।"

अतः यह किस तरह हो सकता है कि कोई शख़स हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वर्णन फ़र्मूदा तरीक़ पर वसीयत करे और इस पर क़ायम रहे परंतु कामिल ईमान न हो। तो वे लोग जिनके दिल में अशान्ति थी और वे इस वजह से बेचैन थे कि ख़बर नहीं उनका इक़रार पूरा हुआ है या नहीं उनके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला के इल्हाम के अधीन ये रख दिया कि वह वसीयत करें। (ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 11 पृष्ठ 370)

जो शख़्स वसीयत करता है ख़ुदा उस को मुत्तक़ी बिना भी बना देता है

तीसरे वसीयत का मसला है। यह ख़ुदा ने हमारे लिए एक निहायत ही अहम चीज़ रखी है। और इस ज़रीया से जन्नत को हमारे क़रीब कर दिया है। अतः वे लोग जिनके दिल में ईमान और इख़लास तो है मगर वह वसीयत के बारे में सुस्ती दिखला रहे हैं, में उन्हें तवज्जा दिलाता हूँ कि वह वसीयत की तरफ़ जल्दी बढ़ें। उन्हें सुसतियों की वजह से देखा जाता है कि बड़े बड़े मुख़लिस फ़ौत हो जाते हैं। उनके आजकल करते करते मौत आ जाती है फिर दिल कुढ़ता है और हसरत पैदा होती है कि काश यह भी मख़लसीन के साथ दफ़न किए जाते मगर दफ़न नहीं किए जा सकते। सब के दिल उनकी मौत पर महसूस कर रहे होते हैं कि वह मुख़लिस थे और इस काबिल थे कि दूसरे मख़लसीन के साथ दफ़न किए जाते मगर उनकी ज़रा सी ग़फ़लत और ज़रा सी सस्ती इस अमर में हायल हो जाती है। फिर बीसियों हमारी जमाअत में ऐसे लोग मौजूद हैं जो दसवां हिस्सा से ज़्यादा चंदा देते हैं मगर वह वसीयत नहीं करते। ऐसे दोस्तों को भी चाहिए कि वसीयत कर दें बल्कि ऐसे दोस्तों के लिए तो कोई मुश्किल है ही नहीं। फिर कई ऐसे हैं जो पाँच पैसे या छः पैसे फ़ी रुपया चंदा दे रहे होते हैं और सिर्फ दमड़ी या धेला उन्हें वसीयत से महरूम कर रहा होता है। ग़रज़ थोड़े थोड़े पैसों के फ़र्क़ की वजह से हमारी जमाअत के हज़ार-हा आदमी वसीयत से महरूम हैं और जन्नत के क़रीब होते हुए इस में दाख़िल नहीं होते ...

अतः जिस क़दर हो सके दोस्तों को चाहिए कि वह वसीयत करें और मैं यक़ीन रखता हूँ कि वसीयत करने से ईमानी तरक़्क़ी ज़रूर होती है। जब अल्लाह तआला का वादा है कि वह इस ज़मीन में यक़ीन रखता हूँ कि वसीयत करने से ईमानी तरक़्क़ी ज़रूर होती है। जब अल्लाह तआला का वादा है कि वह इस ज़मीन में मुत्तक़ी को दफ़न करेगा तो जो शख़्स वसीयत करता है उसे मुत्तक़ी बना भी देता है । (ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 13 पृष्ठ 563)

जो भी वसीयत करेगा अगर वह एक वक़्त में जन्नती नहीं तो भी वह जन्नती बनादिया जाएगा

तीसरा फ़र्ज़ जिसकी तरफ़ मैं जमाअत के दोस्तों को तवज्जा दिलाता हूँ, वह वसीयत का मसला है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है कि वसीयत ईमान की आज़माईश का ज़रीया है। और वह उस के ज़रीया देखना चाहता है कि कौन सच्चा मोमिन है और कौन नहीं .. वसीयत ऐसी चीज़ है जो यक़ीनी तौर पर ख़ुदा का मुक़र्रब होना ज़ाहिर करती है। इस में शुबा नहीं कि मोमिन ही वसीयत करता है लेकिन इस में भी शुबा नहीं कि अगर किसी शख़्स में कुछ कमज़ोरियाँ भी पाई जाती हों तो जब वह वसीयत करे तो अल्लाह तआला अपने इस वादे के मुताबिक़ कि बहिश्ती मक़बरा में सिर्फ जन्नती ही मदफ़ून होंगे, उसके आमाल को दरुस्त कर देता है। अतः वसीयत इस्लाह-ए-नफ़्स का ज़बरदस्त ज़रीया है क्योंकि जो भी वसीयत करेगा अगर वह एक वक़्त में जन्नती नहीं तो भी वह जन्नती बना दिया जाएगा और अगर आमाल उस के ज़्यादा ख़राब हैं तो ख़ुदा उसके नफ़ाक़ को ज़ाहिर करके उसे वसीयत से अलग कर देगा।

(ख़ुतबात-ए- भाग 13 पृष्ठ 562)

वसीयत का उद्देश्य

जब वसीयत का निज़ाम मुकम्मल होगा तो सिर्फ तब्लीग़ ही इस से नहीं होगी बल्कि इस्लाम के मंशा के मातहत हर फ़र्द बशर की ज़रूरत को इस से पूरा किया जाएगा और दुख और तंगी को दुनिया से मिटा दिया जाएगा इन शा अल्लाह। यतीम भीख नहीं माँगेगा, बेवा लोगों के आगे हाथ नहीं फैलाएगी, बे सामान परेशान नहीं फिरेगा क्योंकि वसीयत बच्चों की माँ होगी, जवानों काबाप होगी, औरतों का सुहाग होगी, और जबर के बग़ैर मुहब्बत और दिल्ली ख़ुशी के साथ भाई भाई की उसके ज़रीया से मदद करेगा और उस का देना बे बदला नहीं होगा बल्कि हर देने वाला ख़ुदा तआला से बेहतर बदला पाएगा। न अमीर घाटे में रहेगा न ग़रीब, न क़ौम क़ौम से लड़ेगी बल्कि उसका एहसान सब दुनिया पर वसीअ होगा।

(निज़ाम नौ, अनवारुल उलूम भाग 16 पृष्ठ 600)

वसीयत का माल सारी दुनिया के लिए ख़र्च होगा

जो रुपया अहमदियत के ज़रीया इकट्ठा होगा वह किसी एक मुल्क पर ख़र्च नहीं किया जाएगा बल्कि सारी दुनिया के ग़रीबों के लिए ख़र्च किया जाएगा। वह भारत के गरबा के भी काम आएगा, वह चीन के गरीबों के भी काम आएगा, वह जापान के गरीबों के भी काम आएगा, वह अफ़्रीक़ा के गरबा के भी काम आएगा, वह अरब के गरीबों के भी काम आएगा, वह इंग्लि-स्तान, अमरीका, इटली, जर्मनी और रूस के गरीबों के भी काम आएगा।

(निज़ाम नौ, अनवारुल उलूम भाग 16 पृष्ठ 593)

वसीयत करने वाले निज़ाम नौ की बुनियाद रखने वाले

अतः हे दोस्तो जिन्होंने वसीयत की हुई है समझ लो कि आप लोगों में से जिस जिसने अपनी अपनी जगह वसीयत की है उसने निज़ाम नौ की बुनियाद रख दी है। इस निज़ाम नो क़ी जो उसकी और उस के ख़ानदान की हिफ़ाज़त का बुनियादी पत्थर है। (निज़ाम नौ, अनवारुल उलूम भाग 16 पृष्ठ 601)

अल्लाह तआला सभी अहमदियों को जल्द से जल्द इस बाबरकत निज़ाम में शमूलीयत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

(मंसूर अहमद मसरूर)

★ ★ ★

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT
AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ
Sohail Ahmad Nasir and Family
Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद की पृष्ठभूमि, महत्तव और मिस्दाक़
(तहरीरात हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोशनी में)

(सय्यद बशारत अहमद , सदर मुहल्ला बाबाबुल अमन, क़ादियान)

सर्वशक्तिमान कृपालु ख़ुदा ने इस ज़माने में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस्लाम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त के जो निशान अता फ़रमाए उनमें एक बहुत बड़ा निशान भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद है। इस भविष्यवाणी का पृष्ठभूमि क्या था? इस का कितना महत्तव और अज़मत है? और इस भविष्यवाणी से कौन मुराद है? इन समस्त सवालों के जवाबात और तफ़सील हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरात में मौजूद हैं।

भविष्यवाणी की पृष्ठभूमि

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम की महान किताब "बराहीन-ए-अहमदिया" के मंज़र-ए-आम पर आने से एक तरफ़ आलम-ए-इस्लाम ख़ुशियों की लहरों में था और दूसरी तरफ़ मुख़ालेफ़ीन-ए--इस्लाम में एक खलबली मच गई थी। हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने इसी किताब में दुनिया को संबोधित कर के यह ख़ुशख़बरी दी

"ख़ुदावंद तआला ने इस विनीत बंदे को इस ज़माना में पैदा करके और सद-हा निशान आसमानी और परोक्ष की भविष्यवाणी और मआरिफ़-ओ-हक़ायक़ प्रदान फ़र्मा कर और सदहा दलायल अक़लिया पर इलम बख़श कर यह इरादा फ़रमाया है कि ताकि क़ुरआन की शिक्षा को हर क़ौम और हर मुल्क में प्रकाशित और प्रचलित फरमावे और अपनी हुज्जत उन पर पूरी करे।''

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी खाजाएन 1 पृष्ठ 596 हाशिया दर हाशिया)

इस भविष्यवाणी का ऐलान आप ने न सिर्फ भारत में किया बल्कि पुस्तकों के माध्यम से बैरून अज़ भारत भी इस पैग़ाम को पहुंचाया और अपनी ताक़त के मुताबिक़ जहां तक हो सका मुख़ालेफ़ीन इस्लाम पर समझने की अंतिम प्रयास को पूर्ण किया। अब जबकि इस्लाम की हक़्क़ानियत और सदाक़त का डंका संसार में बज रहा था और हर एक मुख़ालिफ़ को उसके ज़िंदा निशानात देखने की दावत-ए--आम थी कि इसी दौरान 1885 ई. में साहूकार और दीगर हिंदू साहिबान क़ादियान का एक ख़त हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में मौसूल हुआ जिसमें यह मुतालिबा किया गया था कि

"जिस हालत में आपने लंडन और अमरीका तक इस मज़मून के रजिस्ट्री शूदा ख़त भेजे हैं कि जो तालिब सादिक़ हो और एक साल तक हमारे पास आकर क़ादियान में ठहरे तो ख़ुदाए तआला उस को ऐसे निशान इस्लाम की सच्चाई के ज़रूर दिखाएगा कि जो इन्सान की शक्ति से बाला तर हों। सो हम लोग जो आपके हमसाया और एक शहरी हैं, लंदन और अमरीक वालों से ज़्यादा-तर हक़दार हैं लेकिन हम लोग ऐसे निशानों पर किफ़ायत करते हैं जिनमें ज़मीन और आसमान के ज़ेर-ओ-ज़बर करने की हाजत नहीं और न प्राकृतिक के क़वानीन को तोड़ने की कुछ ज़रूरत। हाँ ऐसे निशान ज़रूर चाहिऐं जो इन्सानी ताक़तों से बाला तर हों जिन से यह मालूम हो सके कि वह सच्चा और पाक परमेश्वर बिला वजह आपकी रास्त बाज़ी दीनी के ऐन मुहब्बत और कृपा की राह से आपकी दुआओं को क़बूल कर लेता है और क़बूलियत--ए-दुआ से पूर्व पूरे होने की इत्तिला बख़्शता है या आपको अपने कुछ इसरार ख़ास्सा पर अवगत करता है और बतौर भविष्यवाणी इन गुप्त भेदों की ख़बर आपको देता है या ऐसे अजीब तौर से आपकी मदद और हिमायत करता है जैसे वह क़दीम से अपने बर्गज़ीदों और मुक़र्रिबों और भगतों और ख़ास बंदों से करता है .. और वर्ष जो निशानों के दिखाने के लिए निर्धारित किया गया है वह इब्तदाए सितंबर 1885 ई. से शुमार किया जावेगा जिसका अंत सितंबर 1886 ई. के अख़ीर तक हो जाएगा।

(मजमूआ इश्तेहारात, भाग प्रथम, पृष्ठ 92)

इस ख़त के आख़िर पर दस हिंदू साहिबान के नाम दर्ज हैं। इस ख़त के प्राप्त होने पर हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने जो उत्तर तहरीर फ़रमाया

"आप साहिबों का इनायत नामा जिसमें आपने आसमानी निशानों के देखने के लिए निवेदन किया है, मुझ को मिला। चूँकि यह ख़त सरासर इन्साफ़-ओ-हक़ जोई पर आधारित है और एक जमाअत तालिब हक़ ने जो पूरे दस हैं इस को लिखा है इस लिए धन्यवाद सहित इस के मज़मून को क़बूल स्वीकार करता हूँ और आपसे अह्द करता हूँ कि अगर आप साहिबान इन वादों के पाबंद रहेंगे कि जो अपने ख़त में आप लोग कर चुके हैं तो ज़रूर ख़ुदाए क़ादिर के समर्थन और सहायता से एक साल तक कोई ऐसा निशान आपको दिखलाया जाएगा जो इन्सानी ताक़त से बालातर हो। यह विनीत आप साहिबों के इन्साफ़ से पूर्ण ख़त के पढ़ने से बहुत ख़ुश हुआ।''

(मजमूआ इश्तेहारात, भाग प्रथम, पृष्ठ 95)

जैसा कि हज़रत अकदस के इस इश्तेहार से ज़ाहिर है आप हिंदूओं के इस ख़त से ख़ुश थे कि इस्लाम की सदाक़त में निशान का मुतालिबा किया गया है इसलिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस मुतालिबा को लेकर उसी वाहिद-ओ-ला शरीक ख़ुदा की तरफ़ तवज्जा की जिसकी ताईद-ओ-नुसरत के यक़ीनी वादों से सूचना पाकर आप इस्लाम की सच्चाई का इस दौर में ऐलान किया था, और निहायत दर्द और पीढ़ा और विनती से इस निशान के लिए दुआएं कीं। आप किसी भी किस्म के ख़लल से बचने और दुआओं में यकसूई और पैदा करने के लिए ऐकांत धारण करने का इरादा किया और इस उद्देश्य के लिए अपने घर-बार और रिश्तेदारों से दूर होशयारपुर में एतेकाफ़ फ़रमाया और पूरे दर्द और ध्यान के साथ अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआएं कीं। ख़ुदाए रहीम-ओ-करीम ने आप की इस तड़प और इस्लाम की सदाक़त के लिए इज़तेराब को देखकर आपको तसल्ली दी और आपकी दुआओं को शरफ़ क़बूलीयत बख़्शते हुए मुस्लेह मौऊद की अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी आपको फ़रमाई।

भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद पर हिंदूओं और मुस्लमानों के कुछ हलक़ों की तरफ़ से आरोप भी किए गए लेकिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने बज़रीया इश्तेहार पत्रावार उनके जवाबात दिए। हज़रत अकदस की इस भविष्यवाणी के बाद एक लड़की की पैदाइश हुई इसलिए हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम पर एतराज़ात की नौईयत यही थी कि भविष्यवाणी लड़के की थी और पैदा लड़की हुई। लेकिन इस से ज़्यादा इस बात का शोर डाला गया कि घर में लड़का पैदा हो जाना क्या निशान हुआ? शादी के बाद बच्चे होना यही क़ानून-ए-क़ुदरत है इत्यादि। लेकिन भविष्यवाणी पर नज़र डालने से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने नौ साल की मीयाद के अंदर अंदर एक महान बेटे की पैदाइश की ख़बर दी थी उस के इलावा दीगर औलाद की पैदाइश की नफ़ी नहीं थी कि मौऊद बेटे के इलावा और कोई बच्चा पैदा नहीं होगा, तथा शादी के बाद औलाद होना क़ानून-ए-क़ुदरत ज़रूर है लेकिन कोई भी फ़र्द अपने विषय में समय से पूर्व उस का हतमी दावा नहीं कर सकता यहां तो न केवल बेटे की पैदाइश के इलाही वादे का हतमी ऐलान था बल्कि महान और अज़ीम और बेशुमार ख़ूबियों वाले बेटे का ऐलान था जिसके ज़रीये हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी के बाद दीन-ए-इस्लाम की अज़ीम ख़िदमत और इस के दुनिया में फैलने का भी वर्णन था

बशीर अव्वल का जन्म और हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की वज़ाहत

पहली बेटी की पैदाइश के बाद 7 अगस्त 1887 ई. को हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम के घर में बेटा पैदा हुआ जिसका नाम बशीर रखा गया। साहिबज़ादा बशीर अव्वल के जन्म से क़बल उसके गर्भ के दौरान ही हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने एक विज्ञापन 8 अप्रैल 1886 ई. में इस बात का निर्णय किया कि

"यह ज़ाहिर नहीं किया गया कि जो अब पैदा होगा यह वही लड़का है या वह किसी और वक़्त में नौ बरस के अरसा में पैदा होगा।"

(मजमूआ इश्तेहारात, भाग प्रथम, पृष्ठ 117)

फिर साहिबज़ादा बशीर अव़्वल की पैदाइश पर मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के यह पूछने पर कि क्या यह नौ मौलूद वही है जिसका भविष्यवाणी मैं वादा है? हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने जो उत्तर फ़रमाया

"नए बच्चे की विषय में मैंने किसी अख़बार में यह मज़मून नहीं छपवाया कि यह वही लड़का है जिसकी तारीफ़ 20 फ़रवरी 1886 ई. के इश्तेहारात में मुंदरज है।"

(मकतूबाते अहमद, भाग प्रथम, पृष्ठ 306 न्यू ऐडीशन 2008 ई. क़ादियान)

हज़रत अकदस की नज़र में भविष्यवाणी का महत्तव और महानता

इसी ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के वादों और भविष्यवाणियों पर मुश्तमिल एक रिसाला बनाम "सिराज-ए-मुनीर" लिखने

का इरादा फ़रमाया जिसमें इलावा और भविष्यवाणियों के मौलूद बेटे की भविष्यवाणी का वर्णन करना भी मक़सूद था। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम के नाम एक ख़त में यह तजवीज़ दी कि इस मौऊद बेटे की भविष्यवाणी को रिसाला सिराज-ए-मुनीर में दर्ज न किया जाए। हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने जो उत्तर तहरीर फ़रमाया और जो आप विनीत ने पहले ख़त में वर्णन फ़रमाया था कि भविष्यवाणी बेटे की को रिसाला में दर्ज करना मुनासिब नहीं, मैंने अब तक आपकी ख़िदमत में इस वजह से इस का उत्तर नहीं लिखा कि ख़ुदा तआला ने इस मुआमला में मेरी राय को आपकी राय से मुत्तफ़िक़ नहीं किया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मुझको मिंजानिब उल्लाह इस बारे में ऐलान-ओ-इशाअत का हुक्म है और जैसा कि मेरे आक़ा मुहसिन ने मुझे इरशाद फ़रमाया है मैं वही काम करने के लिए मजबूर हूँ। मुझे इस से कुछ काम नहीं कि दुनयावी मस्लिहत का क्या तक़ाज़ा है और न मुझे दुनिया की इज़्ज़त-ओ-ज़िल्लत से कुछ सरोकार है और न उस की कुछ पर्वा और न उस का कुछ अंदेशा है। मैं जानता हूँ कि जिन बातों के शाय करने के लिए मैं मामूर हूँ हर-चंद ये बदज़नी से भरा हुआ ज़माना उन को कैसी ही तहक़ीर की निगाह से देखे लेकिन आने वाला ज़माना इस से बहुत सा फ़ायदा उठाएगा।

(मकतूबाते अहमद,भाग प्रथम, पृष्ठ 304-305 न्यू एडिशन)

हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की इस इस्तिक़ामत और इस्तिक़लाल को देख कर और यह जान कर कि आप अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी को निकालने पर राज़ी नहीं, मौलवी-साहब ने एक और ख़त अरसाल किया और लिखा कि ऐसी भविष्यवाणियों से इस्लाम को नफ़ा नहीं और मुस्लमानों का अपमान होगा। और मौलवी--साहब ने इस हतक से बचने के लिए इस दफ़ा यह मश्वरा दिया कि सिराज-ए-मुनीर छपवाने का इरादा ही फ़िलवक़्त छोड़ दिया जाए। हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने उत्तर फ़रमाया

"आप फ़रमाते हैं कि सिराज-ए-मुनीर में इसी तौर की भविष्यवाणी हैं तो मेरी राय है कि सिराज-ए-मुनीर का तौबा कराना स्थगित रखा जाए क्योंकि ऐसी किताब से मुस्लमानों का कमाल हतक होगा। इस के उत्तर में अर्ज़ करता हूँ कि निसंदेह सिराज--ए-मुनीर में इसी तरह की भविष्यवाणी हैं बल्कि सबसे बढ़कर यही भविष्यवाणी है परंतु दूसरा फ़िक़रा आपका कि ऐसी भविष्यवाणियों से मुस्लमानों का कमाल हतक होगा, फ़िरासत सहीहा पर आधारित नहीं है और आपका यह कथन कि "मुझे सिर्फ यह ख़्याल है कि मुस्लमानों की ज़्यादा हतक न हो और उनका माल नाहक़ बर्बाद न हो।" आपके इस क़ौल से साबित होता है कि बेटा पैदा होने से मुस्लमानों की किसी क़दर हतक हो गई है और आइंदा सिराज-ए-मुनीर के छपने से इस से ज़्यादा होगा। अतः मैं कहता हूँ कि अगर भविष्यवाणियों का सच्चाई से ज़हूर में आजाना मुस्लमानों के लिए मूजिब-ए-हतक है तो जिस क़दर यह हतक हो उतना ही कम है।"

(मकतूबाते अहमद, भाग प्रथम, पृष्ठ 308-309 न्यू एडीशन 2008 ई. क़ादियान)

फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपने विज्ञापन तिथि 22 मार्च 1886 ई. में कुछ मोतरिज़ीना का उत्तर देते हुए फ़रमाते हैं :

"एक नादान भी समझ सकता है कि मफ़हूम भविष्यवाणी का अगर एक साथ देखा जाए तो ऐसी खुशखबरी ताक़तों से बाला तर है जिसके निशान-ए-इलाही होने में किसी को संदेह नहीं रह सकता और अगर संदेह हो तो ऐसी किस्म की भविष्यवाणी जो ऐसे ही निशान पर मुश्तमिल हो पेश करे। इस जगह आँखें खोल कर देख लेना चाहिए कि यह केवल भविष्यवाणी ही नहीं बल्कि एक अज़ीमुश्शान निशान आसमानी है जिसको ख़ुदाए करीम ने हमारे नबी करीम रऊफ़-ओ-रहीम मुस्तफ़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त-ओ-अज़मत ज़ाहिर करने के लिए ज़ाहिर फ़रमाया है और वास्तव मे यह निशान एक मुर्दा के ज़िंदा करने से सदहा दर्जा आला ओ-अकमल-ओ-अफ़ज़ल-ओ-अतम है .. इस जगह अल्लाह तआला के अहसान और बरकत से हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो वसल्लम ख़ुदावंद करीम ने इस आजिज़ की दुआ को क़बूल करके ऐसी बा बरकत रूह भेजने का वादा फ़रमाया जिसकी ज़ाहिरी और बातिनी बरकतें समस्त ज़मीन पर फैलेंगी।"

(मजमूआ विज्ञापन, भाग प्रथम, पृष्ठ 114-115)

बशीर-ए-अव्वल की वफ़ात और हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की हक्कानी तक़रीर

तिथि 4 नवंबर 1888 ई. को साहिबज़ादा बशीर अव्वल ने बक़ज़ा ए इलाही वफ़ात पाई और मुख़ालेफ़ीन की तरफ़ से एक तूफ़ान बदतमीज़ी बरपा किया गया। इस मौक़ा पर हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने समस्त नुक्ता चीनियों का उत्तर देते हुए एक रसाला "हक़्क़ानी तक़रीर बर वाक़िया वफ़ात बशीर" शाय फ़रमाया जो सब्ज़-रंग के काग़ज़ पर शाय होने की वजह से बादअज़ां "सबज़ विज्ञापन" के नाम से ही मशहूर हो गया। इस विज्ञापन में हज़रत अकदस ने फ़रमाया

"जिस क़दर उस आजिज़ की तरफ़ से विज्ञापन छपे हैं इन में से कोई शख़्स एक ऐसा हर्फ़ भी पेश नहीं कर सकता जिस में यह दावा किया गया हो कि मुस्लेह मौऊद और उम्र पाने वाला यही लड़का था जो फ़ौत हो गया है।"

(सबज़ विज्ञापन, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 2, पृष्ठ 448)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

कि यदि हम इस विचार के आधार पर कि इल्हामी तौर पर स्वर्गवासी पुत्र की व्यक्तिगत महानताएं प्रकट हुईं हैं और उसका नाम मुबश्शर और बशीर और नूरुल्लाह सय्यिद तथा चिराग़ुद्दीन इत्यादि नाम व्यक्तिगत पूर्णता और प्रकाशमान स्वभाव के आधार पर रखे गए हैं, कोई विवरण सहित विस्तृत विज्ञापन भी प्रकाशित करते और उस में उन नामों के हवाले से अपनी यह राय लिखते कि शायद मुस्लिह मौऊद और उम्र पाने वाला यही लड़का होगा। तब भी विवेकी लोगों की दृष्टि में हमारा यह बयान विवेचना तक आपत्तिजनक न ठहरता।

(सबज़ विज्ञापन, रुहानी ख़ज़ाएन, भाग 2, पृष्ठ 450-451)

इसी सबज़ विज्ञापन में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की रहमत के दो महान तरीक़े वर्णन फ़रमाए हैं। हज़रत अकदस की यह तहरीर निहायत ही फ़ैसला करने वली है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

ख़ुदा तआला की रहमत के उतरने और रूहानी बरकत के प्रदान करने के लिए बड़ी महान दो पद्धतियां है : (1) प्रथम यह कि कोई संकट और शोक-संताप उतार का सब्र करने वालों पर क्षमा और रहमत के दरवाज़े खोले जैसा कि उसने स्वयं - फ़रमाया है

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ
اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ

(अलबक़रह - 156 से 158)

अर्थात् हमारा यही प्रकृति का नियम है कि हम मोमिनों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के संकट डाला करते थे और सब्र करने वालों पर हमारी रहमत उतरती है और सफलता के मार्ग उन्हीं पर खोले जाते हैं जो सब्र करते हैं।

दूसरी पद्धति रहमत के उतरने की रसूलों और नबियों, इमामों, वलियों और (2) खुलफ़ा का भेजा जाना है। ताकि उनकी पैरवी और हिदायत से लोग सद्मार्ग पर आ जाएं और स्वयं को उनके आदर्श पर बना कर मुक्ति पा जाएँ। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि इस ख़ाकसार की सन्तान के द्वारा ये दोनों भाग प्रकटन में आ जाएँ। अतः بَشِّرِ प्रथम उसने प्रथम प्रकार की रहमत उतारने के लिए बशीर को भेजा ताकि का सामान मोमिनों के लिए तैयार करके अपनी बाशरीयत का अर्थ पूरा الصّٰبِرِيْنَ .. करे

रहमत का दूसरा प्रकार जो अभी हमने वर्णन किया उसे पूर्ण करने के लिए ख़ुदा दूसरा बशीर भेजेगा जैसा कि बशीर प्रथम की मौत से पहले 10 जुलाई 1888ई के विज्ञापन में उसके बारे में भविष्यवाणी की गई है। और ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार पर प्रकट किया कि एक दूसरा बशीर तुम्हें दिया जाएगा, जिसका नाम महमूद भी है। वह अपने कामों में दृढ़ प्रतिज्ञ होगा يخلق الله ما يشآء

(सबज़ विज्ञापन, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 2, पृष्ठ 461 - 463 हाशिया)

यह सबज़ विज्ञापन भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद को समझने के लिए एक कुंजी है, उसी सबज़ विज्ञापन में अल्लाह तआला की दो किस्म की रहमतों का वर्णन कर के हुज़ूर आ का यह फ़रमाना कि ख़ुदा तआला ने चाहा कि इस आजिज़ की औलाद के ज़रीया से ये दोनों शक़ ज़हूर में आ जाएं वाज़ह बताता है कि मुस्लेह मौऊद का वजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी जस्मानी औलाद से ही आना था न कि आइन्दा किसी ज़माने में रुहानी औलाद के तौर पर और आने वाले बशीर के विषय में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़र्मा दिया कि वह मुर्सलीन-ओ-नबीईन--ओ-अइम्मा-ओ-औलिया और ख़ुलफ़ा के मुक़ाम पर फ़ायज़ होगा। अब मुर्सलीन और नबीईन के मुक़ाम पर तो ख़ुद हज़रत अकदस थे लिहाज़ा इस मौऊद बेटे ने अइम्मा-ओ-औलिया ख़ुलफ़ा के मुक़ाम पर होना था और इसी की पैरवी को हुज़ूर ने निजात पाना और राह-ए-रास्त पर आना है।

भविष्यवाणी का मिस्दाक़

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी तहरीरात में विभिन्न जगहों पर अपनी मुबश्शिर औलाद का वर्णन फ़रमाया है और हर बेटे या बेटी के विषय में उसकी वलादत से क़बल उस की वलादत के विषय में किताब या विज्ञापन का हवाला दिया है लेकिन सबज़ विज्ञापन में जिस बेटे की वलादत की ख़बर का वर्णन है इस का मिस्दाक़ हमेशा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़िय-

ल्लाहु अन्हो को क़रार दिया है। इस के सबूत में दर्ज ज़ेल हवाले पेश हैं :

हुज़ूरअलैहिस्सलाम अपनी किताब "सिराज-ए-मुनीर" मैं अपनी सच्ची भविष्य-वाणियों का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"पांचवीं भविष्यवाणी मैंने अपने लड़के महमूद की पैदाइश की निसबत की थी कि वह अब पैदा होगा और इस का नाम महमूद रखा जाएगा और इस भविष्यवाणी की इशाअत के लिए सबज़ वर्क़ के विज्ञापन शाय किए गए थे जो अब तक मौजूद हैं और हज़ारों आदमियों में तक़सीम हुए थे। इसलिए बे लड़का भविष्यवाणी की मीयाद में पैदा हुआ और अब नौवीं साल में है।"

(सिराज-ए-मुनीर, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 12 पृष्ठ 36)

किताब सिराज-ए-मुनीर की इसी तहरीर के हाशिया में हज़ूर मज़ीद फ़रमाते हैं "सबज़ विज्ञापन में सरीह लफ़्ज़ों में बिला तवक़्क़ुफ़ लड़का पैदा होने का वादा था, अतः महमूद पैदा हो गया। किस क़दर यह भविष्यवाणी अज़ीमुश्शान है अगर ख़ुदा का ख़ौफ़ है तो पाक-दिल के साथ सोचो!"

अपनी किताब "अंजाम आथम" मे हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"फिर एक और निशान यह है जो ये तीन लड़के जो मौजूद हैं, हर एक के पैदा होने से पहले उसके आने की ख़बर दी गई है इसलिए महमूद जो बड़ा लड़का है उसकी पैदाइश की निसबत इस सबज़ विज्ञापन में सरीह भविष्यवाणी महमूद के नाम साथ की मौजूद है जो पहले लड़के की वफ़ात के बारे में शाय किया गया था जो रिसाला की तरह कई वर्क़ का विज्ञापन सब्ज़-रंग के वर्क़ों पर है। और बशीर जो दरमयानी लड़का है उसकी ख़बर एक सफ़ैद विज्ञापन में मौजूद है जो सबज़ विज्ञापन के तीन साल बाद शाय किया गया था और शरीफ़ जो सबसे छोटा लड़का है इसके तव्वुलुद की निसबत भविष्यवाणी ज़ियाउल-हक़ और अनवारुल इस्लाम में मौजूद है।"

(ज़मीमा अंजाम-ए-आथम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 11, पृष्ठ 299)

इसी तरह हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब "सिररूल खिलाफ़ा" मैं फ़रमाते हैं :

अनुवाद और मैं तेरे सामने एक अजीब-ओ-ग़रीब क़िस्सा और हिकायत वर्णन करता हूँ कि मेरा एक छोटा बेटा था जिसका नाम बशीर था, अल्लाह तआला ने उसे बचपन में ही वफ़ात दे दी तब अल्लाह तआला ने मुझे इल्हाम मे बताया कि हम उसे अज़ राह एहसान तुम्हारे पास वापस भेज देंगे। ऐसा ही इस बच्चे की वालदा ने स्वप्न में देखा कि बशीर आ गया है और कहता है कि मैं आपसे निहायत मुहब्बत के साथ मिलूँगा और जल्द जुदा नहीं होंगा। इस इल्हाम और स्वप्न के बाद अल्लाह तआला ने मुझे दूसरा पुत्र अता फ़रमाया तब मैंने जान लिया कि येह वही बशीर है और ख़ुदा तआला अपनी ख़बर में सच्चा है इसलिए मैंने इस बच्चे का नाम बशीर ही रखा और मुझे उसके जिस्म में बशीर अव्वल का हुल्या दिखाई देता है। अतः अल्लाह तआला की सुन्नत रोया के ज़रीया साबित हो गई कि वे दो बंदों को एक ही नाम का शरीक बनाता है। (सिररूल खिलाफ़ा, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 8, पृष्ठ 381)

सबज़ विज्ञापन के हवाले से ही अपने बेटे हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब की विलादत का वर्णन करते हुए हुज़ूर अक़्दस अलैहिस्सलाम अपनी किताब "तिरयाकुल-क़ुलूब" मे फ़रमाते हैं :

"मेरा पहला लड़का जो ज़िंदा मौजूद है जिसका नाम महमूद है अभी वह पैदा नहीं हुआ था जो मुझे कशफ़ी तौर पर उसके पैदा होने की ख़बर दी गई और मैंने मस्जिद की दीवार पर उसका नाम लिखा हुआ यह पाया कि महमूद। तब मैंने इस भविष्यवाणी के शाय करने के लिए सब्ज़-रंग के वर्क़ों पर एक विज्ञापन छापा जिसकी तारीख़ इशाअत यक्म दिसंबर1888 ई. है।"

(तिरयाकुल क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 15, पृष्ठ 214)

तिरयाकुल क़ुलूब में ही हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक और जगह फ़रमाया

"महमूद जो मेरा बड़ा बेटा है इसके पैदा होने के बारे में विज्ञापन 10 जुलाई 1888 ई. में और तथा विज्ञापन 1 दिसंबर 1888 ई. में जो सब्ज़-रंग के काग़ज़ पर छापा गया था भविष्यवाणी की गई और सब्ज़-रंग के विज्ञापन में यह भी लिखा गया कि इस पैदा होने वाले लड़के का नाम महमूद रखा जाएगा और यह विज्ञापन महमूद के पैदा होने से पहले ही लाखों इन्सानों में शाय किया गया। इसलिए अब तक हमारे मुख़ालिफ़ों के घरों में सदहा ये सब्ज़-रंग के विज्ञापन पड़े हुए होंगे और ऐसा ही दहम जुलाई 1888 ई. के विज्ञापन भी हर एक के घर में मौजूद होंगे। फिर जब कि इस भविष्यवाणी की शौहरत बज़रीया विज्ञापन कामिल दर्जा पर पहुंच चुकी और मुस्ल-मानों और ईसाइयों और हिंदूओं में से कोई भी फ़िर्क़ा बाक़ी न रहा जो इस से बे-ख़बर हो तब ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और रहम से 12, जनवरी 1889 ई. को मुताबिक़ 9 जमादीऊल अव्वल 1306 हमें बरोज़ शंबा महमूद पैदा हुआ।"

(तिरयाकुल क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 15, पृष्ठ 219)

अपनी तसनीफ़ लतीफ़ हकीकतुल वह्यी में भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने सबज़ विज्ञापन के मिस्दाक़ को वर्णन फ़रमाया है, हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"ऐसा ही जब मेरा पहला लड़का फ़ौत हो गया तो नादान मौलवियों और उन के दोस्तों और ईसाइयों और हिंदूओं ने उसके मरने पर बहुत ख़ुशी ज़ाहिर की और बार-बार उन को कहा गया कि20 फ़रवरी 1886 ई. में यह भी एक भविष्यवाणी है कि कुछ लड़के फ़ौत भी होंगे। अतः ज़रूर था कि कोई लड़का ख़ुर्द-साली में फ़ौत हो जाता तब भी वे लोग एतराज़ से बाज़ नहीं आए तब ख़ुदा तआला ने एक दूसरे लड़के की मुझे बशारत दी इसलिए मेरे सबज़ विज्ञापन के सातवें पृष्ठ में इस दूसरे लड़के के पैदा होने के बारे में यह बशारत है दूसरा बशीर दिया जाएगा जिसका दूसरा नाम महमूद है वह जबकि अब तक जो यक्म सितंबर 1888 ई. है पैदा नहीं हुआ मगर ख़ुदा तआला के वादा के मुवाफ़िक़ अपनी मीयाद के अंदर ज़रूर पैदा होगा ज़मीन आसमान टल सकते हैं पर उस के वादों का टलना मुम्किन नहीं। यह है इबारत वि-ज्ञापन सबज़ के पृष्ठ सात की जिसके मुताबिक़ जनवरी 1889 ई. में लड़का पैदा हुआ जिसका नाम महमूद रखा गया और अब तक अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ज़िंदा मौजूद है और सत्रहवीं साल में है।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 373- 374)

किताब हकीकतुल वह्यी में ही हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने चौंतीसवें (34) निशान में सबज़ विज्ञापन का हवाला देकर हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब की पैदाइश का वर्णन यूं फ़रमाया है :

"मैंने एक सब्ज़-रंग के विज्ञापन में हज़ारों मुवाफ़िक़ों और मुख़ालिफ़ों में यह भविष्यवाणी प्रकाशित की और अभी सत्तर दिन पहले लड़के की मौत पर नहीं गुज़रे थे कि यह लड़का पैदा हो गया और इस का नाम महमूद अहमद रखा गया।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22, पृष्ठ 227)

शुरू में यह वर्णन किया जा चुका है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सबज़ विज्ञापन में अल्लाह तआला की दो किस्म की रहमतों का वर्णन फ़रमाया है, किसम अव्वल का मिस्दाक़ बशीर अव्वल मरहूम को क़रार दिया और रहमत इलाही की दूसरी किस्म (यानी) इरसाल मुर्सलीन और नबियों और अइम्मा और औलिया और खुलफ़ा) के लिए दूसरे बशीर दिए जाने का ऐलान फ़रमाया जिसका दूसरा नाम महमूद बताया। और यह बात भी वाज़ह है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने एक ही बेटे का नाम बशीर और महमूद रखा और किसी बेटे का नाम महमूद नहीं रखा। अतः सबज़ विज्ञापन में इसी बशीर और महमूद को हज़ूर ने उलुलअज़म क़रार दिया है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसी मौऊद बेटे के विषय में कुछ और जगहों पर भी इसका वर्णन फ़रमाया है मसलन हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपनी किताब "आईना कमालात इस्लाम" मैं इसी मुस्लेह मौऊद वाली भविष्यवाणी का वर्णन कर के नीचे हाशीए में तहरीर फ़रमाते हैं :

अनुवाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम यह ख़बर दे चुके हैं कि जब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आएगा तो वह शादी करेगा और इस के हाँ औलाद भी होगी। इस में इस बात की तरफ़ इशारा है कि अल्लाह तआला उस (मौऊद) को एक ऐसा सालेह बेटा देगा जो अपने बाप के मुशाबेह होगा और अपने बाप के ख़िलाफ़ नहीं करेगा और वह अल्लाह तआला के मुअज़्ज़िज़ बंदों में से होगा। और इस में राज़ यह है कि अल्लाह तआला अंबिया और औलिया को जब भी ज़ुररीयत या नसल की बशारत देता है तो सिर्फ तभी देता है जब इस ख़ुदा ने नेक औलाद देना मुक़द्दर कर लिया होता है। और यह (मौऊद) बेटे की बशारत वह है जिसकी ख़ुशख़बरी मुझे कई साल पहले दे दी गई थी और अपने दावा (मसीह-ओ-महदी) से भी पहले। (आईना कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 5 पृष्ठ 578 हाशिया

फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपनी किताब "एजाजुल -मसीह" मे फ़रमाते हैं :

अनुवाद और जब हम (मुराद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम। लेखक) इस दुनिया से रुख़स्त हो जाऐंगे तो फिर हमारे बाद क़ियामत तक कोई और मसीह नहीं आएगा और न ही कोई आसमान से उतरेगा और न ही कोई ग़ार से निकलेगा सिवाए उस मौऊद लड़के के जिसके बारे में पहले से मेरे रब के कलाम में वर्णन आ गया है।

(एजाजुल मसीह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग18, पृष्ठ 73)

और इसके हाशिया में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फिर فَيَتَزَوَّجُ وَيُوْلَدُ لَه वाली हदीस का हवाला दिया है :

हुज़ूर अलैहिस्सलाम का अपने मौऊद बेटे वाली भविष्यवाणी को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस فَيَتَزَوَّجُ وَيُوْلَدُ لَه से जोड़ना साबित करता है कि यह बेटा जस्मानी औलाद में से होना मुक़द्दर था कि अगर आइन्दा किसी ज़माने

में रुहानी तौर पर किसी और बेटे का वर्णन होता तो फिर उस भविष्यवाणी को इस हदीस से जोड़ने की ज़रूरत नहीं थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि मैं तेरी जमाअत के लिए तेरी ही नस्ल से एक शख़्स को क़ायम करूँगा और उसको अपने क़ुरब और वह्यी से मख़सूस करूँगा और उसके ज़रीया से हक़ तरक़्क़ी करेगा और बहुत से लोग सच्चाई को क़बूल करेंगे अतः उन दिनों के मुंतज़िर रहो और तुम्हें याद रहे कि हर एक की शनाख़्त उसके वक़्त में होती है और क़बल अज़ वक़्त मुम्किन है कि वह मामूली इन्सान दिखाई दे या कुछ धोखा देने वाले ख़्यालात की वजह से एतराज़ के योग्य ठहरे जैसा कि क़बल अज़ वक़्त एक कामिल इन्सान बनने वाला भी पेट में सिर्फ एक नुतफ़ा या अलका होता है।"

(रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 306 हाशिया)

जैसा कि सबज़ विज्ञापन में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस बशीर सानी और महमूद को "मुर्सलीनऔर नबी और अइम्मा और औलिया और खलिफ़ा" की रहमत का वारिस क़रार दिया था ऐसा ही रिसाला अल् वसीयत में इस बात का वर्णन कर के कि "मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे क़ुदरत सानिया के मज़हर उन वजूदों में अपने इस मौऊद बेटे को भी शामिल फ़रमाया इसलिए इन्ही भविष्यवाणियों के मुताबिक़ क़ुदरत-ए-सानि-या के मज़हर अव्वल हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन साहिब भैरवी रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम के नस्ल से इस मौऊद बेटे अर्थात बशीर सानी को ही क़ुदरत सानिया के मज़हर सानी के तौर पर मुंतख़ब फ़रमाया। और जैसा कि हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था "हर एक की शनाख़्त उसके वक़्त में होती है" इसलिए आने वाले वक़्त ने साबित कर दिया कि वही मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ही मुस्लेह मौऊद है और जो जो अलामतें भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद में अल्लाह तआला ने वर्णन फ़रमाई थीं वे एक एक करके सबकी सब हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़ात में पूरी हुईं

1906 ई. में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि-यल्लाहु अन्हो एक घर के विषय में लाहौर तशरीफ़ ले गए, इस मौक़ा पर मुंशी महबूब आलम ऐडीटर अख़बार "पैसा" ने साहिबज़ादा साहिब की लाहौर आमद के विषय में ख़बर देते हुए तंज़िया अंदाज़ में लिखा : "बड़ा लड़का बावजूद एक साहिब औलाद है परंतु मालूम हुआ है कि मिडल फ़ेल हो चुका है अगर मिर्ज़ा जी के बाद यही लड़के उनके गद्दी के वारिस बने तो ख़ूब मज़हब चलाएंगे।"

(बहवाला अख़बार अलहकम 17 जुलाई 1906 ई. पृष्ठ 2 कालम 4)

पैसा अख़बार की इस अख़बार के लेखक का जवाब उसी वक़्त ऐडीटर अख़बार अलहकम हज़रत शैख़ याक़ूब अली इर्फ़ानी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने अख़बार में दे दिया था। लेकिन एक जवाब अल्लाह तआला की तरफ़ से दिया जाना अभी बाक़ी था। अल्लाह तआला ने इसी लड़के को जिसके विषय में यह कहा गया था कि "अगर मिर्ज़ा जी के बाद यही लड़के उनके गद्दी का वारस बने तो ख़ूब मज़हब चलाएगा जमाअत अहमदिया का दूसरा ख़लीफ़ा बना के दुनिया को दिखा दिया कि इसी के ज़रीये अहमदियत का पैग़ाम दुनिया के कोने कोने तक पहुंचा। इसी के वजूद से क़ौमों ने बरकत पाई। इसी के वजूद से दीन इस्लाम का शरफ़ और कलाम उल्लाह का मर्तबा लोगों पर ज़ाहिर हुआ। उसी के मसीही नफ़स और रूहुल-क़ुदुस की बरकत से बहुतों ने बीमारियों से निजात पाई। इसी की सख़्त ज़हानत-ओ-फ़हम से एक आलम ने फ़ायदा उठाया और बहुत से असीरों की रस्तगारी का मूजिब हुआ। वे लड़का शत्रुओं और द्वेष रखने वालों के विरोध, बुरी प्रार्थनाओं, अपशब्दों, उपद्रवों के बावजूद जल्द जलद बढ़ा और ज़मीन के किनारों तक शौहरत पा गया। हज़रत-ए--अक़दस अलैहिस्सलाम की यह बात कितनी सफ़ाई से पूरी हुई।

"मैं जानता हूँ कि जिन बातों के प्रकाशित करने के लिए मैं मामूर हूँ हर-चंद यह बदज़नी से भरा हुआ ज़माना उनको कैसे ही अपमान की निगाह से देखे लेकिन आने वाला ज़माना इस से बहुत सा फ़ायदा उठाएगा।"

(मकतूबाते-ए-अहमद, भाग प्रथम, पृष्ठ 305 न्यू ऐडीशन)

हे ख़ुदा के बर्गुज़ीदा मसीह और महदी तुझ पर हज़ारों रहमतें और हज़ारों सलाम कि हम ने तेरी बताई हुई अलामात के मुताबिक़ इस मुस्लेह मौऊद को पहचाना और उस की ज़ात बाबरकात से फ़ायदा उठाया और नजात और फ़लाह की राहों पर सूचना पाई।

★ ★ ★

पृष्ठ 24 का शेष

"मेरे ख़्याल में समस्त दुनिया के मुस्लमानों में सबसे ज़्यादा ठोस प्रभावी और नियमित काम करने वाली जमाअत, जमाअत अहमदिया है और मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि हम सबसे ज़्यादा उस की तरफ़ से ग़ाफ़िल हैं और आज तक हमने इस ख़ौफ़नाक जमाअत को समझने की कोशिश ही नहीं की।"

(अख़बार तेज दिल्ली 25 जुलाई 1927 ई.)

फिर उसी अख़बार ने मज़ीद लिखा :

"आज सैतीस चालीस साल पहले पीछे हट जाएं जबकि यह जमाअत अपनी इबतेदाई हालत में थी और देखिए उस ज़माने में हिंदू और मुस्लमान दोनों इस जमाअत को किस क़दर हक़ीर और बे-हक़ीक़त समझते थे। हिंदू तो एक तरफ़ रहे ख़ुद मुस्लमानों ने हमेशा उस का मज़ाक़ उड़ाया और इस पर लानत और मलामत के तीर बरसाए। इस जमाअत ने अपने इबतेदाई हालात में जिन जिन कामों के करने का बीड़ा उठाया था आज उनमें से अक्सर अंजाम को पहुंच चुके हैं। इस ज़माना में जब अहमदियों ने इन कामों की इबतेदा की थी उनको पागल समझा जाता था और उनकी हमाक़त पर हंसी उड़ाई जाती थी। मगर वाक़ियात ये कह रहे हैं कि उन पर हंसी उड़ाने वाले ख़ुद बे अक़ल और अहमक़ थे। इस बारे में ईसाई मिशनरियों ने निहायत अक्लमंदी से काम लिया अहमदियों ने अभी यूरोप और अमरीका में क़दम रखा ही था कि समस्त पादरी उनके मुक़ाबला के लिए तैयार हो गए।"

(अख़बार तेज दिल्ली 25 जुलाई 1927 ई.)

यहां यह अमर भी वर्णन के लायक़ है कि ऐसी जमाअत जो तन-ए-तन्हा ईसाई दुनिया पर बड़ी जुर्रत और दिलेरी से और मोमिनाना शान के साथ हमला-आवर है और पादरी उस के मुक़ाबला के लिए सफ़-आरा हो रहे हैं ऐसी जमाअत पर यह इल्ज़ाम लगाया जा रहा है कि ये ईसाई हुकूमतों का ख़ुद काशता पौधा है। हक़ पोशी की भी कोई हद होनी चाहिए या बाज़ों के नज़दीक शायद उस की कोई हद नहीं!!

शुद्धि आन्दोलन के छः साल बाद जमाअत अहमदिया की तब्लीग़ी मसाई को हिंदू अज़म के लिए एक शदीद ख़तरा तसव्वुर करते हुए महाशा कृष्ण ने यूं ख़तरे का अलार्म बजाया

"मुश्किल यह है कि हिंदूओं को अपने ही हमवतनों की एक जमाअत की तरफ़ से ख़तरा है और वह ख़तरा इतना अज़ीम है कि उसके नतीजा के तौर पर आर्य जाती संसार से मिट सकती है। वह ख़तरा है तंज़ीम-ओ-तब्लीग़ का, मुस्लमानों की तरफ़ से यह काम इस तेज़ी से हो रहा है कि हिंदूओं के पांव उखड़ रहे हैं। उनकी संख्या साल बह साल कम हो रही है। अगर उसे किसी तरह रोका न गया तो एक वक़्त ऐसा आ सकता है जब कि आर्य धर्म का कोई भी नाम-लेवा न रहे।"

(प्रताप लाहौर 21 क्तूबर 1929 ई.)

ग़ौर फ़रमाए चंद ही साल पहले आर्या समाज का क्या दावा था और क्या तंतना था मुस्लमानों को निहत्ता और बेबस समझ कर वे अपनी पूरी क़ुव्वत से उन पर हम-ला-आवर थी और अपनी ताक़त के नशा में बदमसत हो कर यह ऐलान कर रही थी

काम शुद्धि का कभी बंद न होने पाए
हिंदू तुम में है अगर जज़्ब-ए-ईमां बाक़ी
भाग्य से क़ौमों को ये वक़्त मिला करते हैं
रह न जाए कोई दुनिया में मुसलमाँ बाक़ी

लेकिन जूंही जमाअत अहमदिया ने मैदान जिहाद में क़दम रखा आर्या समाज ने इस को अपनी हस्ती के लिए ख़तरा क़रार दिया और ख़तरा भी कोई मामूली ख़तरा नहीं बल्कि इतना अज़ीम कि उसके बाशऊर रहनुमा यह ऐलान करने पर मजबूर हो गए कि "उसके नतीजा के तौर पर आर्या जाती संसार से मिट सकती है।"

किस क़दर हैरत-अंगेज़ है यह मुवाज़ना कि जिस बच्चे के संसार से मिट जाने की ख़बर लेखराम ने दी वही बच्चा उस की क़ौम के लिए एक ऐसा अज़ीम ख़तरा बन गया कि सारी की सारी क़ौम उस के नतीजा में संसार से मिट सकती है। क्या इस सच्चाई के स्वीकार करने में अहल-ए-बसीरत के लिए इबरत का कोई सामान नहीं? क्या आर्या समाज के इस एतराफ़-ए-शिकस्त में इन लोगों के लिए कोई निशान नहीं जो ग़ौर-ओ-फ़िक्र की आदत रखते हैं।

(सवानेह फ़ज़ले उमर, भाग 2, पृष्ठ 311 से 334 प्रकाशन 2006 क़ादियान)

★ ★ ★

शुद्धि आन्दोलन और इसका मुस्लेह मौऊद भविष्यवाणी के साथ एक विशेष संबंध

(हज़रत मिर्ज़ा ताहेर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्ला तआला)

(उद्धरित सवानेह हफ़ज़ले उमर, भाग 2)

बीसवीं सदी के आरंभ में कुछ मुख़लिस मुस्लमान रहनुमाओं को यह ख़बर मिली कि नदवतुल उलमा और अलीगढ़ की मुस्लिम यूनीवर्सिटी के इर्द गिरद बसने वाले कुछ मलिकाना राजपूतों को हिंदू पण्डित "शुद्ध" करके इस्लाम से परिवर्तित कर रहे हैं। मौलाना शिबली नुमानी को इस ख़बर से ऐसा शदीद धचका लगा कि उनका ग़म-ओ-ग़ुस्सा बेसाख़ता इन शब्दों में ढल गया

"जिस वक़्त मैं यहां से चला हूँ मेरी जो हालत थी, ये विद्यार्थी नदवा के जो यहां बैठे हैं वे इस के शाहिद होंगे कि मैं ने इस वक़्त कोई गाली नहीं उठा रखी थी, जो मैं ने इन नदवा वालों को न सुनाई होगी कि हे बे हयाओ और हे कम-बख़तो डूब मरो। ये वाक़ियात पेश आए हैं। नदवा को आग लगा दो और अलीगढ़ को भी फूंक दो। यही शब्द मैं ने उस वक़्त भी कहे थे और आज भी कहता हूँ।"

(हयात-ए-शिबली, पृष्ठ 557-558)

इस सूरत-ए-हाल से पूर्णतः निपटने के लिए उन्होंने अप्रैल 1912 में लखनऊ के मुक़ाम पर समस्त भारत के मुस्लमान बड़ी हस्तियों की एक कान्फ्रैंस तलब फ़रमाई। अल्लामा शिबली के सवानेह निगार मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी इस वाक़िया का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं

"मौलाना यह चाहते थे कि इशाअत के काम समस्त फ़िरक़े मिलकर करें। इसी लिए मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (साहिब) जो अब ख़लीफ़ा क़ादियान हैं और खवाजा कमालुद्दीन साहिब तक की शिरकत से इन्कार नहीं किया गया इस पर इसी जलसा के दौरान में मौलाना पर यह इल्ज़ाम रखा गया कि उन्होंने क़ादियानियों को जलसा में क्यों शरीक किया? और उनको तक़रीर की इजाज़त क्यों दी?"

(हयात-ए-शिबली, पृष्ठ 569)

इस का असर मौलाना शिबली पर यह हुआ कि

"मौलाना बीमार और परागंदा ख़ातिर हो कर मौलवी अब्दुस्सलाम साहिब और सीरत को लेकर बंबई रवाना हो गए और दो-चार माह के ग़ौर-ओ-फ़िक्र के बाद जुलाई 1913 ई. को नदवा से मुस्तफ़ा हो कर बरी हो गए और काम की सारी तज्वीज़ें दरहम-बरहम हो कर रह गईं।"(हयात-ए-शिबली, पृष्ठ 573)

इस वाक़िया के बाद मलकाना के हिंदू पण्डित तो नियमित मुस्लमानों को "शुद्ध" करने में मशग़ूल रहे लेकिन मुस्लमान उल्मा इस अज़ीम फ़तह की ख़ुशी में इतमेनान से अपने घरों में जा सोए कि वह "क़ादियानियों" को इस्लामी जिहाद में शिरकत से बाज़ रखने में कामयाब हो गए हैं। वक़्त गुज़रता रहा यहां तक कि मार्च 1923 ई. की एक न मसऊद सुबह हिंद के मुसलमानों पर इस हाल में तलूअ हुई कि आर्या समाजी रहनुमा अपनी फ़तह के ढोल बजा रहे थे और इस्लाम का अत्यधिक बड़े दुश्मन श्रद्धानंद बड़े फ़ख़र से यह ऐलान कर रहा था कि

"आगरा आस पास में राजपूतों को तेज़ रफ़्तारी से शुद्ध किया जा रहा है और अब तक चालीस हज़ार तीन सौ राजपूत मलकाने, गुजर और जाट हिंदू हो चुके हैं ऐसे लोग भारत के हर हिस्से में मिलते हैं। ये पच्चास साठ लाख से कम नहीं और अगर हिन्दू समाज उनको अपने अंदर जज़ब करने का काम जारी रखे तो मुझे ताज्जुब नहीं होगा कि उनकी संख्या एक करोड़ तक साबित हो जाए।"

(अख़बार प्रताप लाहौर 16 मार्च 1923 पृष्ठ 4)

यह ऐलान किया था एक बम का ख़ौफ़नाक धमाका था जिसने हिन्दुस्तान के मुसलमानों को पूरब से पश्चिम तक हिला कर रख दिया और इस अजीब हाल में बेदार किया कि सीने चाक और दिल बेचैन थे। हिंदुओं ने सिर्फ उसी ऐलान पर बस नहीं की बल्कि शुद्धि की तहरीक को सारे भारत में फैला देने के लिए एक आम बिगुल बजा दिया। जिसका नतीजा यह हुआ कि मुस्लमानों में हर तरफ़ एक शोर आह-ओ-बका बपा हो गया और मुस्लमान अख़बारात बड़े मोस्सर और पूरे दर्द भरे अंदाज़ में अपने उल्मा और दीगर राहनुमाओं से अपीलें करने लगे कि वह अपने बाहमी मतभेदों को भुला कर इस्लाम की ख़िदमत के लिए आगे आएं और जिस फ़िरक़े को जिस क़दर तौफ़ीक़ मिले मलकाना के मुस्लमानों को मुर्तद होने से बचाने की कोशिश करे। इसलिए विभिन्न मुस्लमान फ़िर्क़ों की तरफ़ से असंख्य मुहिम्मात का आग़ाज़ किया गया और लाखों रुपए चंदा जमा करने की अपीलें जगह जगह प्रकाशित होने लगीं इसी तरह जानी क़ुर्बानी के लिए भी मुजाहेदीन को बुलाया गया। शीयों ने एक अलग मुहिम का आग़ाज़ किया कि वे अपने तौर पर इर्तिदाद की इस ख़ौफ़नाक हवा को पलट सकें। उस वक़्त एक मशहूर अख़बार के संपादक ने नाम लेकर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद को भी पुकारा कि हे अहमद इस्लाम की हमदर्दी का दावा वालो! आज तुम कहाँ हो। आज इस्लाम के लिए क़ुर्बानी के मैदान तुम्हें अपनी तरफ़ बुला रहे हैं। आज वक़्त है कि तुम और तुम्हारी जमाअत अपने दावों की सदाक़त का सबूत दो जबकि इस दावत से एक रोज़ पूर्व ही अर्थात 7 मार्च 1923 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो इसी विशेष पर जमाअत को संबोधित फ़र्मा चुके थे और यह हिदायत दे चुके थे कि जमाअत हर क़ुर्बानी के लिए तैयार हो जाए और एक ऐसी स्कीम का भी परिचय करवा चुके थे जो आपने पहले से ही फ़िल्ला इर्तिदाद के सद्द-ए-बाब के लिए तैयार करली थी लेकिन वकील अमृतसर की इस दावत पर ग़ैरत ईमानी का मुज़ाहरा करते हुए आपने फ़ौरी तौर पर विज्ञापन 9 मार्च को इस का उत्तर लिखा और उन कोशिशों से मुख़्तसेरन अहल-ए-इस्लाम को आगाह किया जो पहले ही इस बारे में शुरू की जा चुकी थीं। तथा इस सिलसिला में हिंद को 20 लाख रुपए चंदा इकट्ठा करने की तरग़ीब दी और फ़रमाया कि सब फ़िरक़े अपने अपने हिस्से की रक़म ख़ुद ही इकट्ठी करें और ख़ुद ही अपने ज़ेर-ए-इंतिज़ाम ख़र्च करें इसी तरह हर फ़िरक़े के ज़ेर-ए-इंतेज़ाम मुजाहिदीन के अलग-अलग दस्ते इस साझी ज़िम्मेदारी को अदा करने के लिए रवाना हो जाएं। आपने फ़रमाया जबकि संख्या एतबार से 20 लाख में से बाक़ी मुस्लमानों के मुक़ाबला में जमाअत अहमदिया का हिस्सा 160वां अर्थात सिर्फ तेराह हज़ार रुपए बनता है लेकिन जब निम्नलिखित दो उमूर् को मलहूज़ रखा जाए तो इस क़ुर्बानी में जमाअत का हिस्सा और भी कम निर्धारित होना चाहिए।

प्रथम जमाअत में करोड़पति तो अलग रहे, लख-पति भी कोई नहीं जबकि दूसरे समस्त मुस्लमान फ़िर्क़ों में असंख्य करोड़पति या लख-पती मौजूद हैं।

द्वितीय : भूतकाल क़रीब में जमाअत अहमदिया की महिलाएं इस्लाम की ख़िदमत की एक निहायत अहम ज़िम्मेदारी क़बूल कर चुकी हैं अर्थात तामीर मस्जिद बर्लिन के विषय में पचास हज़ार रुपए पेश करने का वादा कर चुकी हैं और इस वक़्त वह इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने में व्यस्त और ऋणी हैं।

जबकि कमी के वर्णित दोनों तक़ाज़ों के बावजूद हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया ने इस अज़म का इज़हार फ़रमाया कि तेराह हज़ार रुपए में से कुछ कम करने की बजाय आप अपनी जमाअत के ख़ुलूस और क़ुर्बानी के मयार के पेश-ए-नज़र शुद्धि आन्दोलन के विषय में पच्चास हज़ार रुपए जमा करने का ऐलान करते हैं जो इस्लाम के हक़ में शुद्धि आन्दोलन का रुख पलटने के लिए ख़र्च किए जाएंगे

जिस वक़्त हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ने फ़िल्ला इर्तिदाद के सद्द-ए-बाब के लिए जमाअत अहमदिया की तरफ़ से पच्चास हज़ार रुपए का वादा किया, मुनासिब होगा कि जमाअत की इस वक़्त की उमूमी माली हालत का भी कुछ जायज़ा ले लिया जाए ताकि कुछ अंदाज़ा हो सके कि इस वादा की क्या हैसियत थी। आज के मयार से देखा जाए तो पच्चास हज़ार रुपए की रक़म एक ऐसी मामूली रक़म है कि जमाअत अहमदिया में असंख्य ऐसे अफ़राद मिल जाऐंगे जो इन्फ़रादी तौर पर ही इस से बहुत ज़्यादा रक़म ख़िदमत दीन के लिए पेश कर सकते हैं और करते रहे हैं लेकिन इस वक़्त के हालात आज से बिल्कुल विभिन्न थे। अव्वल तो उस वक़्त और आज के रुपए की क़ीमत में ही ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। दूसरी जमाअत की माली हालत स्वयं भी बहुत ख़राब थी और ज़राए आमद निहायत क़लील और सीमित थे।

शुद्धि आन्दोलन से सिर्फ एक साल क़बल अर्थात मार्च 1922 ई. की मुशावरत की रिपोर्ट पर नज़र डालने से मालूम होता है कि बाक़ायदा एजंडे पर यह मसला बराए ग़ौर पेश था कि जमाअत अहमदिया जिस शदीद माली बोहरान में से गुज़र रही है उसका सद्द-ए-बाब कैसे किया जाए। अंजुमन की ग़ुर्बत का आलम यह था कि कारकुनों को तनख़्वाहें देने के लिए भी पैसे मौजूद नहीं थे, कारकुनों की कई कई माह की तनख़्वाहों का क़र्ज़ अंजुमन पर चढ़ा हुआ था और अंजुमन का क़र्ज़ा कम होने की बजाय रोज़ बरोज़ ख़तरनाक रफ़्तार के साथ बढ़ रहा था। जमाअत अपनी ग़ुर्बत और बे-सर-ओ-सामानी के बावजूद जिस आलमगीर ग़लबा इस्लाम की जद्द-ओ--जहद में मशग़ूल थी उसके माली तक़ाज़े समस्त तर पूरे करने तो दरकिनार दीनी ज़रूरतें पूरी करने की भी जमाअत में ताक़त नहीं थी और अहमदी मुबल्लग़ीन निहायत दर्द-नाक हालात में ज़िंदगी बसर कर रहे थे। बाहर के देशों में मुबल्लिग़ बीमार पड़े तो ईलाज के लिए दवा तक के पैसे न होते थे। इस माली बोहरान के दौरान जमाअत अहमदिया का सालाना बजट जिस तरह बनाया गया और सख़्त तंगी से बनाए हुए बजट के बावजूद जमाअत को जिन शदीद मुश्किलात से गुज़रना पड़ रहा था उनका वर्णन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने मजलिस शूरा की तक़रीर में इन शब्दों में किया।

"एक और कमेटी बिठाई जिसने 3-4 हज़ार की और कमी की फिर बजट मेरे पास आया। मैं ने इस में 30 हज़ार की कमी की मगर बावजूद इस के कि इस क़दर कमी की और लड़कों के वज़ायफ़ में इस क़दर कमी की कि इस से कम नहीं हो सकती थी और बावजूद इसके कि पहले ही जो तनख़्वाह बाहर मिलती है इस से बहुत कम काम करने वालों को मिलती है। अब उनकी तनख़्वाह में और भी कमी कर दी गई

है। गरीबों को बचाने के लिए जिन गरीबों को सूखे का भत्ता मिलता था वह बंद नहीं किया बल्कि जिनकी तनख़्वाह 60 से ऊपर थी उनको पंद्रह फ़ीसदी और जिनकी 100 से ऊपर थी उनकी बीस फ़ीसदी कम कर दी गई। मैंने कहा उनको क़ुर्बानी करनी चाहिए और सब ने ख़ुशी से मंज़ूर कर लिया और अतिरिक्त इसके कि यहां के लोगों को कम तनख़्वाहें मिलती हैं और गर्वनमैंट ने दुगुनी तिगुनी कर दी हैं मगर हमने और कम कर दी हैं। मगर बजाय इस से बोझ कम हो जाने के अभी तक कई माह की तनख़्वाहें नहीं दी गईं। पहले तीन माह की तनख़्वाहें बाक़ी थीं और अब पाँच-पाँच माह की हैं और अब हालत यहां तक हो गई है कि चूँकि उन्होंने क़र्ज़ लेकर खाया है इस लिए दुकानों का दीवाला निकल गया। उधर पाँच पाँच माह की तनख़्वाहें नहीं मिली इधर दुकानों पर सरमाया नहीं रहा .. यहां ऐसा हो रहा है कि कई लोगों को कई कई दिन का फ़ाक़ा होता है। अभी एक शख़्स ने बताया कि मेरे पास से एक शख़्स गुज़र रहा था जो फ़ाक़ा से था। मैंने उस की शक्ल से उसे पहचाना और वास्तव मे कई दिन का उसे फ़ाक़ा था। उसने कुछ दिया परंतु आधा एक और को रास्ते में दे दिया। इसी तरह एक और के विषय में सुना कि फ़ाक़ा से बहोश हो गया और मैंने घर का खाना उसे भेजा और आदमी को कहा कि खिला कर आना। मैं समझता हूँ कि यहां ऐसे मुख़लिस हैं कि भूख से मर जाएंगे और काम नहीं छोड़ेंगे परंतु क्या हमारी जमाअत के लिए यह धब्बा नहीं होगा कि ऐसे कारकुन भूखे मर गए। तो माली लिहाज़ से निहायत नाज़ुक वक़्त आया हुआ है।"

(रिपोर्ट मजलिस मुशावरत 1922 ई. पृष्ठ 18-19)

ये वे हालात थे जिनमें हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने जमाअत अहमदिया की महिलाओं के सामने तामीर मस्जिद बर्लिन की स्कीम पेश फ़रमाई। आपने जमाअत पर वाज़िह किया कि हम अपनी माली मुश्किलात को दीनी ज़रूरीयात की राह में हायल नहीं होने देंगे। आपने उन्हें बताया कि आज जर्मनी में इस्लाम की ख़िदमत का एक नया और वसीअ मैदान खुला है जिसके तक़ाज़ों को किसी क़ीमत पर नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। जंग-ए-अज़ीम के बाद जर्मन क़ौम में नफ़सियाती लिहाज़ से ऐसे हालात पैदा हो चुके हैं कि यूरोप के दीगर देशों की निसबत इस में इस्लाम क़बूल करने का इमकान ज़्यादा रोशन नज़र आता है। अतः आपने इस बात की परवाह किए बग़ैर कि जमाअत पहले ही शदीद माली मुश्किलात में गिरफ़्तार है मस्जिद बर्लिन की तामीर के लिए चंदा की तहरीक फ़रमाई और अहमदी मस्तूरात को इस बात का पाबंद कर दिया कि वे पच्चास हज़ार रुपए की ख़तीर रक़म मस्जिद बर्लिन की तामीर के लिए ख़ालिसन अपने ज़राए से पेश करें और अपने खाविंदों से कोई मुतालिबा न करें। यह पाबंदी इस लिए थी कि वास्तव मे जमाअत के मर्दों में इस वक़्त मज़ीद माली बोझ बर्दाश्त करने की ताक़त नज़र नहीं आती थी और औरतों से यह तवक़्क़ो थी कि वे अपनी पूंजी और ज़ेवरात बैच करके इस्लाम की इस अहम ज़रूरत को पूरा कर देंगी। इसलिए ऐसा ही हुआ लेकिन यह एक अलग दास्तान है जिसका कुछ वर्णन अपने अवसर पर किया जाएगा। इस वक़्त ईस का वर्णन महिज़ इस लिए किया गया है कि आज शुद्धि के हालात का मुताला करने वाला क़ारी यह अंदाज़ा कर सके कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने मलिकाना के जिहाद के लिए जिस जमाअत से पच्चास हज़ार रुपए का मुतालिबा किया वह किन हालात में से गुज़र रही थी और यह मुतालबा अपनी ज़ात में क्या क़ीमत और क्या मुक़ाम रखता था ये दोनों मुतालिबात जहां एक तरफ़ आपके साहिब अज़म होने पर दलालत करते हैं वहां इस बात की भी शहादत देते हैं कि आपको अपने रब के फ़ज़लों और नुसरत पर ग़ैरमामूली ईमान और तवक्कुल था और यक़ीन था कि यह ख़ुदा ही के काम हैं और वही उनके पूरा करने के सामान करेगा। अतः दुनिया ने यह अजीब मोजिज़ा देखा कि फ़ाक़ा कशों की इस जमाअत ने इस्लाम की ज़रूरत को अपनी ज़रूरत पर तर्जीह दी और क़ुर्बानी के हर मुतालिबा पर पहले से बढ़कर जोश और सिदक़ के साथ लब्बैक कहा। यक़ीनन ये ख़ुदा ही का फ़ज़ल था लेकिन फ़ज़ल महमूद के ज़रीया ज़ाहिर हुआ था। जमाअत को ख़ुदा ने एक ऐसा अज़ीम रहनुमा अता किया था कि जो इस्लाम की ख़िदमत के लिए इन फ़िदाइयों के ख़ून का एक एक क़तरा निचोड़ कर पेश करने के लिए तैयार था। वह एक ऐसा रहनुमा था जो क़ुर्बानी के हर मैदान की तरफ़ पहले ख़ुद क़दम बढ़ाता और फिर जमाअत को अपने पीछे क़दम बढ़ाने की दावत देता। इसके किरदार में एक अजीब बुलंदी थी। उस की ज़बान में एक अजीब जादू था। जब वह इस्लाम की ख़िदमत के लिए क़ुर्बान गाहों की तरफ़ जमाअत को बुलाता तो दिलों की अजीब कैफ़ीयत हो जाती। जोश-ए-ख़िदमत से सीने फटने लगते और दिल उछल उछल कर दीन मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर निछावर होने के लिए हँसलियों से सिर टकराने लगते। जमाअत वालहाना इसके पीछे दौड़ पड़ती और हर अहमदी एक दूसरे पर सबक़त ले जाने की कोशिश करता। जो कमज़ोर थे गिरते पड़ते घिसटते क़ुर्बान गाहों की तरफ़ रवाना हो जाते और जो लाचार और माज़ूर थे वे ज़बान-ए--हाल से या दर्दनाक गीत गाया करते ।

वे ख़ुश-क़िस्मत हैं उस मजलिस में जो गिर पड़ के जा पहुंचे
कभी पांव पर सिर रखा कभी दामन से जा लिपटे
मरे हमराज़ पर वह पुर शकिस्ता क्या करें जिनके
हवा में उड़ गए नाले गईं बेकार या फ़र्दें

जिस रंग में आपने इस तहरीक को जमाअत अहमदिया में चलाया और आर्या समाज के मुक़ाबले में मुट्ठी भर फ़िदाइयों को एक अजीब शान ईमानी के साथ सफ़--आरा किया यह इतिहास तारीख़-ए-अहमदियत में हमेशा सुनहरी हुरूफ़ में लिखी जाएगी

सबसे पहले तो आपने काम का एक बाक़ायदा मन्सूबा तैयार किया और फ़ौरी तौर पर हालात का जायज़ा लेने के लिए कुछ ज़हीन तालीम-ए-याफ़ता नौजवानों को मलिकाना के इलाक़े में रवाना किया। इसके बाद ख़ुतबात और तक़ारीर के ज़रीया जमाअत क़व्वास मसला की नौईयत से पूरी तरह आगाह किया। मुश्किलात से ख़बरदार किया। ख़ूब अच्छी तरह वाज़िह कर दिया कि एक इंतेहाई ताक़तवर दुश्मन का सामना है जो क्या बलिहाज़ जमईयत और क्या बलिहाज़ माल-ओ-दौलत इतना बड़ा है कि दुनयावी लिहाज़ से जमाअत अहमदिया को इस से कोई निसबत नहीं। इसके बाद इस्लाम के दौर अव्वल के मुस्लमान मुजाहेदीन की अज़ीम क़ुर्बानियां याद दिलाकर उनके दिलों में एक ऐसी हलचल मचा दी कि बड़े और छोटे मर्द और औरतें, जवान और बच्चे सभी अपना सब कुछ इस्लाम के लिए क़ुर्बान करने को तैयार हो गए लेकिन आपने उनके इन जज़बात को असीमित सड़कों पर बे लगाम न होने दिया और अवामी मुज़ाहिरों की सूरत में उनके वलवलों को नष्ट होने की इजाज़त न दी। क़ादियान की गलियों में पुरजोश नारों की कोई आवाज़ बुलंद न हुई और आर्या समाज के ख़िलाफ़ गली गलोच की कोई मुहिम न चलाई गई। अलबत्ता क़ौम खालिस वादे का पैकर बनी हुई सदैव के अमल के लिए तैयार हो गई। सबसे पहले आपने जमाअत की तवज्जा का रुख दुआ की तरफ़ फेरा और उन पर ख़ूब वाज़ेह कर दिया कि दुआ के बग़ैर नतीजा ख़ेज़ अमल तो अलग रहा महिज़ अमल की तौफ़ीक़ भी नहीं मिल सकती। और हर मर्द और हर औरत बूढ़ा और बच्चा अपनी अपनी इस्त-दाद के मुताबिक़ दुआओं में व्यस्त हो गया। समस्त अहमदी आबादीयां शब ज़िंदादार हो गईं और रातों को ख़ुदा के हुज़ूर की जाने वाली गिरया वज़ारी का शोर घर-घर से बुलंद होने लगा। तहज्जुदों में सजूदा करके ग़लबा इस्लाम के लिए दुआएं की जाने लगीं और अल्लाह के दीन की नुसरत और हिमायत के लिए आगे क़दम बढ़ाने वाले अल्लाह ही से नुसरत और हिमायत की भीख मांगने लगे।

दुआ की तरफ़ तवज्जा दिलाने के बाद आपने जमाअत को माल और जान की क़ुर्बानी की तरफ़ बुलाया और पेश आने वाली मुश्किलात से भी अच्छी तरह आगाह कर दिया। हर किस्म के ख़तरात की निशानदेही की और ख़ूब खोल कर उन्हें बता दिया कि इस राह में बहुत सख़्त वक़्त आएँगे, बाज़-औक़ात कभी भूखे और कभी पियासे, कभी धूप में और कभी सर्दी में कभी नंगे-पाँव और कभी फटे पुराने कपड़ों के साथ, कभी अपना सामान उठाते हुए और कभी दूसरों के बूझे लिए हुए तुम्हें दिनों, हफ़्तों, महीनों गुज़र-औक़ात करनी पड़ेगी। फ़क़ीराना गांव गांव फिर कर अपने ग़लती ख़ूर्दा भाईयों को दुबारा इस्लाम की तरफ़ बुलाना होगा। गालियां खा कर सब्र करना होगा, मारें खा कर दुआ देनी होगी। दवा के बग़ैर हर किस्म की बीमारियां काटनी पड़ेंगी। कमर तोड़ मुशक़्क़त के काम करने होंगे। बीवी बच्चों और घरों के आराम का ख़्याल तक दिल से निकाल देना होगा। यह सब कुछ वाज़िह कर देने के बाद आपने उन्हें यक़ीन दिलाया कि अगर तुम इस्लाम की ख़िदमत की इन कुरबान-गाहों की तरफ़ बढ़ने की हिम्मत पाते हो तो मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूँ कि ख़ुदा तआला तुम्हारे साथ होगा और दुनिया की कोई ताक़त अपनी ज़ाहिरी अज़मत, माल-ओ--दौलत और जमईयत के बावजूद तुम्हें शिकस्त नहीं देगी। तुम ख़ुदा के प्यारे हो जाओगे और दीन-ओ-दुनिया की सआदतें और बरकतें तुम्हें नसीब होंगें।

आपने जमाअत से ऐसे साहिब अज़म-ओ-इस्तक़लाल मुजाहेदीन का मुतालिबा किया जो मसायब व मुशक्लात की गहिराईयों में बेधड़क कूद पड़ने के लिए तैयार हों। आपने पहले ही से उनको ख़बरदार कर दिया कि तुम्हारा मुक़ाबला सिर्फ़ बैरूनी दुश्मन ही से नहीं होगा ख़ुद तुम्हारे अपने भाईयों में से मुस्लमान कहलाने वाले उल्मा तुम्हारे ख़िलाफ़ फतवों की ऐसी मुहिम चल्लाऐंगे कि तुम्हारे सामने भी एक दुश्मन होगा और पीछे भी एक दुश्मन होगा और हर तरफ़ से तुम पर्वार किए जाऐंगे। तुम्हें काफ़िर मुलहिद दज्जाल क़रार दिया जाएगा और यह कहा जाएगा कि तुम्हारी तब्लीग़ से मुतास्सिर हो कर इस्लाम क़बूल करने से बेहतर है कि मुर्तद होने वाले मलकाने आर्या, ब्रहमो समाज या ईसाई हो जाएं लेकिन किसी अहमदी के ज़रीया कलिमा तौहीद का इक़रार न करें लेकिन जहां एक तरफ़ आप दुनयावी ख़तरात से ख़ूब अवगत करते वहां ख़ुदा की अज़मत और जलाल का नक़्शा भी इस अंदाज़ में खींचते के दिल ख़शीयत अल्लाह से भर जाते और दुनिया की ज़िंदगी और दुनयावी आराम-ओ-आसाइश से दिल उचाट हो जाते और आप के ख़ुतबात को सुनने वाला हर शख़्स और आप के तहरीकात को पढ़ने वाला हर क़ारी वालेहाना जज़्बा क़ुर्बानी के साथ अपनी ज़िंदगी और समस्त मता ज़िंदगी इस ख़िदमत के लिए पेश कर देता।

इस अवसर पर आप जमाअत से जिस अज़ीम माली क़ुर्बानी की तवक़्क़ो रखते थे और जिस इंतेहाई इक़दाम के लिए आप तैयार खड़े थे उस का अंदाज़ा हज़रत-ए--शैख़ मुहम्मद अहमद साहिब बी. ए.ईल .ईल.बी .की रिवायत से होता है जो ज़ेल में दर्ज की जाती है। हज़रत-ए-शैख़ साहिब फ़रमाते हैं :

"1923 की मजलिस मुशावरत में ख़ाकसार मौजूद था। हुज़ूर ने शुद्धि के विषय में तक़रीर की और एक मौक़ा पर यह भी फ़रमाया कि अगर आर्या क़ौम अपने माल

व दोलत के बलबूते पर शुद्धि को कामयाब करना चाहती है तो मेरा अंदाज़ा है कि इस वक़्त मेरी जमाअत की कुल जायदाद की क़ीमत का अंदाज़ा दो करोड़ रुपया के क़रीब होगा। मेरी जमाअत ये सब अमलाक व जाएदाद इस शुद्धि आन्दोलन के ख़िलाफ़ क़ुर्बान करने से दरेग़ न करेगी। इस बात से हुज़ूर का उलुलअज़म होना और जमाअत की ऐसी तर्बीयत करना और यह यक़ीन कि जमाअत ख़ुशी से अपना सब कुछ क़ुर्बान कर देगी साबित है। इसलिए बाद के वाक़ियात इसी इताअत को साबित करते हैं سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا के मुताबिक़। मुझे नहीं मालूम कि हुज़ूर की तक़रीर के ये फ़िक़रात कहीं शाय या दर्ज हुए हैं या नहीं लेकिन मुझे ये अच्छी तरह याद हैं और मैं कई मौक़ों पर दोस्तों और दीगर अश्ख़ास से यह वर्णन करता रहा हूँ 1923 की मु-शावरत के बाद ख़ाकसार को भी शुद्धि के इलाक़े में काम करने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला ने दी।"

अतः बेहतरीन और कामयाब रहनुमा वही हुआ करता है जो अक़ल और जज़बात में तवाज़ुन क़ायम रखे। आपने इस समस्त अरसा में इस तवाज़ुन का उस उम्दगी के साथ क़ायम रखा का नज़ारा करने वाला बे-इख़तेयार हो कर मर्हबा, अल्लाहु अकबर का नारा बुलंद करने लगता है। एक तरफ़ तो ऐसा उम्दा और माक़ूल मन्सूबा जमाअत के सामने रखा जो बाक़ायदा मुनज़्ज़म सूरत में जमाअत के लिए एक प्रोग्राम पेश करता था और जज़बाती और तख़्युली असरात से पाक ख़ालेसन अक़ल और तजु-र्बात की दुनिया से ताल्लुक़ रखता था। यह एक नहरी निज़ाम के मुशाबेह था जिसे बड़े फ़िक्र-ओ-तदब्बुर से, बड़ी मेहनत और के साथ इस तरह तैयार किया गया कि हर तरफ़ आबपाशी का एक जाल बिछ जाए और पानी का एक एक क़तरा फसलों की नशो नुमा के लिए प्रयोग हो। दूसरी तरफ़ आपने जज़बात में अपनी शोला नवाई से एक ऐसा भय पैदा कर दिया कि हर सीने में क़ुर्बानी के वलवले मोजज़िन हो गए। फिर आपने इन को अज़म-ओ-ज़बत का एक अज़ीम बंद बांध कर इस तरह महफ़ूज़ कर लिया कि वो सेलाब की सूरत में ग़ारतगरी करने की बजाय नज़म व ज़बत की नहरों में बहते हुए ज़मीनों कारिख करें हयात-ए-आफ़रीनी ही का मूजिब बनें। जबकि जज़बात का यह आलम था कि आप चाहते तो हज़ार हा मुख़लेसीन शुद्धि में झोंक देते लेकिन आप जानते थे कि इस तरह फ़ायदा की बजाय नुक़्सान की संभावना ज़्यादा है और थोड़े अरसा ही में क़ौम की सारी ताक़त प्रयोग हो कर जोश ठंडे पड़ जाऐंगे इसलिए आपने इबतेदा में सिर्फ डेढ़ सौ मुजाहेदीन तलब किए। जबकि थोड़े ही अरसा में डेढ़ हज़ार के क़रीब नौजवानों और बूढ़ों ने अपने आपको पेश कर दिया लेकिन आपने बड़े निर्णय और सावधानी के साथ हालात के तक़ाज़ों के मुताबिक़ इंतेख़ाब फ़रमाया और उन्हें विभिन्न गिरोहों में तक़सीम कर के हर गिरोह का एक अमीर निर्धारित फ़रमाया कि वह अपने इलाक़ा में रह कर मुफ़व्विज़ा फ़रायज़ अंजाम दे। इन सब पर श्रीमान चौधरी फ़तह मुहम्मद साहिब स्याल रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीर निर्धारित किया गया। जो उसूली हिदायात दी गईं इनका ख़ुलासा यह था कि अमीर की इताअत हरहाल में फ़र्ज़ होगी। नफ़सानी जोशों को दबाना पड़ेगा और शदीद आज़माईश के बावजूद फ़िल्ला वफ़साद से बचना होगा। मारें खाने के बावजूद हाथ उठाने की इजाज़त न होगी। कम-से-कम तीन माह के लिए वक़्फ़ करना होगा और इस अरसा में हर किस्म के अख़राजात ख़ुद बर्दाश्त करने होंगे। इलाक़े के बाशिंदों पर किसी प्रकार का माली या ज़ाती बोझ डालने की इजाज़त नहीं होगी। अगर खाना मयस्सर नहीं तो चुने चबा कर और अगर चने भी मयस्सर नहीं तो दरख़्तों के पत्ते खा कर ज़िंदगी का रिश्ता क़ायम रखना पड़ेगा। मुक़ामी बाशिंदों से मांग कर खाने का ख़्याल ही दिल में नहीं आना चाहिए। केवल ज़बानी नसाएह से काम नहीं लेना बल्कि जहां तक मुम्किन हो इलाक़े के मफ़्लूक-उल-हाल और ज़रूरतमंदों का ख़्याल रखना और उनकी मदद करनी है। इन उसूली हिदायात की मशाल लिए जितने क़ाफ़िले इस मुहिम पर रवाना हुए सभी ने नज़म ओ ज़बत का हैरत-अंगेज़ मुज़ाहरा किया और क़ुर्बानियों की ऐसी शानदार मिसालें क़ायम कर दीं के प्रथम सदी के मु-स्लमानों की याद ताज़ा हो गई।

जबकि मुजाहेदीन ने सौ फ़ीसदी अपना ख़र्च ख़ुद बर्दाश्त किया लेकिन इन अख़-राजात के इलावा भी जो मुजाहेदीन को मैदान-ए-अमल में अपनी ज़रूरीयात पूरी करने के लिए करने पड़ते थे मर्कज़ी इंतेज़ामी ज़रूरीयात के लिए लिटरेचर की इशाअत और दुनिया को सूरत-ए-हाल से बाख़बर रखने के लिए और फिर जरूरत के अनुसार मुक़द्दमात की पैरवी और हुक्काम-ए-वक़्त से राबिता क़ायम रखने के लिए एक ख़तीर रक़म की ज़रूरत थी। यही वजह थी कि आपने जमाअत में पच्चास हज़ार रुपए चंदा की तहरीक फ़रमाई इस तहरीक पर भी जमाअत ने हैरत-अंगेज़ क़ुर्बानी का मुज़ाहरा किया और थोड़े ही अरसा में इस मुतालबा को पूरा कर के एक दुनिया को हैरत में डाल दिया। उस वक़्त यह माली तहरीक इतना बड़ा मुतालबा समझा जाता था कि भारत के ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम प्रैस ने भी इस बात का नोटिस लिया और नज़रें इस तरफ़ लग गईं कि आया यह छोटी सी जमाअत इतने बड़े मुतालिबा को पूरा कर सकती है या नहीं? निसन्देह जमाअत की इस वक़्त की हालत को देखते हुए यह बहुत बड़ा मुतालिबा था। एक मामूली अज़म-ओ-हिम्मत का इन्सान गुमान भी नहीं कर सकता था कि यह क़लील और ग़रीब जमाअत इतनी बड़ी क़ुर्बानी दे सकती है लेकिन दुनिया ने बड़ी हैरत से देखा कि जमाअत ने हर रंग में आपसे तआवुन किया और हर आवाज़ पर लब्बैक कहा। क़ुर्बानियां पेश ही नहीं कीं बल्कि इस शान और इख़लास और जज़बा ईमान के साथ पेश कीं कि उनके ज़िक्र पर आज भी आँखें डुबडुबा जाती हैं और दिल की गहिराईयों से ख़ुद बख़ुद इन मुजाहेदीन के लिए दुआएं निकलती अलफ़ज़ल 15 मार्च 1923 ई. में एक बूढ़े बाप के जज़बात का उन शब्दों में वर्णन है"

"10 मार्च जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो अस्र की नमाज़ के बाद मस्जिद में रौनक अफ़रोज़ हुए तो क़ारी नईमुद्दीन साहिब बंगाली ने जो एक बूढ़े और बुज़ुर्ग हैं कुछ अर्ज़ करने की इजाज़त चाही और इजाज़त मिलने पर अपनी बंगाली उर्दू में एक पुर जोश तक़रीर की

क़ारी साहिब ने कहा गो मेरे बेटे (मौलवी) ज़ुल रहमान और मुतीअ रहमान (शिक्षित बी.ए.क्लास) ने मुझसे कहा नहीं मगर मैं ने अंदाज़ा किया है कि हुज़ूर ने जो कल राजपूताने में जा कर तब्लीग़ करने के लिए ज़िंदगी वक़्फ़ करने की तहरीक की है और जिन हालात में वहां रहने की शरायत पेश की हैं शायद उनके दिल में हो कि अगर वे हुज़ूर की ख़िदमत में अपने आपको पेश करेंगे तो मुझे जो उनका बूढ़ा बाप हूँ तकलीफ़ होगी लेकिन मैं हुज़ूर के सामने ख़ुदा तआल को गवाह कर के कहता हूँ कि मुझे उनके जाने और तकालीफ़ उठाने में ज़रा भी ग़म या दुख नहीं। मैं साफ़ साफ़ कहता हूँ कि अगर ये दोनों ख़ुदा की राह में काम करते हुए मारे भी जाएं तो इस पर एक भी आँसू नहीं गिराऊंगा बल्कि ख़ुदा तआल का शुक्र अदा करूँगा। फिर यही दोनों नहीं मेरा तीसरा बेटा महबूब रहमान भी अगर इस्लाम की ख़िदमत करता हुआ मारा जाए और अगर मेरे दस बेटे हों और वे भी मारे जाएं तो भी मैं कोई ग़म नहीं करूँगा। शायद यह ख़्याल हो कि बेटों की तकलीफ़ पर ख़ुश होना कोई बात नहीं। कुछ लोगों को ऐसी बीमारी होती है कि वह अपने अज़ीज़ों की मौत पर भी हंसते रहते हैं मगर मैं कहता हूँ कि अगर मैं भी ख़ुदा की राह में मारा जाऊं तो मेरे लिए ऐन ख़ुशी का अवसर होगा।

मैं जानता हूँ कि रया और नमूद हलाकत की बातें हैं इस लिए मैं हुज़ूर से दरख़ास्त करता हूँ कि मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला मेरे दिल को देखावे और घमंड से कि ईमान के लिए ज़हर हैं बचाए और मुझे इख़लास अता फ़रमाए। बंगाली लोग दिल के मज़बूत नहीं होते मगर मसीह मौऊद पर ईमान लाने से हम लोगों के क़ुलूब क़वी हो गए हैं और ईमान ने हमारी कमज़ोरी को दूर कर दिया है।"

(अख़बार अलफ़ज़ल 15 मार्च 1923 ई. पृष्ठ 11)

ऐसी कई मिसालें पेश की जा सकती हैं कि जिनके पास देने के लिए कुछ नहीं था उन्होंने अपने मकान या ज़मीन या कीमती वस्तुएं बेच कर इस जिहाद में हिस्सा लिया। डाक्टर मंज़ूर अहमद साहिब के पास सिर्फ एक भैंस थी वही औने-पौने पर बेच दी और जबकि सौदा घाटे का था मगर बड़ी ख़ुशी से उसका वर्णन करते थे कि वक़्त पर गाहक मिल गया। कुछ गरबा ने ख़ुतूत के ज़रीया इजाज़त तलब की कि जो कुछ भी उनके पास है फ़रोख़त कर के ज़ाद-ए-राह बनाएँ और मैदान जिहाद में पहुंच जाएं। ज़ीरा फ़िरोज़पुर के एक ग़रीब दोस्त अली शेर साहिब ने हुज़ूर की ख़िदमत में लिखा

"आपका हुक्म सुना। मैं एक ग़रीब आदमी हूँ हुज़ूर की शरायत क़बूल करने के नाक़ाबिल हूँ जिसका मुझे अफ़सोस है। चालीस रुपए का मक़रूज़ हूँ मगर एक मकान है अगर हुक्म हो तो इस को बैच करके या गिरवी रख कर के मैदान इर्तिदाद में जल्दी जाऊं।

ख़ाकसार अली शेर ज़ीरा फ़िरोज़पुर"

(कार-ज़ार शुद्धि ,मुसन्निफ़ा मास्टर मुहम्मद शफ़ी साहिब असलम, पृष्ठ 45)

औरतों में भी मस्जिद बर्लिन के चंदा की ज़िम्मेदारी के बावजूद बेहद जोश था वे अपने कपड़े और दुपट्टे वग़ैरा अपनी मलिकाना बहनों के लिए तोहफ़े के तौर पर भिजवा रही थीं। छोटी छोटी बच्चियाँ भी इस कार-ए-ख़ैर में हिस्सा ले रही थीं। हमारी हमशीरा अमतुल क़य्यूम बेगम जो हमारे उम्मे ज़ाद एम. एम. अहमद साबिक़ वज़ीर-ए-ख़ज़ाना हकूमत-ए-पाकिस्तान की पत्नी हैं, इन दिनों छः साल की थीं। उन्होंने भी अपना एक छोटा सा डुपट्टा पेश कर दिया कि किसी छोटी मलिकानी को दे दिया जाए। उमूमन दूसरी अहमदी बच्चियों का भी यही हाल था और छोटे छोटे बच्चे भी अपनी मजलिसों में बैठे मल्लकाने की बातें किया करते थे। अहमदी महिलाएं की जिहाद की तमन्ना सिर्फ इसी बात में महिदूद नहीं थी कि माल-ओ-ज़र के ज़रीया मुजाहेदीन की मदद करें बल्कि सख़्त बेक़रार थीं कि किसी तरह मैदान मे ख़ुद पहुंच कर इस अज़ीम इस्लामी जिहाद में हिस्सा ले सकें। बहन उमर बी-बी ने आगरा से हुज़ूर की ख़िदमत में लिखा

"हुज़ूर में सिर्फ क़ुरआन-ए-मजीद जानती हूँ और थोड़ा सा उर्दू। अपने बेटे से सुना है कि मुस्लमान मुर्तद हो रहे हैं और हुज़ूर ने वहां जाने का हुक्म दिया है मुझे भी अगर हुक्म हो तो तुरंत तैयार हो जाऊं। बिल्कुल देर न करूँगी। ख़ुदा की क़सम उठा कर कहती हूँ हर तकलीफ़ उठाने को तैयार हूँ।" (कार-ज़ार शुद्धि, पृष्ठ : 46)

अमतुल रहमान साहिबा मिड वाइफ़ भेरा हस्पताल ने इस तरह अपने जज़बा

शौक़ का इज़हार किया

"हुज़ूर मेरा बाप आशिक़ मसीह मौऊद था। दुनिया में दो लड़के और एक लड़की छोड़ गया। मेरे दोनों भाई अब्दुल रहीम और अब्दुल्लाह सरफ़रोशों में हुज़ूर के हुक्म से काम कर रहे हैं। इस आजिज़ का भी दिल तड़प रहा है। ये भी तीन माह के लिए ज़िंदगी वक़्फ़ करती है।"(कार-ज़ार शुद्धि, पृष्ठ 46 से 47)

शुद्धि आन्दोलन के दौरान जमाअत अहमदिया ने जिस वालहाना अंदाज़ में क़ु-र्बानियां पेश कीं और यू.पी के कई प्रभवित ज़िलों में जिस कामयाबी के साथ आर्या समाज का मुक़ाबला किया और हर मैदान में उनको शिकस्त-ए-फ़ाश दी, एक तवील और दिलचस्प दास्तान है जिसका असल ताल्लुक़ तारीख़ अहमदियत के साथ है और किसी हद तक तारीख़ अहमदियत में इस पर रोशनी डाली भी जा चुकी है। हमारी नज़र उस वक़्त इस तहरीक के इन पहलूओं पर है जिसका ताल्लुक़ बराह-ए-रस्त हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की शख़्सियत, किरदार और सलाहियतों से है।

जहां तक इस बात का ताल्लुक़ है कि आपने एक फ़त्हा नसीब जरनैल के तौर पर इस तहरीक की क़ियादत की और हर मैदान में मुज़फ़्फ़र और मंसूर हुए, उसका कुछ वर्णन आइन्दा किया जाएगा यहां फ़िलवक़्त सिर्फ उसी पर इकतेफ़ा की जाती है कि तहरीक ख़िलाफ़त के दौरान आपके किरदार और शुद्धि आन्दोलन के दौरान आपके किरदार में जो फ़र्क़ नज़र आता है वह यही है कि जबकि उस वक़्त आपने समय पर निहायत क़ीमती मश्वरे देकर अपने फ़र्ज़ को अदा कर दिया लेकिन हालात कुछ इस किस्म के थे कि अमली जद्द-ओ-जहद के मैदान में एक कामयाब जरनैल के तौर पर उम्मत मुस्लिमा से आपका परिचय नहीं हो सका। शुद्धि की तहरीक ने वह मौक़ा फ़राहम कर दिया और आपको खुद से यह तौफ़ीक़ मिली कि अपने मश्वरों की सदाक़त और क़दर-ओ-क़ीमत को अमल के मैदान में भी दरुस्त साबित कर दिखाएंगे। दुनिया ने एक नए अंदाज़ फ़िक्र के साथ अवामी जज़बात और जोशों की तसख़ीर होती हुई देखी। इस मौक़ा पर एक और पहलू आपकी क़ाइदाना सलाहियतों का यह सामने आया कि ऐसे वक़्त में जबकि जमाअत शदीद इक़तेसादी बोहरान का शिकार थी आप इस पर मज़ीद माली बोझ डालने से न हिचकिचाए बल्कि पै दर पै ऐसी तहरीकात कीं जिनका पूरा होना बज़ाहिर मुहाल दिखाई देता था। वह जमाअत जो अपने कारकुनों की मेहनत की तनख़्वाह देने की भी ताक़त न रखती थी सिर्फ उसकी मस्तूरात ही से पच्चास हज़ार रुपए की बड़ी रक़म का मुतालिबा करना और बग़ैर किसी इंतेज़ार के फ़ौरन बाद ही मज़ीद पच्चास हज़ार रुपए की एक और तहरीक जारी कर देना यक़ीनन बहुत बड़ी हिम्मत का काम था बज़ाहिर तो इस का नतीजा यह निकलना चाहिए था कि जमाअत उन मुतालिबात को पूरा करने में नाकाम रहे बल्कि आइन्दा चंदों की अदायगी में कोताही करे लेकिन नतीजा उसके बिल्कुल बरअक्स निकला। बाद के हालात ने ये साबित कर दिया कि जमाअत के माली निज़ाम की बुनियादें दर असल इसी दौर में मज़बूत और मुस्तहकम हुईं और इसी बोहरान में इन दोनों तहरीकात के नतीजा में और इन्ही की बरकत से जमाअत में माली क़ुर्बानी की सलाहियतें पूरी तरह बेदार हुईं। नई उमंगें उभरीं और हौसलों को नई वुसअतें अता हुईं और जमाअत माली क़ुर्बानी के एक ऐसे बुलंद मयार पर क़ायम हो गई कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के मुबारक दौर के सिवा दुनिया के पर्दे पर इस की कोई दूसरी मिसाल नज़र न आएगी

ख़ुलासा कलाम यह कि 1923 ही वास्तव मे वह साल है जबकि मलकाना के जिहाद और चंदा मस्जिद बर्लिन की तहरीकात की बरकत से जमाअत अहमदिया पहली मर्तबा माली लिहाज़ से मुस्तहकम हुई और उसकी ऐसी काया पलट गई कि गोया दुनिया पर एक नई जमाअत उभरी है।

शुद्धि के मार्के में जबकि दूसरे मुस्लमानों ने भी किसी हद तक काम किया लेकिन जमाअत अहमदिया के लिए यह मुक़ाबला एक फ़ैसलाकुन हैसियत रखता था। आर्या समाज, हिंदू मत के अहयाए नौ की एक मुल्क गीर और ताक़तवर तहरीक थी जो विशेषता अहल-ए-इस्लाम के ख़िलाफ़ बड़े जारेहाना और ख़ौफ़नाक अज़ायम रखती थी। दूसरी तरफ़ मुस्लमानों की तरफ़ से अगर इस तहरीक के मुक़ाबले की कोई ताक़त रखता था तो वह जमाअत अहमदिया के सिवा कोई न था। न कोई इस हद तक मुनज़्ज़म था, न किसी को ऐसा बा-ख़ुदा और मुदब्बिर रहनुमा मयस्सर था, न किसी को अपने वसायल मुजतमा कर के ब-रू-ए-कार लाने की क़ुदरत थी। न तंज़ीम थी, न मर्कज़ीयत, न सलीक़ा, न काम को मुस्तक़िल मिज़ाजी के साथ चलाने की सलाहीयत थी। अतः जमाअत अहमदिया ही वह मुस्लमान फ़िर्क़ा था जिसे इस दौर में फ़िल-हक़ीक़त समस्त आलम-ए-इस्लाम की नुमाइंदगी का मौक़ा मिला और हर मैदान मुक़ाबला में उसने अपने दुश्मन को शिकस्त पर शिकस्त दी। यहां तक कि नाकाम और ख़ायब-ओ-ख़ासिर हो कर उसे मैदान मुक़ाबला से फ़रार के सिवा कोई चारा कार नज़र न आया।

ये सब कुछ हुआ लेकिन किसी का ख़्याल इस तरफ़ न गया कि दरअसल यह उसी मुक़ाबला की एक नई शक्ल है जो एक लंबा अरसा पहले हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आर्या रहनुमा पण्डित लेखराम के मध्य हुआ था। उस वक़्त कौन कह सकता था कि लेखराम बड़ी ताली के साथ जिस मौऊद बच्चे के ख़िलाफ़ एक मनहूस भविष्यवाणी कर रहा है ख़ुद उस की अपनी क़ौम ही एक दिन उस की बरतरी और अज़मत का ढंडोरा पीटेगी? उस वक़्त जब लेखराम यहा एलान कर रहा था कि आर्या समाज के ख़ुदा ने उसे अवगत किया है कि अगर ये बच्चा पैदा हो भी गया तब भी तीन साल के अंदर अंदर उस का नाम-ओ-निशान मिटा दिया जाएगा। क़ादियान से बाहर उस का शौहरत पाना तो दरकिनार ख़ुद क़ादियान में भी इस के नाम से कोई आश्ना न रहेगा। कौन कह सकता था कि वही बच्चा एक दिन आर्या समाज के मुक़ाबले पर क़ुरआन की तलवार लेकर इस शान के साथ निकलेगा कि हर तरफ़ उस के नाम की धूम मच जाएगी और ग़ैर तो ग़ैर ख़ुद आर्यों को इस बात का बरमला इक़रार करना पड़ेगा कि इस अज़ीम रहनुमा की क़ियादत में तहरीक अहमदियत आर्या समाज के लिए एक इंतेहाई मोहलिक ख़तरा की हैसियत रखती है। कौन उस वक़्त यह कह सकता था कि जिस बच्चे के विषय में यह दावे किया जा रहा है कि ख़ुद उस के अपने गांव में भी इस के नाम से कोई वाक़िफ़ नहीं रहेगा, वह दिन दूर नहीं कि वह सिर्फ एक गांव या ज़िला या सूबा में ही नहीं बल्कि समस्त बर-ए-सग़ीर भारत में शौहरत पाएगा और इस भविष्यवाणी करने वाले के अनुयाई ही ख़ुद इस शौहरत का ज़रीया बनाए जाऐंगे। यह एक तारीख़ी हक़ीक़त है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता कि जबकि भारत के मुस्लमानों में तो हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद शुद्धि से पहले भी रोशनास थे लेकिन भारत में बसने वाले हिंदूओं की अक्सरीयत आपके नाम से ना-आश्ना थी बल्कि जमाअत अहमदि-या के वजूद से भी नावाक़िफ़ थी। शुद्धि आन्दोलन ही मुल्क गीर शौहरत का वह पहला ज़ीना साबित हुई जिसे तै करते हुए समस्त भारत में आपका शहरा बाम उरूज पर जा पहुंचा और दुश्मन भी आपकी अज़ीम क़ियादत को ख़िराज-ए-तहिसीन पेश करने पर मजबूर हो गया ।

शुद्धि आन्दोलन इस पहलू से भी एक दिलचस्प मुताला का मवाद पेश करती है कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद की विलादत से क़बल आर्या समाज और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मध्य एक फ़ैसलाकुन मुजादिला हुआ। इस अवसर पर बदक़िस्मती से ख़ुद मुस्लमान उल्मा और मशाहीर भी अहमदियत के मुक़ाबिल पर आर्या समाज का साथ दे रहे थे। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्स-लाम ने फ़र्ज़ंद मौऊद की भविष्यवाणी फ़रमाई तो आर्यों की तरफ़ से इस भविष्यवा-णी पर जब भी कोई फबती किसी जाती मुस्लमान उल्मा आर्यों के साथ मिलकर आप पर हंसते और छींटे उड़ाते। जब भी लेखरमु कोई ताली करता तो क़हक़हों की आवाज़ों में मुस्लमान उल्मा की आवाज़ें नुमायां हो कर सुनाई देतीं। जब भी वे आपकी तक़ज़ीब में अख़बारात रसायल के चेहरे स्याह करता मुस्लमान सहाफ़ीयों के क़लम उस की ताईद में रवाँ-दवाँ नज़र आते और हर ऐसे मौक़ा पर भारत की फ़िज़ा में आर्यों की तरफ़ से भी और मुस्लमानों की तरफ़ से भी ये शोर बुलंद होता कि (नऊज़ूबिल्लाह) (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) मिर्ज़ा कादियानी की भविष्य-वाणी झूठी निकली लेकिन अल्लाह तआला को कुछ और ही मंज़ूर था और एक ऐसा भी वक़्त आना था कि ख़ुद उसी मौऊद बेटे के हाथों अपमान उठा कर आर्यों ने भी अपनी जुबान मे यह गवाही देनी थी कि लेखराम अपनी हर बात में झूठा निकला और मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अपने हर क़ौल में सादिक़-ओ-मसदूक़ साबित हुआ और मु-स्लमान राहनुमाओं ने भी इस मौऊद बेटे की ताईद में खड़े हो कर ऐलान पर ऐलान करना था कि इस्लाम का यह बतले जलील हर मैदान मुक़ाबला में आर्या दुश्मन को मात दे गया और लेखराम के मज़हब की ज़िल्लत और रुस्वाई उसी बेटे के हाथों हुई जिसके नाबूद होने की हसरत लिए वह इस दुनिया से कूच कर गया। इस मज़मून पर क़लम उठाते हुए ज़मींदार ने 24 जून 1923 ई. की इशाअत में लिखा :

"जो हालात फ़िल्ला इर्तिदाद के विषय में अख़बारात के माध्यम से इलम में आचुके हैं उनसे साफ़ वाज़ेह है कि मुसलमानान-ए-जमाअत अहमदिया इस्लाम की अनमोल ख़िदमत कर रहे हैं। जो ईसार और कमर बस्तगी नेक नीयती और तवक्कुल अल्लाह उनकी जानिब से ज़हूर में आया है वह अगर भारत के मौजूदा ज़माने में बेमिसाल नहीं तो बे-अंदाज़ा इज़्ज़त और क़दरदानी के काबिल ज़रूर है। जहां हमारे मशहूर पीर और सज्जादा नशीन हज़रात बे-हिस-ओ-हरकत पड़े हैं इस उलुलअज़्म जमाअत ने अज़ीमुश्शान ख़िदमत कर के दिखा दी।" (ज़मींदार लाहौर 24 जून 1923 ई., बयान शेख़ नयाज़ अली ऐडवोकेट हाइकोर्ट लाहौर)

फिर 29 जून 1923 ई. की इशाअत में यह एतराफ़ किया कि

"कादियानी अहमदी आला ईसार का इज़हार कर रहे हैं। इन का क़रीबन एक सौ मुबल्लिग़ अमीर वफ़द की सरकर्दगी में विभिन्न दिहात में मोरचा ज़न है। इन लोगों ने नुमायां काम किया है। जुमला मुबल्लग़ीन बग़ैर तनख़्वाह या सफ़र ख़र्च के काम कर रहे हैं। हम गो अहमदी नहीं लेकिन अहमदियों के आला काम की तारीफ़ किए

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 2 -9 february 2023 Issue No. 5-6

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

बग़ैर नहीं रह सकते। जिस आला ईसार का सबूत जमाअत अहमदिया ने दिया है इस का नमूना सिवाए मुतक़द्देमीन के मुश्किल से मिलता है। उनका हर एक मुबल्लिग़ ग़रीब हो या अमीर बग़ैर मसारिफ़-ए-सफ़र-ओ-तआम हासिल किए मैदान-ए- -अमल में गामज़न है। शदीद गर्मी और लू में वह अपने अमीर की इताअत में काम कर रहे हैं।" (ज़मींदार लाहौर, 29 जून 1923 ई.)

अख़बार मशरिक़ गोरखपुर ने लिखा

"जमाअत अहमदिया ने ख़ुसूसीयत के साथ आर्या ख़्यालात पर बहुत बड़ी ज़रब लगाई है और जमाअत अहमदिया जिस ईसार और दर्द से तब्लीग़-ओ-इशाअत इस्लाम की कोशिश करती है वह इस ज़माने में दूसरी जमाअतों में नज़र नहीं आती है।" (अख़बार मशरिक़, गोरखपुर 15 मार्च 1923 ई.)

चंद दिन बाद फिर उसी अख़बार ने यह स्वीकार किया कि :

"जमाअत अहमदिया के इमाम-ओ-पेशवा की लगातार तक़रीरों और तहरीरों का असर उनके ताबईन पर बहुत गहरा पड़ा और इस जिहाद में इस वक़्त सबसे आगे यही फ़िर्क़ा नज़र आता है और बावजूद इस बात के कि अहमदी फ़िर्क़ा के नज़दीक इस गिरोह ने मुस्लिम की ताईद की ज़रूरत न थी क्योंकि इस फ़िरक़े से इस का कोई ताल्लुक़ न था। परंतु इस्लाम का नाम लगा हुआ था इस लिए उस की शर्म से इमाम जमाअत अहमदिया को जोश पैदा हो गया है और आपकी कुछ तक़रीरें देखकर दिल पर बहुत हैबत तारी होती है कि अभी ख़ुदा के नाम पर जान देने वाले मौजूद हैं और अगर हमारे उल्मा को इस बात का अंदेशा हो कि जमाअत अहमदिया अपने अक़ायद की तालीम देगी तो वह अपनी मुत्तफ़िक़ा में .. ऐसा ख़ुलूस पैदा कर के आगे बढ़ीं कि सत्तू खाएं और चने चबाएं और इस्लाम को बचाएं। जमाअत अहमदिया के अरकान में हम यह ख़ुलूस बेशतर देखते हैं। दियानत, अफ़ा-ए-अहद, अपने इमाम की इताअत में यह जमाअत फ़र्द है। जनाब मिर्ज़ा साहिब और उनकी जमाअत की आली हौसलगी और ईसार की तारीफ़ के साथ हम मुस्लमानों को ऐसे ईसार की ग़ैरत दिलाते हैं। दियानत और अमानत जो मुस्लमानों की इमतेयाज़ी सिफ़तें थीं आज वह उनमें नुमायां हैं। जमाअत अहमदिया की फ़य्याज़ी और ईसार के साथ उनकी दियानत और आमद-ओ-ख़र्च के अबवाब की दुरुस्तगी और बाक़ायदगी सबसे ज़्यादा का-बिल-ए-सिताइश है और यही वजह है कि बावजूद आमदन की कमी के ये लोग बड़े-बड़े काम कर हैं।''(अख़बार मशरिक़ गोरखपुर 29 मार्च 1923 ई.)

इसी तरह अख़बार वकील अमृतसर ने लिखा

"अहमदी जमाअत का तर्ज़-ए-अमल इस बात में निहायत काबिल-ए-तारीफ़ है जो बावजूद छेड़-छाड़ के महज़ इस ख़्याल से कि इस्लाम को चशम ज़ख़म से महफ़ूज़ रखा जाए उन ख़ाना जंगियों के इंसदाद की तरफ़ ख़ुद मुस्लमानों के लीडरों को ध्यान दिलाते हैं और हर तरह काम करने को तैयार हैं हम अली वजह अल् बसीरत ऐलान करते हैं कि क़ादियान की अहमदी जमाअत बेहतरीन काम कर रही है।" (अख़बार वकील अमृतसर 3 मई 1923 ई.)

मौलवी मुमताज़ अली साहिब ऐडीटर अख़बार तहज़ीब निसवाँ लाहौर ने लिखा :

"मैं ने सुना है कि मैदान इर्तिदाद में हर फ़िर्क़ा इस्लाम ने तब्लीग़ के लिए अपने अपने नुमाइंदे भेजे हैं। मुनासिब जाना कि मैं जिस गिरोह के मुबल्लग़ीन को ज़्यादा कामयाब देखूं उनमें से एक अपने लिए मुंतख़ब करलूं। तहक़ीक़ात से मालूम हुआ कि तब्लीग़ के काम में सबसे ज़्यादा कामयाबी अहमदी मुरब्बीं को हुई है। इस लिए मैंने चाहा कि अगर तहज़ीबी बहनों को एतराज़ न हो तो वह उनमें से किसी एक मुबल्लिग़ का ख़र्च अपने ज़िम्मा लें। मगर उसी असनाए में हमारे उल्मा ने ऐलान शाय किया कि अहमदी फ़िर्क़ा के लोग सब काफ़िर हैं । उनका कुफ़्र मल्लकाना राजपूतों के कुफ़्र से भी ज़्यादा शदीद है।"(रिसाला तहज़ीब निसवाँ लाहौर, 2 मई 1925 ई.)

यह तो मुस्लमान अख़बारात की शहादत थी। हिंदू अख़बारात के कुछ एतराफ़ात भी पढ़ने के लायक़ हैं। इस्लाम के दिफ़ा में कौन सबसे बढ़कर उन पर चोटें लगाता रहा यह उन्ही का दिल जानता था और किस के वार उनके सीने छलनी करते रहे ये भी वही बेहतर वर्णन कर सकते थे। लीजिए सुनिए :

देव समाजी अख़बार जीवन नित लाहौर ने लिखा :

"मलकाना राजपूतों की शुद्धि की तहरीक को रोकने और मलकानों में इस्लामी मत का परचार करने के लिए अहमदी साहिबान ख़ास जोश का इज़्हार कर रहे हैं। चंद हफ़्ते हुए कादियानी फ़िर्क़ा के लीडर मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब ने डेढ़ सौ ऐसे काम करने वालों के लिए अपील की थी जो तीन माह के लिए मलकानों में जा कर मुफ़्त काम करने के लिए तैयार हों, जो अपना और अपने परिजनों का वहां के किराया वग़ैरा का कुल ख़र्चा बर्दाश्त कर सकें और इंतेज़ाम में जिस लीडर के मातहत जिस काम पर उन्हें लगाया जाए उसे वह ख़ुशी ख़ुशी करने के लिए तैयार हों। वर्णन किया जाता है कि इस अपील पर चंद हफ़्तों के अंदर चार-सौ से ज़्यादा दरख़ास्तें इन शरायत पर काम करने के लिए मौसूल हो चुकी हैं और तीन पार्टीयों में 90 अहमदी साहिबान आगरा के इलाक़ा में पहुंच चुके हैं और बहुत सरगर्मी से मलकानों में अपना परचार कर रहे हैं इस नए इलाक़ा के हालात मालूम करने के लिए उनमें से कुछ ने जिनमें ग्रैजूएट नौजवान भी शामिल थे अपने बिस्तर कंधों पर रखकर और तेज़-धूप में पैदल सफ़र कर के सारे इलाक़ा का दौरा किया है। अपने मत के परचार के लिए उनका जोश और ईसार का तारीफ़ के योग्य है।"

(अख़बार जीवन नित लाहौर 24 अप्रैल 1923 ई.)

आर्या पत्रीका बरेली ने यक्म अप्रैल 1923 ई. की इशाअत में लिखा :

"इस वक़्त मल्लकाने ने राजपूतों को अपनी पुरानी राजपूतों की बिरादरी में जाने से बाज़ रखने के लिए (यानी) मुर्तद होने से बचाने के लिए।) जितनी इस्लामी अंजुमनें और जमाअतें काम कर रही हैं उनमें अहमदिया जमाअत क़ादियान की सरगर्मी और कोशिश वास्तव मे क़ाबिल दाद है।"

हिंदू धर्म और इस्लाही तहरीकें के मुसन्निफ़ ने एतराफ़ किया :

"आर्या समाज ने शुद्धि अर्थात पाक करने का तरीक़ा जारी किया। ऐसा करने से आर्या समाज का मुस्लमानों के एक तब्लीग़ी गिरोह अर्थात कादियानी फ़िर्क़ा से तसादुम हो गया। आर्या समाज कहती थी कि वेद इल्हामी है और सबसे पहला आसमानी सहीफ़ा है और मुकम्मल ज्ञान है कादियानी कहते थे कि क़ुरआन शरीफ़ ख़ुदा का कलाम है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमन नबि-य्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं इस कद-ओ-काविश का नतीजा यह हुआ कि कोई ईसाई या मुस्लमान अब मज़हब की ख़ातिर आर्या समाज में दाख़िल नहीं होता।" (हिंदू धर्म और इस्लाही तहरीकें, पृष्ठ 23-24)

कार-ज़ार शुद्धि के असरात इतने गहरे और दूर रस थे कि मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद की अज़ीम क़ियादत का रोब आर्या समाज के राहनुमाओं के दिलों पर बैठ गया। शुद्धि की तहरीक चली और गुज़र गई लेकिन साल-हा-साल तक आर्या राह-नुमाओं के दिलों में इस तल्ख़ और होलनाक तजुर्बे की यादें बाक़ी रहीं जो कार ज़ार शुद्धि में जमाअत अहमदिया से टक्कर लेने के नतीजे में उन्हें हासिल हुआ था। इसलिए चार साल के बाद अख़बार तेज दिल्ली ने यह स्वीकार किया कि

शेष पृष्ठ 19 पर

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निमार्ण करवाने के लिए सम्पर्क करे, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करे
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad